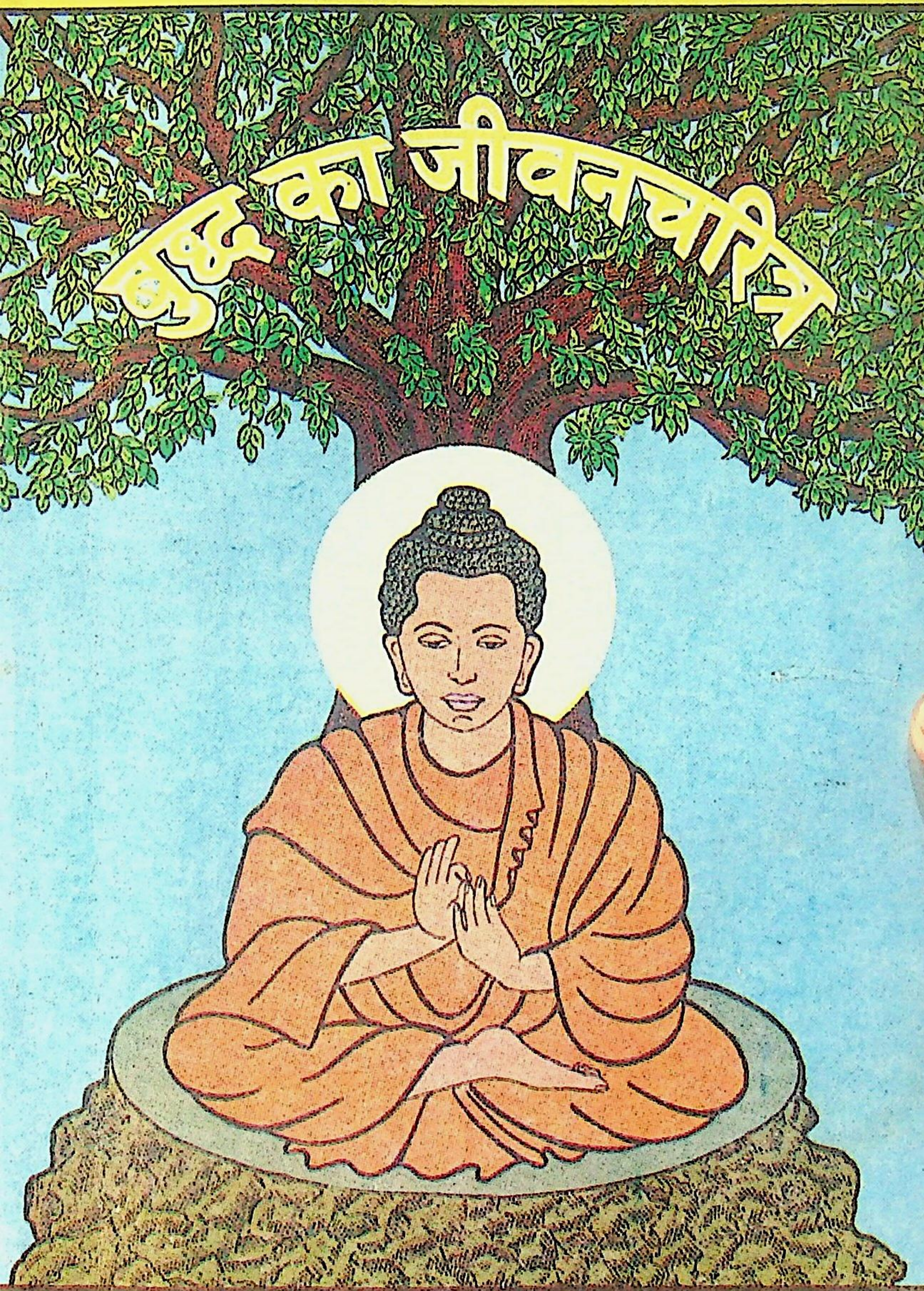


खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

॥ श्रीः ॥

बुद्धका जीवनचरित्र।

जिसको

काशीनिवासी स्वामी परमानन्दने बड़े परिश्रमसे लिखा है।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण- सन् १९९८ सम्वत् २०५५

मूल्य. १८ रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

॥ श्रीः ॥

बुद्धका जीवनचरित्र।

दोहा।

बन्दों परमानंदको, जो अनन्त निजरूप।
ध्यानधरत जिह तम मिटै, स्मृतहै ब्रह्मअरूप ॥ १ ॥
वर्णाश्रम जामें नहीं, नहीं जाति अरु रूप।
जो जानै निजरूपको, लै पद परम अनूप ॥ २ ॥
ऊँच नीच जामें नहीं, नाहीं जामैं भेद।
पूरण सबमें एक जो, रहित त्रिविधपरिछेद ॥ ३ ॥
हंसदास गुरुको प्रथम, प्रणवौं बारंबार।
नामलेत जेहि तम मिटै, अघ होवत सब छार ॥ ४ ॥

चौपाई।

परमानँद मम नाम पछानो। उदासीन मम पथको जानो ॥
रामदास मम गुरुको गुरुहैं। आत्मवित्त जो मुनिवर मुनिहैं ॥५॥

दोहा।

परशुराम मम नगर है, सिंधुनदी उसपार।
भारतमंडलके विषे, जानै सब संसार ॥ ६ ॥

बुद्धभगवान्के नामको संसारमें संपूर्ण मजहबों और मतोंवाले जानते हैं क्योंकि बुद्ध बहुतही महात्मा, तपस्वी और ज्ञानी हुये हैं, हिंदूलोग तो बुद्धको अवतारकरके मानते हैं परन्तु साथही यहभी कहदेते हैं कि बुद्ध नास्तिक था अब यह जो उनका कहना है सो युक्तिसे विरुद्ध है क्योंकि जो अवतार होगा वह नास्तिक कैसे होसक्ता है कदापि नहीं होसक्ता। गीतामें ही श्रीकृष्णजीने कहाहै, जब २ धर्मकी हानि और अधर्मकी अधिकता होती है तब २ ईश्वर महात्मोंकी

संस्करण- सन् १९९८ सम्वत् २०५५

मूल्य. १८ रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

॥ श्रीः ॥

बुद्धका जीवनचरित्र।

दोहा।

बन्दौं परमानंदको, जो अनन्त निजरूप।
ध्यानधरत जिह तम मिटै, स्मृतहै ब्रह्मअरूप ॥ १ ॥
वर्णाश्रम जामें नहीं, नहीं जाति अरु रूप।
जो जानै निजरूपको, लै पद परम अनूप ॥ २ ॥
ऊँच नीच जामें नहीं, नाहीं जामैं भेद।
पूरण सबमें एक जो, रहित त्रिविधपरिछेद ॥ ३ ॥
हंसदास गुरुको प्रथम, प्रणवौं बारंबार।
नामलेत जेहि तम मिटै, अघ होवत सब छार ॥ ४ ॥

चौपाई।

परमानँद मम नाम पछानो। उदासीन मम पथको जानो॥
रामदास मम गुरुको गुरुहैं। आत्मवित्त जो मुनिवर मुनिहैं५॥

दोहा।

परशुराम मम नगर है, सिंधुनदी उसपार।
भारतमंडलके विषे, जानै सब संसार ॥ ६ ॥

बुद्धभगवान्के नामको संसारमें संपूर्ण मजहबों और मतोंवाले जानते हैं क्योंकि बुद्ध बहुतही महात्मा, तपस्वी और ज्ञानी हुये हैं, हिंदूलोग तो बुद्धको अवतारकरके मानते हैं परन्तु साथही यहभी कहदेते हैं कि बुद्ध नास्तिक था अब यह जो उनका कहना है सो युक्तिसे विरुद्ध है क्योंकि जो अवतार होगा वह नास्तिक कैसे होसक्ता है कदापि नहीं होसक्ता। गीतामें ही श्रीकृष्णजीने कहाहै, जब २ धर्मकी हानि और अधर्मकी अधिकता होती है तब २ ईश्वर महात्मोंकी

रक्षाके वास्ते और दुष्टोंके नाशके वास्ते अवतारको धारण करता है इस वाक्यसे यह साबित होताहै कि अवतार होता है सो आस्तिकपनेके चलनेके वास्ते और नास्तिकपनेको दूर करनेके वास्ते होता है । जब कि हिंदू ? लोग बुद्धको अवतार मानते हैं तब फिर उनको नास्तिक कह देना यह इनकी सर्वथा भूल है किंतु बुद्ध बडेभारी आस्तिक थे और वेदांतीभी थे अर्थात् जीव ब्रह्मका वह भेद नहीं मानतेथे हां इतनी बात जरूर है जैसे आजकलके पक्षपाती समाजों-वाले अपने मतलबको सिद्ध करनेके वास्ते श्रीस्वामी शंकराचार्य्यजी वेदांतके आचार्य्यको और वेदांतियोंको विनाही विचारके नास्तिक कहदेते हैं इसीतरहसे विद्याहीन, बुद्धिहीन, विचारहीन पुरुष बुद्धको भी नास्तिक कह देतेहैं सो यह उनकी सर्वथा भूलहै बुद्धके उपदेशोंमेंही बुद्धका आस्तिकपना टपकता है ॥

"सर्वं क्षणिकं क्षणिकं स्वलक्षणं स्वलक्षणं तुच्छं तुच्छम्"

शिष्योंके प्रति ऐसा बुद्धने उपदेश किया है सर्वं संपूर्ण जगत् क्षणिक २ क्षणविनाशी है—अर्थात् क्षण २में बदलता रहताहै । स्वलक्षण । अपनी उपमा वाला आपही है दूसरा कोई जगत् होवै तबतो तिसकी उपमा दीजावै ऐसातो नहीं है क्योंकि दोही पदार्थ अनादि हैं एकतो व्यापक चेतन है दुसरा जड जगत् है, सो जड जगत् भी प्रवाहरूप करके अनादि है प्रकृति इसका कारण है यह जगत् क्षण २ में उत्पन्न होता है और नष्ट भी होता रहता है इसी वास्ते यह क्षणिक है और बंध्यापुत्रकी तरह तुच्छभी है क्योंकि वास्तवमें व्यापक चेतनमें जगत् तीनों कालमें नहीं है यह बुद्धका उपदेश था इसीसे सिद्ध होता है बुद्ध वेदांती था नास्तिक नहीं था, जिस वास्ते लोग बुद्धसे द्वेष करतेथे वह बात यह है कि बुद्ध हिंसामात्रको अधर्म समझता था और जीवमात्रपर उसकी अत्यन्त दया थी बस सबसे भारी गुण बुद्धमें अतिदया थी, दयाकी अवधि बुद्धमें हीं थी । एकदिन बुद्ध रास्तेमें चले जातेथे ज्येष्ठका महीना था दुपहरका समय था धूप बडे जोरसे पड रही थी, एक आदमी बकरीके दो बच्चोंको लिये जाता था बुद्धने उससे पूछा इनको तुम कहां लेजावोगे ? उसने कहा यहांसे थोडीदूरपर एक नगर है उस नगरके राजाने यज्ञका प्रारंभ किया है उस यज्ञमें बलिदान कर-नेके वास्ते राजाने इनको मंगाया है मैं उसी राजाके यज्ञके वास्ते इनको लेजाताहूं इस वार्ताको सुनकरके बुद्धने उन दोनों बच्चोंको गोदमें उठाकर कहा हमभी

आपके साथ उस राजाके यज्ञमें चलेंगे, अब बुद्ध उसके साथ चलपडे और एक या दो घंटेमें राजाके यज्ञमें पहुंच गये, आगे वहांपर हवनको पंडितलोग राजासे करा रहेथे और बकरोंके आनेका रास्ता देख रहेथे, इतनेमें बच्चोंको उठायेहुये बुद्ध भगवान्को आते देखकर राजाके सहित सब पंडित खडे होगये और बुद्धको बडे सत्कारके साथ उन्होंने बिठलाया, बुद्धने उनसे कहा इन बकरीके बच्चोंको तुमने किस वास्ते मंगाया है ? पंडितोंने कहा अपने देवताको बलीदेनेके वास्ते, क्योंकि बलीको लेकर देवता प्रसन्न होकर हमको वर देवैं। अब इसी बातपर पंडितोंके साथ बुद्धका शास्त्रार्थ होने लगा और बहुत देरतक होता रहा, बुद्ध हिंसानिषेध करते थे और पंडित लोग यज्ञमें हिंसाका विधान करतेथे, युक्तियोंसे पंडित लोग हारभी गये तब भी हठसे बुद्धके कहनेको नहीं मानतेथे, तब बुद्धने कहा "यथा यक्षस्तथा बलिः" यह लौकिक न्याय है जैसा यक्ष वैसीही बलिभी होनी चाहिये, जब कि तुम्हारा मिट्टीका या पाषाणका देवताहै तब तिसके वास्ते बलिभी मिट्टी या पाषाणके बकरेकी होनी चाहिये, अर्थात् जड देवताके वास्ते बलिभी जडही होनी चाहिये। तुम चेतन जीवोंकी बलिको क्यों देकर पापके भागी बनतेहो ? इस तरहका बहुतसा बुद्धने उपदेश भी किया मगर पत्थरको जोक कब लगतीहै जब कि बुद्धने देखा जोकि यह किसी तरहसे भी नहीं मानते हैं तब राजासे कहा कि तुमको तो एक जीवको मारकरके हत्याही लेनी है सो हमारा शिर काटकर यज्ञमें होम कर देवो और इन बकरोंको छोड देवो, ऐसी दयाको देखकरके राजा जान गया कि यह भारी महात्मा और दयाकी मूर्ति हैं, जो दूसरेके प्राणोंको बचानेके वास्ते अपने प्राण देनेकोभी तैयार हैं, तब तुरंतही राजा बुद्धके चरणोंपर गिर पडा और बुद्धभगवान्का चेला बनगया और बकरीके बच्चोंको तिसने छोड दिया अब विचार करनेकी बातहै जो कि एक पशुके प्राणोंके बचानेके वास्ते अपने प्राणोंको देता है वह कभी नास्तिक होसक्ता है हरगिज नहीं। फिर जो बुद्धको नास्तिक कहते हैं वह नास्तिक शब्दके अर्थको ही नहीं जानते हैं, नास्तिक शब्दके अर्थको दिखातेहैं जाकि पूर्वोत्तर जन्मको नहीं मानता है और देहसे भिन्न जीवात्माको नहीं मानता है किंतु देहकोही आत्मा मानता है चारों भूतोंसेही जगत्की उत्पत्ति स्वाभाविक मानता है, जगत्का कर्ता ईश्वरको नहीं मानताहै वही नास्तिक कहा जाता है, बुद्ध तो ऐसा नहीं

मानते थे किंतु देहसे भिन्न जीवात्माको मानते थे और सच्चे धर्मोंसे और योगसे-ही मुक्तिभी मानते थे और ब्रह्मचर्य्यको प्रधान मानतेथे, ब्रह्मचर्य्य पर यह बुद्धका सूत्र हैः-

आदौ कल्याणं मध्ये कल्याणं
अवसाने कल्याणम् ॥ १ ॥

ब्रह्मचर्य्यको रखनेवालेकी आदिमें अर्थात् कुमार अवस्थामें और मध्यमें अर्थात् युवा अवस्थामें और अवसाने अर्थात् वृद्धा अवस्थामें भी कल्याण होतीहै ब्रह्मचर्य्यसे सब कार्य्योंकी सिद्धि होती है ॥

और सच्चे धर्मोंके ऊपर लोगोंको चलाने परही बुद्ध जोर देतेथे और झूठे धर्मोंसे और पाखंडोंसे हटाते थे ॥

प्रपूरय धर्म्मशंखं प्रताडय धर्मदुन्दुभिम् ॥
प्रसारय धर्मध्वजां धर्म कुरु धर्म कुरु धर्म कुरु ॥

धर्मका शंख बजावो, धर्मकी ही दुन्दुभी बजावो और धर्मकी ध्वजाकोही फहरावो धर्मकोही करो धर्मकोही करो धर्मकोही करो ॥

जिनके ऐसे उत्तम उपदेश थे उनको नास्तिक कहनेवाले युक्ति प्रमाणोंसे आपही नास्तिक साबित होतेहैं, जैसे पिता धर्मात्मा होता है और पुत्र अधर्मी बन जाता है या पिता नास्तिक होताहै और पुत्र आस्तिक बन जाता है इसी प्रकार बुद्ध तो आस्तिक थे परंतु उनके जो कि आठ शिष्य हुयेहैं वह नास्तिक हुयेहैं, उन आठोंके अपने २ जुदा २ मत थे। उनमेंसे सौत्रांतिक, वैभवतिक, योगाचार और माध्य-मिक इन चारोंके मतोंको स्वामी शंकराचार्यजीने भी शारीरक भाष्यमें खंडन किया है क्योंकि उनको चारोंकेही मतोंके हाल मिलेथे बाकी बुद्धके शिष्योंके नहीं मिलेथे, इसीवास्ते पृथक् करके खास बुद्धके मतका खण्डन उन्होंने भी नहीं किया है फिर जैसे कि शंकराचार्य्यजीने बुद्धके शिष्योंका जुदे २ मत दिखाये हैं तैसे बुद्धका मत उन्होंनेभी कोई नहीं दिखाया है इसी वास्ते बुद्धको उन्होंने नास्तिक करके नहीं लिखा है किन्तु उनके चेलोंकोही नास्तिक लिखा है, इससे भी साबित होता है कि बुद्ध परम आस्तिक था ॥ बुद्धसे किसी आदमीने प्रश्न किया कि आप ईश्वरकी भक्तिके उपदेशको छोडकर सत्य भाषणादि सच्चे धर्मोंके करनेका उपदेश

क्यों करते हैं, बुद्धने उससे कहा तुम्हारेसे भिन्न दूसरा ईश्वर कोई भी नहीं है तुम ही ईश्वर हो, फिर यदि तुम अपनेसे भिन्न दूसरे ईश्वरको मानोगे तोभी सच्चे धर्मोंके धारण करनेसे वह तुमको किसी तरहकाभी दण्ड नहीं देसकैगा क्योंकि उसको तुम न्यायकारी मानोगे यदि तुम सच्चे धर्मोंको नहीं धारण करोगे तो वह ईश्वर तुमको दण्ड जरूर देवैगा, इसवास्ते सच्चे धर्मोंका धारण करनाही मनुष्यके वास्ते मोक्षका साधन है और यदि तुम अपनेसे भिन्न ईश्वरको न मानकर केवल सच्चे धर्मोंकोही धारण करोगे तब तुम्हारे अन्तःकरणकी शुद्धि होवैगी, अन्तःकरणके शुद्ध होजानेसे फिर तुम्हारी मुक्ति होजावैगी केवल सत्यधर्मही कल्याणका कारक है. फिर यदि सचे धर्मोंक: तुम धारण नहीं करोगे किन्तु हिंसायुक्त कर्मोंको करोगे और मिथ्या भाषणादिक कर्मोंको करोगे तब तुम कितनाही ईश्वर २ पडे पुकारो कभीभी ईश्वर तुमको स्वर्गमें नहीं भेजैगा किन्तु नरकमेंही भेजैगा, क्योंकि वह न्यायकारी है. इस वास्ते सच्चे धर्मोंकाही धारण करना मनुष्यके लिये मुख्य कर्तव्य है॥ बुद्ध भगवान खान पानके झगडोंको और देवतोंके आगे बकरोंके मारने वगैरह पाखण्डोंको नहीं मानते थे किन्तु इन पाखण्डोंका वह खण्डन करतेथे सो ऐसा करना उनका ठीक था क्योंकि पाखण्डका नामही अधर्म है अधर्मका खण्डन करना जरूरी है. अधर्मके बढजानेसेही यह देश दूसरोंका गुलाम बन गया है और जबतक अधर्मका त्याग पुरुष नहीं करता है, तबतक पुरुषक. . खभी किसी प्रकारसे नहीं मिलता है और अधर्मका त्याग सच्चेधर्मोंके धारण करनसेही होता है. फिर बुद्धने बडा भारी तप भी किया था। कहीं नास्तिक भी तपको करते हैं? कदापि नहीं करते क्योंकि नास्तिक तो आगे जन्मांतरको मानतेही नहीं हैं और न बंध मोक्षकोही मानते हैं जो कि जन्मांतरको और बन्ध मोक्षको मानता है वह कठिन तपको करता है इस युक्तिसेभी बुद्ध आस्तिकही साबित होता हैं॥ फिर जब कि इस देशमें अधर्म बहुतसा बढगया था अर्थात् वाममार्ग इतना बढगया था कि वाममार्गी लोग रास्तोंसे भूले भटके मुसाफरोंको धोखेसे पकड करके जीते मनुष्योंको अपने देवतोंके सामने लेजा करके बलिदान करादेते थे इस तरहके औरभी अनेक प्रकारके पाखण्ड बहुतही बढगये थे तब भगवानने उन अधर्मोंके हटानेके वास्ते बुद्ध अवतारको लिया था और लोगोंको हिंसारूपी कर्मसे हटाकर सच्चे धर्मोंपर लगायाथा और वैराग्यके स्वरूप-

कोभी कलियुगमें बुद्धभगवानने पूर्णरूपसे दिखलायाथा क्यों कि इस कलि-युगमें बुद्धके बराबर कोई वैराग्यवान महात्मा नहीं हुआहै क्योंकि बुद्धके वैराग्यके सामने भरथरीका वैराग्य मंद था भरथरीको स्त्रीके व्यभिचारसे वैराग्य हुवाथा स्वतः नहीं हुवा क्योंकि भरथरी पहले भारी विषयी था इसीवास्ते इसकी तीनसौ रानियें थीं। जब कि पिंगला नामवाली रानीका व्यभिचार प्रगट होगया था तब भरथरीको भोगोंसे वैराग्य हुवाथा सो यह सब बातें बुद्धके साथ नहीं हुईथी क्योंकि एकतो बुद्धको जन्मसेही उपराम था दूसरे राजभोग सबतरहका विद्यमान था तीसरे अति सुंदरी और पतिव्रता आज्ञाकारिणी बडी सेवा करनेवाली स्त्रीभी विद्यमानथी पुत्रभी उत्पन्न होगयाथा और माता पिता भी जीतेथे और अति प्यारभी करतेथे अर्थात् सब तरह के राजभोगोंके विद्यमान होतेभी जो संसारसे उपरामका होनाहै उसीका नाम उत्तम वैराग्य है सोई उत्तम वैराग्य बुद्धका था।

फिर बुद्धभगवान् जन्मसेही वैष्णव थे कभीभी उन्होंने मांस और मद्यका सेवन नहीं कियाथा, क्योंकि उनको जन्मसेही इससे घृणा थी इसीवास्ते इनके प्रचारको उन्होंने उठादियाथा, यदि कोई ऐसा कहे कि, चीन वगैरह देशोंमें जो बौद्ध कहलाते हैं वह क्यों मांस मद्यका सेवन करतेहैं ? इस प्रश्नका उत्तर यह है कि हमारे धर्मशास्त्रोंमें और वेदोंमें कहींभी द्विजातीको मदिराका पीना नहीं लिखा है औरभी बहुतसी बातोंका निषेध लिखाहै फिर जैसे हमारे द्विजाती भाई कोई वाममार्गी बनकरके अपने मजेके वास्ते मदिराआदिकोंका सेवन करते हैं और कोई इसीतरहसे करता है और कोई होटलोंमें जाकरके मजेके वास्ते म्लेच्छोंका जूठा भोजन पडा खाताहै। इसीतरह चीन वगैरह देशोंमें जोकि बौद्ध हैं वह सबभी मांस मदिराको खाते है परंतु बुद्धके असूलोंमें मांसादिकोंके खानेका निषेधही है और वह लोकभी इसबातको स्वीकार करते हैं क्योंकि जीवमात्रपर दया करनी यही बुद्धका भारी असूल था।

दूसरा बुद्धका यह असूलथा जो प्रथम लडकेको ब्रह्मचर्य्य कराकर विद्या पढाकर तिसकी शादी करना सो यह असूल बुद्धका ब्रह्माके देशमें अबतक जारी है ब्रह्मामें ग्रामोंके बाहर उनके गुरू पूंजी लोक मकानोंको बनवाकरके रहते हैं, उनके मकानोंके आगे पानीके ताल बने हैं उन तालोंमेंसे वह मछली किसीकोभी

मारने नहीं देते हैं ब्रह्मावाले बौद्धोंका जब कि लडका सात बरसका होताहै तभी उसको पूंजी गुरुके पास छोड आतेहैं वहांपर उसको अपने धर्मकी पढाई होती है जब कि वह लिखपढकर तैयार होजाताहै तब तिसको फिर घरमें लाकर उसका विवाह करतेहैं इस तरहके गुरु कुलका प्रचार ब्रह्मादेशमें अबतक जारी है और जिस भारतदेशका यह मुख्य असूल है उस देशमें अब नदारद है, ब्रह्मामें बुद्धका एक और असूलभी अबतक जारी है सो यह है, कदापि झूठ नहीं बोलना सो ब्रह्माके लोग अबतक तो इस असूल पर कायम हैं मगर अब वहां-पर कदमें शरीर यहांके आदमी बहुतसे पहुंच गये हैं अब इस असूलका रहना कठिन मालूम होताहै यदि कोई ऐसा सवाल करै कि बुद्धका मत जब कि अच्छा था तब फिर बौद्धोंको इस देशसे शंकराचार्य्यने क्यों निकाल दियाथा इसका उत्तर यह है जो कि बुद्धके जमानेमें तो किसी भी पंडितने बुद्धका सामना नहीं कियाथा बल्कि जो तिसके पास द्वेष बुद्धि करके भी गया वह भी बुद्धका चेलाही बन गयाथा क्योंकि एक तो बुद्धकी बाणीमें बडी आकर्षण करनेकी शक्ति थी दूसरे बुद्धका उपदेश सचा था वेद विरुद्ध नहीं था तीसरे बुद्धकी धारणा अपने भी वेदसे विरुद्ध नहीं थी इसी वास्ते बुद्धके स्वर्गवास होनेके पीछे बुद्धका मत बढताही गया किसीने भी उससे द्वेष नहीं कियाथा फिर जब कि बुद्धके शिष्योंने अपने २ नास्तिक पनेके मतोंको फैलादिया तब लोक उनसे घृणा करने लगे और वद विरुद्ध उनके मतोंको जानकरके शंकराचार्य्यजीने और भट्टपादने उनके मतोंका ध्वंस करके फिर वैदिक मतका प्रचार किया दूसरे अध्यायमें बुद्धकी उत्पत्तिका हाल दिखलाया जावैगा ।

इति श्रीमदुदासीनवर्य स्वामिहंसदास शिष्यपरमानंदाख्य विरचित
बुद्धजीवनचरित्रनामकग्रन्थे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

बुद्ध भगवान्‌का चरित्र ।

नैपालकी तराईमें जिला बस्ती अंगरेजी राज्यसे उत्तरकी तरफ कपिल वस्तु नामक एक नगर था. उस नगरके समीप पहाडसे बरफके पानीकी एक बाणगंगा नाम करके नदी बहती थी और वह कपिल वस्तु नगर उस समयमें

उस देशकी राजाधानी थी, इस राज्यमें मनगोलिया कौमके हिंदू लोक रहतेथे और उस नगरके पूर्वकी तरफ प्राचीन ऋषि लोगोंके स्थान बने थे जोकि पूर्व कालमें आर्य्य कहलाते थे और इस नगरके समीप और राजा लोगोंके राज्य थे इस देशके शाकिया लोग खेतीसे तथा पशुपालनसे अपना निर्वाह करतेथे और लडाई करनेमें भी यह कौम बडी बहादुर थी ईसाके पैदा होनेसे छसौ बरस पहले शाकिया कुलमें एक शुद्धों नामक धर्मात्मा राजा यहांका राज्य करता था यह शाकिया कुल इक्ष्वाकू राजाके वंशसे शुद्धोंके समयमें थी, यह कुल बडे जोर परथा और संसारिक विषय भोगभी इन लोगोंके पास सब तरहके मौजूद थे और राजाभी ऐसा धर्मात्माथा कि रात्रिदिन प्रजापालनमें और प्रजाकी आराम-दारीमें तत्पर रहथा, गरीबोंके ऊपर सदैव तिसकी दया बनी रहतीथी और तिसके राज्यमें धनी, गरीब, मूर्ख, पंडित सब कोई बडे आरामसे रहतेथे शुद्धोंके राजसे कुछ दूरपर राजा अंजनका राज्यथा उसकी दो कन्या थीं एकका नाम महामाया और दूसरीका नाम प्रजावतीथा, प्रजावतीका दूसरा नाम गोमतीथा दोनोंमें महामाया बडी रूपवती और बुद्धिमान थी इन दोनोंके साथ शुद्धों राजाकी एकही लग्नमें शादी हुईथी महामाया पतिको बहुतही प्यारीथी और पतिकी आज्ञा और सेवामेंही अपने जीवनको व्यतीत करतीथी, उस समयमें महामायाके तुल्य दूसरी स्त्री संसारमें नहींथी, मानो एक दूसरी लक्ष्मीथी, उसके दिलमें कभी भी किसी के साथ बखीली और बुराईकरनी पैदा नहीं होतीथी सदैव वह प्रसन्न मन रहती और हँसती रहतीथी किसी कालमेंभी उसके दिलमें रंज पैदा नहीं होता था गरीबों दुखियोंको दान बहुत देतीथी, अनाथोंकी पालना करनेमें उसका मन बहुतही लगता था निराश्रयोंका आश्रय थी. यदि राजा शुद्धोंके गृहमें सर्व वस्तु आरामकी विद्यमान थीं और शरीरभी राजाका निरोग था किसी शत्रुका भयभी राजाको नहींथा, संसारमें जितने उत्तम हाथी, घोडे हीरे, जवाहिरात हैं वह सब राजाके पास विद्यमान थे, तथापि एक संतानके न होनेसे राजा रात्रि-दिन बडी चिन्तामें रहताथा राजाको इस बातकी बडी चिंता रहतीथी कि यदि संतान नहीं होगी तो हमारे पूर्वजोंका नाम निशान भी संसारमें नहीं रहेगा इसी चिंतासे राजा प्रतिदिन दुर्बल होते जाते थे, राजाके नगरमें सालमें आठ दिन

एक देवमन्दिरमें उत्साह होताथा जब कि उत्साहका दिन आया तब तमाम नगर निवासियोंने अपने मकानोंकी सफाई की और फलोंसे उनको आरास्ता किया और सब बाजारोंमें झाड फानुस और पताका आदिक लग गये, राज-भवनमें भी बडा उत्साह हुवा उत्साहके आठवें दिन रानीने अपने शयन गृहको फूलोंसे और सुगंधियोंसे सुशोभित किया और अपनेकोभी सुंदर वस्त्रों करके और सुगंधियों करके विभूषित किया रात्रिके समयमें राजा रानीका समागम हुवा समागम होतेही रानीको उस शुभ मुहूर्तमें गर्भ रह गया, उस कालमें महामाया की आयु ४० वर्षकी थी, और राजाकी आयु चालीस बरससे अधिक थी, जब राजा रानी सोगये तब रानीको एक विचित्र स्वप्न आया स्वप्नमें रानी क्या देखती हैं कि एक श्वेत हस्ती सूंडमें श्वेत कमलके फूलको लिये हुये हमारी दाक्षिण कुक्षीको विदीर्ण करके उदरमें प्रवेश कर गया है इतनेमें रानीकी नींद खुलगई रानीने राजासे अपने स्वप्नके वृत्तान्तको सुनाया राजाने सुविज्ञ ज्योतिषि-योंको बुलाकर स्वप्नको सुनाकर तिसके फलको पूछा ज्योतिषियोंने राजासे कहा महाराज आप अब अपनी चिंताको दूर कीजिये आपकी रानीको गर्भ रहगया है, आपके घरमें लडका पैदा होगा और चिरजीवी होगा, यदि वह राज करैगा तव प्रजाका पालन धर्म पूर्वक करैगा और चक्रवर्ती राजा होगा यदि संन्यासको धारण करलेगा तब सच्चे धर्मोंका पृथिवीपर पर्यटन करके उपदेश करैगा और सब पृथिवीका नाम और यश होगा ॥ राजा ज्योतिषियोंकी वार्ताको सुनकर मनमें बडा प्रसन्न हुवा और नगरके लोगभी महामायाके गर्भाधानको सुनकर बडे आनंदको प्राप्त हुवे, राज भवनमें और नगरमें अनेक प्रकारके बाजे बजने लगे और राजाने ब्राह्मणोंको और गरीबोंको बहुतसा दानदिया, महामायाका शरीर दिन दिन बडी शोभाको प्राप्त होने लगा और मुखकी कान्ति तिसकी बढने लगी और महामाया रात्रिदिन ईश्वरसे प्रार्थना करने लगी कि मेरी कुक्षीसे जो लडका उत्पन्न हो वह धर्मात्मा और दयालु हो लोगोंको सच्चे धर्मोंमें प्रवृत्त करनेवाला हो नित्यही महामाया ईश्वरसे ऐसी प्रार्थना करती रहती और हरवक्त ईश्वरके ध्यानमेंही मग्न रहती तिसके मनमें कोईभी बुरा ख्याल न फुरता अपने पवित्र मनसे सदैव शुभ चिंतनही करती रहती इसीतरह शुभ चिंतन करते हुवे तिसने नौ महीने गुजारे जब कि दशवां महीना समीप आया तव महामायाने राजासे

कहा राजन्! इस समयमें मेरेको अपने पिताके घरमें जाना मंगलकारक है आप आज्ञा दीजिये, तो मैं अपने पिताके घरमें जाऊं! राजानेभी सोच विचार करके पिताके घरको जानेकी आज्ञा दी और पालकीमें सवार करके दास दासियोंके सहित और कुछ रक्षक सिपाहियोंके साथ रानीको पिताके घरकी तरफ भेज दिया रास्तामें एक अतिसुंदर आराम बाग था, रानी पालकीसे उतरकर बागकी सैर करने लगी, बागमें सब बसन्ती फूल खिलेथे और बागकी शोभा ऐसी बनीथी मानो इन्द्रका नंदन बन था, बागकी शोभाको देखकर रानीका मन अति प्रसन्न हुवा बागमें महामाया इधर उधर टहलने लगी टहलती हुई जब कि शालके वृक्षके नीचे गई तब तिसके पेटमें कुछ हलचल मची उसी जगहपर रानी बैठगई और बांदियोंने कोमल बिछोना बिछा दिया उस बिछोनेपर बैठतेही रानीको लडका पैदा होगया ईसासे ९९८ बरस पहले पूर्णमासीके दिन लडकेका जन्महुवा उसी समय दूतने आकर राजाको खुशखबरी दी उस खबरके सुनतेही राजा आनंदमें मग्न होगये और तुरंत जाकर महामायाको और लडकेको सुवर्णकी पालकी में सवार करके अपने भवनमें ले आये नगरमें घर २ मंगलाचार होने लगे और राजाने ब्राह्मणों और गरीबोंको तथा अपने भाइयोंको इतना द्रव्य दिया कि, सब मालामाल होगये इसतरह खुशीके होते जबकि सातदिन व्यतीत होगये तब अचानकही बडा भारी एक रंज होगया वह रंज यह है कि महामायाका शरीर पात होगया महामायाके स्वर्गवास होनेसे राजा शुद्धोंको बडा भारी रंज हुवा परंतु पुत्रके उत्पन्न होनेकी खुशीसे उस रंजको भी राजाने कुछ न बूझा और जो कि राजाकी दूसरी रानी गोमतीथी उसने बच्चेके पालनके बोझको अपने ऊपर लेलिया और बालकको अपने प्राणोंसेभी अधिक रखने लगी, बालक अपनी सौतेली माताकी गोदमें दिन दिन वृद्धिको प्राप्त होने लगा और चन्द्रमाके तुल्य बालकका मुख चमकने लगा गोमती बालकके मुखको देखकर आनंदमें न समाती राजा चकोरकी तरह पुत्रके मुखको देखकर अपने आपेमें न समाता जब कि बालकके नामकरनका दिन समीप आगया तब राजा शुद्धोंने मनमें विचारा कि जिस पुत्रके उत्पन्न होनेसे मेरे दिलकी सब मुराद सिद्ध होगई हैं इससे इसका नाम सिद्धार्थ रखना चाहिये, ऐसा सोचकर राजाने नाम करणके दिन बडी धूम-

धामसे बालकका नाम सिद्धार्थ रक्खा क्योंकि ऐसा लिखाहै--एकादशेऽह्नि पिता नाम कुर्यात् ॥ एकादशवें दिन पिताही अपने पुत्रका नाम करण करै इसी लिये राजा शुद्धोंने अपने पुत्रका आपही नामकरण किया और ब्राह्मणोंको तथा गरीबोंको कुछ दानभी दिया॥ फिर धीरे २ बालकका शरीर पुष्ट होनेलगा जब कि बालक सात बरसका हुवा तब राजाने विधिपूर्वक वेदके मंत्रोंसे तिसको संस्कार कराये यज्ञोपवीत विधीके अनंतर राजाने एक विचारवान् पंडितके पास सिद्धार्थ को पढनेके लिये बैठाया विद्या अध्ययन करनेके लिये थोडेही कालमें सिद्धार्थने बहुतसी विद्याको पढलिया और लडकोंकी तरह सिद्धार्थका मन खेल कूदमें नहीं लगताथा किंतु विचारमेंहीं तिसका मन लगताथा सिद्धार्थका दूसरा नाम बुद्ध गौतम था ज्यों २ बुद्धकी आयु बडी होतीथी त्यों २ तिसकी बुद्धिमें गंभीरता और विचारशीलता बढती जातीथी ॥ और एकांतमें रहनेमें तिसका मन लगता था इसी वास्ते वस्तीके सुंदर २ महलोंको छोडकर वन वृक्षोंके नीचे रहनेकी तिसकी बडी रुचि होतीथी इसी वास्ते कभी २ बुद्ध नगरसे दूर किसानोंके गांवमें भी चला जाताथा और जहांपर बैठताथा बडी चिंतामें डूब जाताथा विषयभोगोंकी तरफ तिसका मन नहीं लगताथा वहांपर हल चलानेकी एक रसम थी अर्थात् सालमें एक बार वह दिन आताथा वह दिन जब आया तब कई हजार हल राजाकी तरफसे खेतोंमें चलानेके लिये गया और उसी दिन और और किसानभी सब अपने २ हलोंको लेकर खेतोंमें निकले और राजाभी अपने कुमारको साथ लेकर बाहर नगरके खेतोंमें गये जब कि हलचलानेका समय आया तब राजा राजकुमारको एक वृक्षके नीचे बिछौने पर बिठालकर खेतमें मुहूर्त करनेके लिये गये इधर कुमार अपने ध्यानमें स्थित होगये राजाने आकर जब कि बुलाया तब समाधीसे उतरे अपने पितासे कहने लगे हे पिता! इस हलके काममें जीव हिंसा बहुतसी होतीहै इस लिये इसकामका त्याग करदेना चाहिये छोटीसी उमरमेंही जीवोंपर कुमारकी याने बुद्धकी अत्यंत दयाथी ॥ इस संसारमें जो लोग अति गरीब और खाने पीनेके सामानके बिना दुःखी हैं फिर जिन गरीबोंको रहनेके लिये एक टूटा फूटा मकानभी नहीं है वह लोग कहतेहैं कि, राजा होनेमें बडा सुख है क्योंकि राजोंको खाने पीने और रहनेकाभी आराम मिलताहै कभीभी उनको दुःख नहीं होताहै परंतु राजोंको जितने दुःख होते हैं उतने दुःख गरीबोंको नहीं होतेहैं एक तो राजोंको

सदैव शत्रुवोंसे भय बना रहता है, दूसरे जातीके लोगोंसे भी भय बना रहता है फिर खान पानादिकोंमें भय बनारहता है कि, कोई भोजनमें विष न मिला दे इस तरहके अनेक भय राजाको वनेही रहते हैं और कोई लोग धनसेही सुखको मानते हैं विचार करनेसे धनमें भी सुख नहीं है क्योंकि धनके उपार्जन और रक्षणमें भी बहुतसे क्लेश होते हैं, और कोई लोग स्त्री पुत्रादिकोंमेंही सुख मानतेहैं परंतु इनमेंभी सुख नहीं है । क्योंकि स्त्रीपुत्रोंके योग क्षेमके लिये अनेक प्रकारके अनर्थोंको लोगकरते हैं. संसारका कोई भी पदार्थ सुखजनक नहीं है इसी पर कहा है "सर्व दुःखं विवेकिनः" विवेकी पुरुषोंके लिये संपूर्ण विषयभोग दुःखकेही जनक हैं । फिर जितना कि, विषयजन्य सुख है वह सब दुःखसे मिला हुवा है इसीवास्ते वैराग्यवान् पुरुष नित्य सुखकी प्राप्तिके लिये अनित्य सुखका त्याग करदेते हैं और अपने हाथोंकोही भिक्षापात्र बनाकर संसारमें भ्रमण करते हैं और चित्तसे उदासीन होकर विचरते हैं उन्हीं वैराग्यवानोंके चिह्न बुद्ध गौतममें छोटीसी उमरमेंही पाये जाते थे । जब कि, बुद्धगौतम युवा अवस्थाको प्राप्त हुवे तबभी संसारके भोगोंकी तरफ उनका मन नहीं जाताथा सब सामान आरामके राजभोगोंके विद्यमान होने परभी उनका मन उदासीनकी तरहही बना रहताथा, राजकुमारके हालको देखकर राजा बडे फिकरमंद हुये एक दिन राजा अपने मनमें पुत्रकी तरफसे विचार कर रहेथे कि, इतनेमें राजकुलके संबंधवाले चार पांच आदमी राजाके पास आकर कहने लगे महाराज राजकुमार राजभोगोंकी तरफसे उदासीनही सदैव दिखाते हैं, यदि इस अवस्थामें उनका विवाह न किया जायगा तो कुछ दिनके पीछे फिर वह संसारमें न फसेंगे क्योंकि प्रतिदिन उनके चित्तमें उदासीनता बढतीही जातीहै इसलिये उनका विवाह जल्दी करके उनको बंधनमें डाल देनाही उचित है इसके सिवाय और कोई उपायभी उनको बंधनमें डालनेका नहीं है स्त्री जो है सो पुरुषके लिये लोहेके जंजीरोंसेभी अधिक बंधन है । राजाने उनकी सलाहको पसंद किया और कुमारके लिये रूपवती गुणवती कन्याकी तलाश करनेके लिये राजाने अपने पुरोहितको देशांतरमें नगरांतरमें भेजा पुरोहितके मुखसे हालको सुनकर बहुतसे लोगोंने अपनी २ कन्याके देनेको कहा तब राजा शुद्धोंने अपने लडकेके पास शादी करनेके बारेमें उसके चित्तका हाल मालूम करनेके लिये वजीरको भेजा जब उसने कुमारसे विवाह करनेके बमोर्र

पूछा तब कुमारने कहा इसका उत्तर हम आठ दिनके पीछे देंगे. अब कुमार अपने मनमें चिंता करने लगे, कभी तो उनके मनमें ऐसा तरंग उठताथा कि, संसारमें हमारे लिये सुख कहीं भी नही है और कभी ऐसा चिंतन करते थे कि, जिसकी मेरेको इच्छा है उसका मिलना कठिन है, कभी ऐसी चिंता करते थे कि विवाहभी एक बंधनका कारण है, कभी कहते कि, भोगोंमें फँसकर फिर निकलना कठिन है और भोगोंमें अपनी आयुको व्यर्थखोना है और थोडेसे आरामके लिये बहुतसा दुःख उठाना है और जो हरतरहके बंधनसे छूटनेकी इच्छा करता है वह शादी कैसे करसक्ता है यदि वह शादी करैगा बंधनसे कैसे छूटैगा और कभी उनके दिलमें ऐसा ख्याल होता था जबतक मैं तन मन धनको कुर्बान् न करूंगा तबतक संसारकी भलाई कदापि नहीं होगी ऐसी चिंतामें नित्यही फँसा रहता था एक दिन बुद्धने अपने मनमें ऐसा फैसला करलिया कि, संसारसे बाहर तो कोई भी नहीं जासक्ता है क्योंकि संसारसे बाहर कोई भी जगह नहीं है इस लिये मैं भी संसारमेंही रहूंगा परन्तु संसारमें आसक्त होकर मैं नहीं रहूँगा किन्तु अनासक्त होकर रहूंगा। और शादी करकेभी मैं धर्मका उपदेश लोकोंको करूंगा इस तरहका बुद्ध गौतमने अपने मनमें विचार करके आठवें दिन कहा जिसका मन दयालु हो और मस्तक खुलाहो, अपने धर्मपर दृढहो सात्विकी स्वभाववाली हो, पतिसे प्यार रखनेवाली हो, ऐसी लडकीसे मैं विवाह करूंगा, फिर कैसी हो कि सदैव सत्य भाषण करनेवाली हो, मीठा बोलनेवालीहो और घरके बडोंकी सेवा करनेवाली चित्तकी शुद्ध हो, ऐसी लडकीको तुम मेरी शादीके लिये तलाश करो फिर राजा शुद्धोंने पुरोहितको सिद्धार्थके मनका हाल समझाकर कन्याकी तलाशके लिये भेजा। पुरोहित अनेक स्थानोंमें फिरकर महामायाके भाईके यहां पहुंचा महामायाके भाईका नाम दंडपाणीथा तिसकी लडकीका नाम गोपाथा वह गोपा संपूर्ण गुणोंकरके संपन्न थी वहाँपर बात चीत करके फिर राजा शुद्धोंके पास आया और राजासे सब हाल कहा राजाने विचारकिया कि, कुमार विद्वान् और बुद्धिमान् है इस लिये उसके पसंदवाली कन्यासे उसकी शादी करनी चाहिये, एक दिन राजाने किसी उत्सवको मनाकर बहुतसे राजकुलकी संपूर्ण लडकियोंको नेवता दिया और कुमारको सुंदर भूषण और वस्त्रोंसे सुशोभित करके अपने राजभवनमें एक सिंहास-नपर बिठलादिया और सब लडकियें भी तरह २ के जेवर और वस्त्रोंसे सुशोभित

होकर राजभवनमें आई । राजकुमार सब लडकियोंको अपने हाथसे खिलाने लगे और सबसे बातचीत करने लगे, जब कि, सब लडकियें भोजन करके अपने२ घरोंको चली गई तब गोपा नामक दण्डपाणीकी लडकी वस्त्रों और भूषणों करके अलंकृत सखियोंके सहित राजमंदिरमें आई तब राजकुमार गोपाके मुखकी तरफ लाक लगाकर देखने लगे और गोपाके प्रेममें मग्न होगये और परस्पर दोनोंकी चार आंखें होगईं. थोडी देरके पीछे कुमारने शरमसे मुँहको फेर लिया दूसरी बार फिर गोपाके मुखको देखनेकी इच्छा हुई परंतु लज्जाके वश होकर उसकी तरफ फिर न ताके । इधर गोपाभी सिद्धार्थके रूपको देखकर प्रेममें मग्न होगई और लज्जा और शरमसे आंखोंको उसने बंद करलिया और चेहरेपर पसीना टपकने लगा, फिर आंखोंको खोलकर सिद्धार्थकी तरफ देखकर आंखको नीचे कर दिया और चित्रकी तरह खडी होगई दोनोंको सनमुख खडे २ कुछकाल व्यतीत होगया और दोनों अपनी होशहवाशसे बाहर होकर खडेरहे, जब गोपा होशमें आई तब सोचनेलगी कि मैं किस कामके लिये आईथी और यहांपर क्या करने लग गई आई तो थी नेवतामें और यहांपर आकर अपने दिलको मैंने बेच दिया यदि हमाराभी मन इसी कुमार पर चला गया है तोभी मैं अपने मतलबको कुमारसे कभीभी जाहिर नही करूंगी अपने दिलमेंही गोपाने सोच २ कर दिलके ख्यालोंको रोक लिया और फिर हँस कर कुमारसे बोली मैंने आपका क्या कसूर कियाहै जो आपने मेरे मनको अपने यहां कैद कर लिया है और मेरेको जरासा प्रसादभी नहीं दिया है कुमारने कहा न मैंने आपके मनको कैद किया है और न आपको प्रसाद देनेसे इनकारही किया है तूं सबसे पीछे क्यों आई भला इसमेंभी कुछ हर्जकी बात नहीं है मैं तुमको अपनी अंगूठी देताहूं कुमारीने कहा प्रसादसमेत स्वर्णका भूषण मेरा हकहै, तब कुमार अपने जडाऊ जवाहिरातके भूषणोंको उतारकर गोपाको देने लगा गोपाने कहा मैं आपका जेवर उतरवाकर लेना नहीं चाहती हूं बस मेरेको सब कुछ मिल गया ऐसे कहकर गोपा वहांसे चल दी परंतु उसका मन वहांसे जानेको नहीं चाहताथा गोपाके साथकी जो सखियें थीं उन्होंने देखा कि राजकुमार दण्डपाणी की कन्या जो गोपा है इसके प्रेमरूपी समुद्रमें डूबगया है यह खबर राजा शुद्धोके कानमेंभी पहुंचगई राजा अपने मनमें बडा प्रसन्न हुवा और अपने पुरोहित को

दण्डपाणीके पास भेजा दण्डपाणीने जवाब दिया मैं शाकिया कुलका हूं हमारा कुल शूरवीरताका कदर जानताहै केवल द्रव्यको देखकर नहीं भूलता है, यदि कुमार अपनी बहादुरीका परचा देवैं तबतो मैं कुमारके साथ अपनी कन्याका विवाह करूंगा वरना नहीं करूंगा, इस जवाबको सुनकर राजा चुप रहगये मंत्रियोंने कहा कुमार सब विद्याओंमें बडे निपुण हैं फिर सब लोगोंके सामने कुमारने शस्त्रविद्यामें परीक्षा दी तब दण्डपाणीने बडी खुशीके साथ गोपाके विवाहको मंजूर कर लिया उस वक्त बुद्धगौतमकी उमर केवल उन्नीस बरसकी थी और गोपाकी उमर १६ बरसकी थी बडी धूमधामसे मामूकी लडकी गोपाके साथ बुद्धका विवाह हुआ और विवाह करके अपने राजभवनमें गोपाको लेआये जो कुमार संसारसे छूटनेके लिये उदासीन रहताथा और बंधनमें फसना नहीं चाहताथा उसको पिताने भारी बंधनसे बांध दिया औरभी अनेक प्रकारके बंधनोंके इकट्ठा करनेके लिये राजाशुद्धों यत्न करने लगे गरमी और बरसात तथा सरदीके मोसमके लिये जुदा २ आराम करनेकी जगहोंको बुद्धके लिये राजाने बनवाया और चौमंजले पचमंजले सतमंजले हवादार रंग बिरंगके मकानोंको बनवा दिया और हर एक मकानके ऊपर फूलोंके गमले लगवा दिये गिरदे मकानोंके सुंदर २ बाग लगवा दिये और सुंदर दासी दास सेवामें कर दिये सुंदर रागोंको गानेवालीं स्त्रियें कुमारको राग रंग और हरतरहके तमाशे दिखलानेके लिये हाजिर करदीं, तात्पर्य यह है कि जितना विषयजन्य सुख था वह सब बुद्धके लिये पिताने तैयार कर दिया बुद्धगौतमकी स्त्री गोपाभी बडी अकलमंद थी और विदुषी भी थी वह किसीसेभी मुंहको ढांपती नहीं थी गोपा कहतीथी धार्मिक पुरुष जिस तरहसे रहे उसी तरहसे वह शोभाको पाता है, चाहे वह कुशाके आसनपर बैठे, चाहे वह जमीन पर नग्न होकर लोटता रहे, चाहे, वह शीश महलमें रहे चाहे वह घासके झोपडेमें रहे चाहे बनमें रहे चाहे मंदिरमें, सब प्रकारसे वह शोभाकोही पाता है क्योंकि उसके सच्चे धर्मसे उसकी शोभा है। सच्चे पुरुषोंका जीवनही धर्म है न तो उनका विषय भोगोंसे जीवन है और न भूषणोंसे उनकी शोभा है अधर्मी पुरुष कितनेही भूषणोंको पहने और शीशे वगैरहके मकानोंमें रहें तबभी उनकी शोभा किसी प्रकारसेभी नहीं होसक्ती है जिस आदमीका अपना मनही पापका घर है उसकी बाहरकी सफाई और भूषणोंसे

कदापि शोभा नहीं होसक्ती है जिसने मनको शुद्ध करलिया है उसका सब संसारमें यशही फैलता है, आदमी अपनेको अधर्मसे आपही रक्षा करसक्ता है दूसरा कोईभी उसकी रक्षाको नहीं कर सक्ता है गोपा बडी धर्मात्मा स्त्री थी छायाकी तरह स्वामीके साथ रहती थी और सखीकी तरह पतिके भलाई करनेमें रहतीथी, ऐसी पतिव्रता स्त्रीके मिलनेसे सिद्धार्थभी अपने आपको कृतार्थ मानतेथे और अपना दिल अपनी प्यारी पत्नीको सिद्धार्थने दे दिया था जैसे दूध और जल मिलकर एकही रूप हो जाते हैं तैसे सिद्धार्थ और गोपा दोनों मन करके एकही हो गये थे केवल शरीरही भिन्न २ दिखाते थे, मनका और उनके आत्माका भेद उठ गयाथा, दोनों आनंदमें मग्न होकर जीवनको व्यतीत करतेथे । बुद्धका वैराग्यभी ऐसी स्त्रीके मिलनेसे ढीला होगया था क्योंकि वह गोपा मानुषी नहीं थी मानों लक्ष्मीका स्वरूप थी गोपाकी बुद्धिमानीको देखकर राजा शुद्धोंका मन और माता गोमतीका मनभी चिंतासे रहित होगयाथा जो कि उनके मनमें सिद्धार्थकी तरफसे सिद्धार्थकी उदासीनताको देखकर प्रथम चिंता उत्पन्न होतीथी वह चिंता सब उनकी गोपाने एकदमसेही दूरकरदी, गोपाने अपने पातिव्रत धर्मके प्रभावसे और अपनी विद्वत्ताके वलसे सिद्धार्थको अपने स्नेहरूपी जालमें एकदमसेही जकडकर वांध लिया । अब राजा एकांतमें बैठकर अपने मनमें विचार करते हैं परमेश्वरकी कृपासे सिद्धार्थका मन संसारके भोगोंमें अब कुछ लंपट हो चलाहै अब हमको उचित है की धीरे २ राज्यका भार सिद्धार्थके ऊपर देकर और अपनी इस वृद्धावस्थाको परमेश्वरके भजनमें व्यतीतकरें, ऐसा विचार राजाके मनमें नित्यही उठता इधर तो राजा अपने मनके मनोरथोंको अपने मनमें नित्यही बांधते और उधर सिद्धार्थ गोपाको पाकर बहुत आनंदके साथ अपने जीवनको व्यतीत करतेहैं, एकदिन प्रातःकालके समय रागियोंने सिद्धार्थके जगानेके लिये प्रभाती रागका गाना प्रारंभ किया । और उस रागका यह तात्पर्य था कि हे जीव! तूं इस गफलतरूपी नीदमें क्यों सो रहाहै अज्ञानरूपी निद्रासे उठकर अपने स्वरूपमें जागो जिस शरीरको तूं सुंदर सुगंधियें लगाता है, सुंदर २ वस्त्रोंको पहनाता है यह शरीरभी मट्टीमें मिल जायगा, यह संसार एक मुसाफरखाना है जैसे संध्याके समय इधर उधरसे मुसाफर आकर जमा होजाते हैं, भोरके समय अपने २ स्थानोंमें चले जाते हैं

इसी प्रकार यह सब संबंधी हैं वास्तवमें न कोई किसीका पिता है न माता है ऐसे २ वैराग्यके भरे हुये पदोंको जब कि रागियोंने गायन किया सिद्धार्थ इस अपूर्व रागको सुनकर बडी चिंता करके युक्त होगया और अपने मनमें कहने लगा कि मैं जागताहूं या स्वप्न देख रहाहूं इतनेमें पक्षी बोलने लगे और कुछ २ उनको चांदनीभी दिखाई देने लगी तब उन्होंने जानलिया यह ठीक २ जाग्रत है, हम सोये नहीं हैं तब उठ बैठे और तिस गीतके तात्पर्यपर मोहित होगये और अपने पुराने वैराग्यका स्मरण भी उनको हो आया अपनी पहली आयुकी बातोंको याद करके वह चिंतामें मग्न होगये और अब इसी दिनसे उनके मुखकी कांति दूर होगई और चिंतारूपी बादलने उनके मुखको ढांप लिया और धीरे २ उनके मनकी चिंता बढने लगी तब सिद्धार्थका शरीरभी दिन प्रति दिन सूखने लगा, गोपाने जब कि सिद्धार्थकी इस तरहकी अवस्था देखी तब वह उनकी चिंताके दूर करनेके लिये अनेक प्रकारके यत्न करने लगी, गोपाके उपायोंसे सिद्धार्थकी चिंता कुछभी दूर न हुई, सिद्धार्थ अब अपने मनमें विचार करते हैं कि दिन प्रतिदिन अब मायाका जाल बढता जाता है यह मायाका जाल कभी भी टूटनेवाला नहीं है हम बचपनमें जिन खेलों और कूदोंको विषके तुल्य जानते थे उन्हींको अब युवा अवस्थामें अमृतके तुल्य जानते हैं, अबभी कुछ बिगडा नहीं है यदि हम पुरुषार्थ करेंगे तो इस विषके वृक्षको जडसे उखाड देवैंगे। इस मायाजालमें फँसकर बडे २ विद्वान् अधोगतीको प्राप्त होगये, जिस कालमें समुद्रमें तूफान उठने लगता है उसके उठनेसे थोडी देर पहले समुद्र क्रियासे रहित होकर शान्तरूप होजाता है इसी तरह बुद्धगौतमके मनमें वैराग्यरूपी तूफानके उठनेसे पहलेही बुद्ध संपूर्ण क्रियोंसे रहित होकर बैठ गया और सिद्धार्थ फिर अपने मनमें बिचार करताहै कि यह संसार अनेक प्रकारकी चिंतारूपी अग्निमें जल रहा है और दूसरी मृत्युरूपी राक्षसी खानेके लिये इसकी तरफ मुंह फाडकर देख रही है फिर यह संसार नदीके पानीके प्रवाहकी तरह हमेशाही चलायमान हो रहा है, जैसे कभी गरमी कभी सरदी कभी बरसात यह ऋतुयें सब बदलती रहती हैं तैसे यहभी सदैव बदलताही रहताहै हमेशह एक रस नहीं रहता इस संसारमें जो पुरुषोंकी आयु है सो पानीके ऊपर बुद्बुदोंकी तरह है और जन्म मरण एक बाजीगरके स्वांगोंकी

तरह है और पुरुषोंका जीना बिजुलीके चमत्कारकी तरह है, श्वास बाहरको आकर फिर भीतर जाय वा न जाय इसका क्या भरोसा है । और इस संसाररूपी कुवेमें जीव घटीयंत्रकी तरह बराबर फिर रहेहैं कभी ऊपरको और कभी नीचेको, स्थितिको कदापि नहीं प्राप्त होतेहैं तृष्णारूपी जेवडीसे बडे कसकर सब जीव बंधे हुये हैं जैसे बनका मृग लालचके वशमें होकर शिकारीके फंदेमें फँस जाता है तैसे यह जीव भी विषय भोगके लालचमें आकर संसारमें फँस जाताहै संसारके जितने स्त्री पुत्रादिक विषय हैं यह सब ऊपरसे तो बडे सुन्दर मालूम होते हैं परंतु भीतरसे यह सब जहरके बीज हैं इनके भोगनेसे पुरुष मरजाताहै जो कि श्रेष्ठ हैं वह इस तृष्णाको जलतीहुई आग समझते हैं या इसको भारी दलदल समझते हैं जिसमें फँसाहुवा आदमी फिर अनेक उपायोंसेभी निकल नहीं सक्ताहै और विद्वान्लोग इससे निकलनेकी कोशिश करतेहैं, जैसे नदीके बेगमें गिरे हुये वृक्षके पत्ते जुदा होकर बह जातेहैं इसी संसारसागरमें गिरेहुवे जुदा २ होकर जीवभी बह जाते हैं, फिर किसीका पताभी ठीक नहीं लगता है कि कहां से आयाथा और फिर कहांको चलागया और जैसे गरुड सांपको सिंह भेडीको आग घासको भस्म करडालतीहै तैसे कालभी सबको भस्म करडालता है इस तरहका विचार करते २ बुद्धके मनमें आया कि किसी निर्जन देशमें बैठकर ध्यान करना चाहिये, तब एकांत स्थानमें बैठकर वह ध्यान करने लगे ध्यानके करनेसे उनके भीतरके नेत्र खुलगये और संसारका सुख उनका धीरे २ कम होने लगा क्योंकि बुद्धने ऐसा निश्चय करलिया था कि संसारका सुख सब अनित्य है याने नाशी है परंतु इस अनित्य संसारका आश्रयभूत कोई पदार्थ अवश्यही नित्यभी है जिसके पानेसे पुरुष शान्तिको अवश्य प्राप्त होताहै उसको प्राप्त होकर पुरुष मुक्त होजाताहै मैं अब उसकी प्राप्तिके लिये कोशिश करूंगा और संसारके जीवोंको भी सच्चा रास्ता मुक्तिका बताऊंगा ऐसा विचार करके फिर सिद्धार्थ चिंताके समुद्रमें डूब गये ॥

इति श्रीमदुदासीनवर्यस्वामिहंसदासशिष्यपरमानंदाख्यविरचितबुद्धजीवनचरित्रनामकग्रन्थे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

सिद्धार्थको नित्यकी चिंतामें मग्न देखकर गोपारानीका भी जी घबरागया एक दिन सिद्धार्थ और गोपारानी अपने भवनकी एकही कोठरीमें दोनों सोये हुये थे तब अर्द्ध रात्रिके पश्चात् गोपाने एक स्वप्न देखा कि वायु बडे जोरसे चल रही है इसीसे सारी पृथिवी कांपरही है और वृक्ष सब गिरे जातेहैं और आकाशमें चन्द्रमा सूर्य्य सब उलटे घूम रहेहैं और अपने सिरके बालभी गिर पडे हैं कपडे भी सब बदनसे उतरकर पृथिवीपर गिर पडेहैं मोतियोंकी माला सब टूटगई हैं पलंग उलटकर औंधा होगयाहै और राजछत्रभी टूट गया है और पतिके भूषण तथा मुकुटभी टूटकर गिर गयाहै और सम्पूर्ण नगरमें अंधकार होगयाहै ऐसे स्वप्नको देखकर गोपा घबरा कर उठबैठी और अपने पतिको स्वप्नका सब वृत्तांत गोपाने सुनाया और पूछने लगी हे नाथ! यह स्वप्न कैसा है और इस्का फल मेरेपर क्या होगा? ऐसे स्वप्नके देखनेसे मेरा मन बडे भयको प्राप्त होरहा है?ऐसा कहकर गोपा सिद्धार्थके गलेसे लिपट गई, सिद्धार्थ कहते हैं हे प्यारी! यह स्वप्न अच्छा है तुमको शुभ फल देवेगा और आनंद प्राप्त होगा तुम्हारी बडी प्रतिष्ठा होगी संसारके सब लोग तुम्हारा मान करेंगे तुम्हारे सब दुःख दूर होजायँगे और दुःखरूपी शत्रु तुम्हारा भाग जायगा, ऐसा फल इस स्वप्नका तुमको होगा और मैंभी मोहरूपी अंधकारको दूर करके लोगोंके उद्धारके लिये ज्ञानरूपी चिरागको रोशन करूंगा और सब लोगोंके दुःखको मैं दूर करूंगा हे प्यारी! अब तुम प्रसन्न मन होकर स्थित होजावो और मैं अब संसारकी भलाईके वास्ते अपना जीवन अर्पण करूंगा इस संसारमें करोडों मनुष्य अज्ञानके वशवर्ती होकर अनेक प्रकारके दुःखोंको उठाते हैं और ऐसा कोई भी मनुष्य दिखाई नहीं पडता है जो उनकी भलाईके लिये दिलोजानसे कोशिश करै मैं संसारी जीवोंको ऐसे दुःखमें देखकर इनकी मुक्तिका उपाय सोच रहाहूं, अब मैं उनकी भलाई करनेसे चूक नहीं सक्ताहूं अब मैं इस संसारके अनित्य सुखमें फसना नहीं चाहताहूं नित्य सुखकी प्राप्तिके लिये मैंने कमर बांधी है, अब मेरी ऐसी इच्छा है कि यह पृथिवी मेरे सोनेके लिये बिछौनाहो और पत्थर ईंटें मेरी तकिया बनैं और पर्वतोंके झरने या नदियोंका जल पीनेके लिये पानी हो और वृक्षोंके फल मेरा भोजन हो संसार भरके स्त्री पुरुष मेरे बहन और भाई बन जायँ, और वनके मृगादिक सब मेरे मित्र होजायँगे, हे प्राणप्यारी! संसारके किसी

पदार्थमेंभी मैं सुखको नहीं देखताहूं ऐसा कहते २ एकबारगी सिद्धार्थ रोने लगे और गोपाभी पतिके गलेमें हाथ डाली हुई चुपचाप होकर नेत्रोंसे जलको बहाने लगी और मनमें ऐसा विचार करतीथी कि, हमारे स्वामी पुण्य और उपकारके लिये जाना चाहते हैं इनको इस कामस रोकना मुनासिब नहीं है परंतु प्राणोंसे प्यारे पतिके बिना मैं अकेली इस संसारमें कैसे अपनी आयुको व्यतीत करूंगी ये हमारे प्राणोंसेभी प्यारे पति संसारमें विना उपकार करनेसे दुःखी होरहे हैं यदि संसारको उपकार करनेसे इनको सुख होवे तो मैं अपने ऊपर अनेक प्रकारके दुःखोंकोभी सह सक्ती हूं, अगर स्वामीको सुख देनेके लिये मेरी जानभी लग जाय तोभी मैं प्रसन्नहूं परंतु स्वामीके रुदनको मैं सम्हार नहीं सक्ती हूं जब कि, दो पहर दिन उदय हुवा तब राजा शुद्धोंकोभी सिद्धार्थके रोनेका और उपकार करनेका हाल मालूम हुवा तब राजा बडे सोचमें पडे और सिद्धार्थको अपने पास बुलाकर अनेक प्रकारकी युक्तियोंसे समझाने लगे परंतु राजाका मतलब किसी तरहसेभी सिद्ध न हुवा एक दिन बुद्ध आरामवनकी तरफ जारहेथे रास्तामें एक वृद्ध शरीरवाला लाठी लिये हुवे नीचेकी तरफ शिर झुकाये हुवे जा रहाथा सिद्धार्थने अपने रथवाईसे पूछा यह कौन है और क्यों लाठी लेकर शिरको झुकाकर ऐसा धीरे २ चलता है फिर इसका शरीर दुबला और पतला क्यों होगया है इसकी सब रगें खुश्क क्यों होगई और दिखाई देती हैं ? और सब बाल इसके क्यों सुपेद होगये हैं ? दांत इसके सब क्यों टूट गये हैं ? और एक लकडीके सहारेसे बडी तकलीफको उठाकर क्यों चलता है ? सारथीने कहा देव ! यह आदमी बुढापेके वसमें होकर कमजोर और बेहवास तथा बहुत दुःखी होरहा है इसका शरीर अब किसी कामलायक नहीं रहा है । इसलिये इसको संबंधियोंने छोड दिया है, सिद्धार्थने कहा यह बुढापा किसी २ कोही होता है या सबको होता है ? फिर बुढापा किसी रोगका नाम है या रोगसे अलग है ? सारथीने कहा देव यह बुढापा कोई रोग नहीं है शरीरकी एक अवस्था विशेष है, जैसे प्रथम शरीरकी बाल्यावस्था होती है फिर पांच बरससे ऊपर सोरह बरसके भीतर कुमार अवस्था होती है फिर सोरहसे आगे युवा अवस्था आती है वह चालीस बरस तक रहती है फिर युवासे पश्चात् धीरे २ वृद्धावस्था आने लगती है सत्तर अस्सी बरसोंमें अपने पूरे जोरपर हो जाती है, जिस वास्ते

यह बुढापा शरीरकी ही एक अवस्था विशेषहै इसी वास्ते यह बुढापा प्राणीमात्रपर आताहै, जब कि बुढापा आताहै तब जवानीको नाश करदेताहै । हे देव ! यह बुढापा कोई साधारण धर्म या असाधारण धर्म नहीं है यह सबकेलिये एक जरूरी शरीरकीही अवस्थाविशेष है आपकेभी माता पिता पर अब बुढापा आता जाताहै किसी दिनमें उनकीभी ऐसीही दशा होजायगी हे देव ! युवा अवस्थामें जो कि शरीर वडा सुंदर और खूबसूरत माळूम होताहै और सबको प्यारा लगताहै वही शरीर बुढापेमें सबको बुरा माळूम होताहै सब कोई देखकर इससे घृणा करते हैं क्योंकि बुढापेमें अनेक प्रकारके रोग आकर इसको ग्रस लेतेहैं, इन्द्रियाँ सब जवाब देजाती हैं, तब कानोंसे सुना नहीं जाताहै, नेत्रोंसे देखा नहीं जाताहै, नासिकासे सुगंधिको नहीं ले सक्ता है, रसना इन्द्रियभी त्याग जाताहै, कर्मेन्द्रियभी सब भाग जातेहैं जैसे सूखी रेतेकी नदीको देखकर मृग भाग जाताहै तैसे बुढापेमें जीवात्माभी इसको त्यागकर भाग जाताहै, जबतक पुरुषकी जवानी अवस्था होतीहै तबतक सब संबन्धी मित्र बने रहतेहैं वही सब बुढापेमें त्याग देतेहैं जैसे बूढे बैलको बैलवाला त्याग देताहै फिर बुढापेमें बुद्धिभी ठिकाने पर नहीं रहती है, स्त्री पुरुष दोनोंको बुढापेका दुःख उठाना पडताहै, खूबसूरतको बुढापा बदसूरत बना देताहै, शरीरके बलको और मुखकी कान्तिको छीन लेताहै, उद्यमका नाशकर देताहै, संसारके सब सुखोंको छीन लेताहै, दुःखोंको उत्पन्न करदेताहै, तात्पर्य यहहै कि बुढापा संपूर्ण दुःखोंकी एक खानहै । सारथीकी बार्ताको सुनकर सिद्धार्थने कहा हम कैसे जवानीके नशेमें मस्त होरहेहैं जो कि इस्के अन्तिम फलकोभी हम नहीं देख सक्ते हैं और हमको कुछभी विचार नहीं फुरता है ऐसे हम अज्ञानरूपी कूपमें गिरे हुयेहैं कि उससे निकलनेके उपायकोभी हम नहीं सोच सक्तेहैं सारथी ! बुढापा जिस पर एक दिन आनेवाला है उसको खेलकूदके साथ क्या प्रयोजनहै? अब इस रथको लौटाकर घरको लेचलो, सिद्धार्थ सोच करते हुये अपने घरको वापस चलेआये । राजा शुद्धोंने कुमारके वापस आनेका हाल जब सुना तब बहुत घबराया और मनमें कुछ विचार करके सुंदर स्वरोंके गायन करनेवाली स्त्रियोंको कुमारके दिलको खुश करनेके लिये भेजा" राजाका यह तात्पर्य था कि लडका खुशीके ख्यालमें अपने दिलके रंजको भूल जाय और फिर खुश होकर राज भोग करे ।

फिर एक दिन सिद्धार्थ रथपर सवार होकर बागकी सैरको निकले जब कि नगरके दरवाजासे बाहर निकलकर कुछ दूर गये तब रास्तामें एक मनुष्य पृथिवी पर पडा हुवा लंबी २ सांसको लेता था और तिसका पेट फूला हुवा था मल मूत्रमें लिपटा जाता था, उस्को देखकर सिद्धार्थने पूछा यह मनुष्य क्यों इस दशाको प्राप्त होगया है सारथीने कहा देव यह आदमी मरनेके समीप पहुंच गयाहै थोडी देरमें इस्के प्राण देहसे निकल जायँगे अब यह किसी तरहसे भी अच्छा नहीं होसक्ता है कुमारने कहा यह जीना भी एक स्वप्नकी तरह माल्लम होता है जो लोग इस जीनेपर विश्वास करतेहैं वह मूर्ख हैं. हाय ऐसी हालत सबके लिये एकदिन होती है तब बुद्धिमान् पुरुष इससे छूटनेके लिये क्यों नहीं यत्न करते हैं ? कुमारने कहा सारथी जब कि एकदिन ऐसीही दशा होनी है तब रथको फेरकर घरकी तरफ लेचलो हमको खेलकूदमें कहां सुख मिलैगा ? कुमार घरको लौट आये और आकर चिंतातुर होकर बैठ रहे।

कुछ दिनके पीछे सिद्धार्थ रथपर सवार होकर बागकी सैरको निकले रास्तामें क्या देखतेहैं कि एक लकडीके तखतेके ऊपर एक मनुष्यको डाले हुये चार आदमी कांधोंपर उठाये हुवे लिये जाते थे और तिस्के साथ बहुतसे स्त्री पुरुष रुदन करते चले जाते थे और बडे दुःखसे हाय हाय शब्दको पुकारते थे शिरके बाल उनके खुले थे, कपडे फटे थे, मट्टीको उठाकर शिरमें डालते थे उनको देखकर राजकुमारने सारथीसे पूछा वे लोग क्यों रोते हैं और दुःखी होते हैं और किसको उठाकर लिये जाते हैं ? सारथीने कहा महाराज ये लोग जिस आदमीको तखतेपर उठाकर लिये जाते हैं वह मुरदा है अर्थात् जिसका प्राण शरीरसे निकल जाता है वह मुरदा कहा जाताहै, इसका प्राण शरीरसे निकल गया है अब वह मट्टीके ढेलेकी तरह होगया है क्योंकि उसके शरीरसे जीवात्मा निकलकर चला गया है और जो लोग कि भयानक शब्दसे रुदन करते हैं इनमेंसे किसीका वह बाप है, किसीका बेटा है, किसीका स्वामी है, यह सब तिस्के सम्बन्धी हैं जोकि साथ २ चलते हैं और जिन्होंने तिस्को उठाया हुवाहै कुमारने कहा धिक्कार है इस जीनेको जोकि स्वप्नकी तरह व्यतीत होजाता है और इस युवा अवस्थाको तथा वृद्धावस्थाको भी धिक्कार है जिसमें अनेक प्रकारके दुःख होते हैं और इन संसारी लोकोंको भी धिक्कार है जो इन दुःखोंसे छूटनेके

लिये उपायको नहीं करते हैं दुःखोंमें पडे हैं दुःखोंको उठाते हैं और वैराग्यको नहीं प्राप्त होते हैं सारथी रथको घरकी तरफ लौटा ले चलो। सारथी रथको लौटा कर घरको ले आया सिद्धार्थ घरमें आकर एकांत देशमें बैठकर फिर चिंता करने लगा कि इस संसार बंधनसे कैसे छूटना चाहिये इसी चिंतामें कुछ दिन जब व्यतीत होगये तब फिर एक दिन हवा खानेके लिये निकले और रास्तामें एक पुरुषको देखकर सारथीसे पूछा कि सारथी यह आदमी कौन है ? इसकी आंखें क्यों नहीं ऊँची होती हैं ? और इसकी दृष्टि नीचेहीकी तरफ क्यों लग रही है ? और इसने गेरूसे रंगे हुए कपडे क्यों पहने हैं ? और हाथमें भिक्षा पात्रको लेकर धीरे २ चलता है, इसका चित्त भी बडा शान्त है, इसका हाल हमसे कहो सारथीने कहा हे देव ! यह आदमी भिक्षु संन्यासी है, इसने संसारके सुखोंको त्याग कर दिया है, पुण्य पाप कर्मोंसे यह रहित होगया है, सबको यह बराबर जानता है, शत्रु मित्रमें इसकी सम बुद्धि है, काम क्रोधादिकोंको इसने जीत लिया है, भिक्षा मांगकर अपना जीवन व्यतीत करता है, संसारी लोगोंसे अलग रहता है, संसारके व्यवहारोंका इसने त्याग कर दिया है, राजकुमारने कहा सारथी तुमने वह बात कही है जिसके लिये मेरा भी मन लगा है । और पंडित लोगोंने भी संन्यास धर्मकी स्तुति की है और इसी धर्ममें रह करके लोगोंका उपकार भी होसकता है. और अपनी भलाईभी इसी धर्ममें होसक्ती है दूसरे किसी धर्ममें या वर्णमें या आश्रममें नहीं होसकती है । संन्यास धर्मको मुक्तिका द्वार कहा है। तब वहांसेही कुमार बागमें जाकर एकांत देशमें बैठ रहे सिद्धार्थ बाल्यावस्थासे ही संसारके भोगोंकी इच्छा नहीं करते थे, सिद्धार्थको सब संसार झूठा माल्लम होता था, संसारके पदार्थ सिद्धार्थको खुश नहीं करसकते थे सिद्धार्थको किसी पर भी कल्याणके लिये भरोसा नहीं था इसलिये वह सर्वत्र एकही व्यापक परमेश्वरको देखते थे, संसारकी तरफसे अत्यन्त उदासीन होकर स्थित होरहे थे और अपने मनमें कहते थे कि भिक्षुकको देख कर हमको अब भलाईका रास्ता मिल गया अब मैं इसी संन्यासाश्रमको आश्रयण करके संसारकी भलाईको करूंगा और लोगोंकोभी सच्चे धर्मोंका उपदेश करूं॥ यही मेरा और संसारके लोगोंका कल्याण कारक है । प्रथम हमने यह सोचाथा कि दुनियांमें रहकर धर्मका उपदेश करूंगा अब इस भिक्षुको देखकर हमने जान

लिया कि बिना भिक्षुके भषके धारण करनेसे उपकार नहीं होसकता है। संसारमें रहकर धर्मका पालन करना उचित है परंतु इस संसारमें रहकर कदापि पूरी तौरपर पालन नहीं होसक्ता है इस लिये इसका त्याग करके पूरी तौरपर पालन करूंगा अब सिद्धार्थ एक वृक्षके नचि बैठकर अपने मनमें विचार करने लगा कि क्या करना चाहिये, इसी विचारमें संपूर्ण रात्रि व्यतीत होगई जब सबेरा हुआ और सूर्य्य भगवान्ने अपनी किरणोंके जालको पृथिवीपर फैलाना प्रारंभ किया और सब लोग नींदसे उठकर अपने २ कामोंमें लगे तबभी सिद्धार्थ उसी वृक्षके नीचे अपने विचार और ध्यानमें बैठाही रहा और अन्न जलको भी ग्रहण न किया और न आठपहरमें सोया, परंतु चित्तके भीतर जो विचार उठाथा गृहस्थमें रहना चाहिये अथवा इसका त्याग कर देना चाहिये अभीतक उसका फैसला कुछभी न हुवा फिर मनमें कहते हैं यह तो सच है कि गृहस्थाश्रममें रहकर मनके संकल्प कदापि पूरे नहीं होते हैं परंतु पिताके प्रेमका टूटना कैसे होगा यदि मैं त्यागकर चलाजाऊँ तो पिता अत्यन्त दुःखी होवेंगे उनके दिलमें हमारे वियोगकी भारी चोट लगैगी ॥ फिर हम माता गोमतीके स्नेहरूपी बन्धनको कैसे तोडेंगे, फिर जो हमारी अपने प्राणोंसेभी अधिक प्रेम करनेवाली गोपा रानी है उसको जन्मभरके दुःखके लिये हम किसके पास छोड जायँ इसी चिंताके समुद्रमें डूबे हुये सिद्धार्थ कभी २ मनको दृढ करके कहते कि जो हो सो हो परंतु इस दुःखके समुद्रसे हमारे लिये निकलना अवश्य है इसी तरह कितनीही बार सिद्धार्थ मनमें विचार करता और फिर वह टूटही जाताथा, इधर तो पिता शुद्धोंके दुःखका ख्याल होता और उधर माता गोमतीके स्नेहकी चिंता उठती और एक तरफ प्यारी गोपाके: दुःखकी चिंता घेर लेतीथी, कि जो गोपा स्वामिके बिना दूसरे किसीको जानतीही नहीं है और जिसने स्वामिकोही अपने जीवनका एक आश्रय बना रखा है और विवाह कालसे लेकर आजतक जिसने कभीभी पतिके सामने कडी बार्ताको नहीं किया है। ऐसा गोपाका ख्याल जिस समय सिद्धार्थके मनमें आताथा उस समय सिद्धार्थके मनके सब संकल्प ढीले होजातेथे परंतु जब संसारके दुःखोंकी तरफ ख्याल जाता था तब सिद्धार्थको गृहस्थाश्रममें रहना बडाही कठिन मालूम होताथा, फिर जब कि, कुमारकी दृष्टि देशकी तरफ जातीथी तब उनको

धर्मका लोप और अधर्मकी अधिकताही जहां तहां दिखाई देतीथी और जब वृद्धावस्थाके दुःखोंका स्मरण होआताथा (जो कि उन्होंने एक दिन एक वृद्ध आदमीमें देखेथे) तब उनके मनमें यही आताथा येन केन उपायों करके लोगोंको सच्चे धर्मोंका उपदेश करना चाहिये और मुक्तिके साधनोंको मालूम कराके सबको मोक्षमार्गमेंही लगाना चाहिये ॥

सिद्धार्थके मनमें इस तरहका बडाभारी विचार हो रहाथा कि इतनेमें सिद्धार्थको भृत्यने आकरके खबर दी कि गोपाके यहां एक लडका उत्पन्न हुवा है इस खुशीको सुनकर सिद्धार्थ बोलउठे इस कालमें हमको एक बंधन और अधिक होगया है? राजा शुद्धोंको जब पोतेके उत्पन्न होनेकी खबर मिली तब राजाने कहा हमारे पोतेका नाम रायल रक्खा जायगा ॥

अब फिर बुद्ध मनमें विचार करते हैं कि आगे एक बंधन था अब दो होगये जिन बंधनोंको मैं तोडना चाहताहूं वह तो दिन दिन बढतेही जाते हैं, यदि हम अब कुछ दिन और संसारमें रहेंगे तो औरभी बंधन बढतेही जायँगे, इस लिये अब इस संसाररूपी कारागारसे जल्दीही निकल जाना उचित है,

सिद्धार्थ लडकेके पैदा होनेकी खबरको सुनकर राजभवनकी तरफ रवाना हुये रास्तेमें उन्होंने देखा बाजारोंमें और गलियोंमें तमाम नगरके लोगोंने बडा भारी उत्सव मनाया है और खुशीसे लोग चारों तरफसे राजभवनकी तरफ दौड रहे हैं. बुद्धको आते देखकर स्त्रियें मंगल सूचक गीतोंको गान करके उनको प्रसन्न करने लगीं और अपनी २ खिडकियोंसे सिद्धार्थके ऊपर सब फूलोंकी वर्षा करने लगीं सब नगर फूलोंकी सुगंधीसे सुगंधित होगया और स्त्रियोंके सुंदर गान करनेसे गूंज उठा कुमार अपने मनमें कहता है कि जिसका मन पापके भारसे दवा हुवा है वह क्या इस खुशीसे सुखी होसक्ता है? जो लोग मोहके वशमें होरहे हैं वह अपने लिये अनंत दुःखोंको पैदा कर रहे हैं जबतक मनमें भोगोंकी तृष्णा बनी रहती है तबतक पुरुष संसारके दुःखोंसे कदापि नहीं छूटसक्ता है जब तृष्णाका अंत होजाता है तभी पुरुषको सुख मिलता है, जिस कालमें मोहरूपी अग्नि शान्त होजाती है, तिसी कालमें पुरुषको महान् सुखकी प्राप्ति होजाती है, जबतक पुरुषका मोह दूर नहीं होता है तबतक पुरुष संसार चक्रसे कदापि नहीं छूटसकता है इसलिये प्रथम मोहकोही दूर करना चाहिये, जिसकालमें

पुरुषका मोह दूरहो जाता है तिसी कालमें पुरुष संसारके बंधनोंसे छूट जाता है, ऐसा सोच विचार करते २ सिद्धार्थ अपने होशमें न रहे, फिर होशमें आकर कहने लगे कि जिस लडकेके पैदा होनेसे हमको इतना विचार उठा है उसकी खुशीमें कुछ देना चाहिये ऐसा विचार करके अपने गलेका हीरोंका हार उतार कर अपनी कुलकी लडकीको देदिया जो कि कुमारके सामने आकर गीतोंको गाती थी वह कन्या हारको पातेही बडी खुशीके साथ गीतोंको गातीहुई अपने घरको चली गई और कुमारभी अपने राजमहलमें चलेगये, राजमहलमें जब कि कुमार पहुँचे तव कोइलके तुल्य सुरोंवाली स्त्रियें सुन्दर २ गायन करके उनके दिलको खुश करने लगीं । परन्तु कुमारके दिलने अपने संकल्पको न छोडा क्यों कि वैराग्यकी आंधीने कुमारके मनको विषय भोगोंकी तरफसे उखाड डाला था, अव उसको जमनेकी उम्मैद किसी प्रकारसेभी नहीं होसक्ती है । सिद्धार्थने अपने मनमें जो पूरा दृढ विश्वाक कर लिया है वह किसीके तोडनेसे क्या टूटनेवाला है कदापि नहीं है और सिद्धार्थने अव संसारको छोडनेके लिये अपने दिलमें तीव्रतर वैराग्यको उत्पन्नकर लिया है जिस वैराग्यके आगे इन्द्र लोकके भी राजभोग सव फीके मालूम होते हैं उस वैराग्यको क्या छोटेसे राजभोग मोहित कर सक्ते हैं कदापि नहीं अव सिद्धार्थ अपने पितासेभी त्याग करनेकी आज्ञाको लेना चाहते हैं गमगीन सूरत बनायेहुवे सिद्धार्थ अपने पिताके पास पहुँचे और रोने लगे पिताने जब कि रोनेका हाल लडकेसे पूँछा तब सिद्धार्थने सब हाल अपने दिलका कह सुनाया पुत्रके वैराग्यकी वार्ताको सुनकर शुद्धोदनभी जोर २ से रोने लगे और रोते २ बेहोश होगये कुछ देरके पीछे जब कि होशमें आये तव आंसू भरी आंखोंसे तुतलाती हुई वाणीसे बोले हे प्रिय ! तुमको गृहस्थाश्रम छोडनेकी क्या जरूरत है तुमको क्या कोई दुख देता है या तुमको किसी तरहका खेद है सो मेरेसे कहो अगर किसी वस्तुकी तुमको जरूरत हो तो वोभी हमसे कहो मैं सब देशमें तलाश करके हाजिर करदेऊंगा फिर तुमको ऐसी गुणवती रूपवती साक्षात् लक्ष्मीका अवतार स्त्री मिली है उसको छोडना उचित नहीं है, फिर परमेश्वरने आपको लडका भी देदियाहै पुत्रके उत्पन्न होनेकी खुशीके बराबर संसारमें कोई भी खुशी नहीं है फिर अभी तुम्हारी तीस बरससे भी कम छोटीसी उमरहै अभी तुमको युवा अवस्था

प्राप्त हुई है इस युवा अवस्थामें त्याग करनाभी कहीं नहीं लिखाहै चतुर्थ अवस्थामें याने वृद्धावस्थामें संन्यासाश्रमका ग्रहण करना लिखाहै इस युवा अवस्थामें भोगोंको भोगना और पुत्रोंको उत्पन्न करना ही कहा है फिर देवऋण पितृऋण ऋषिऋणसे छूटना भी इसी युवाअवस्थामें कहा है तुम्हारी अवस्था अभी संन्यास धारण करनेकी नहीं है इस अवस्थामें भिक्षापात्र लेकर घर २ घूमना तुमको शोभा नहीं देसक्ताहै तुम राजपुत्रहो तुम्हारा धर्म राज करना तथा प्रजाका पालन करनाहै फिर तुम्हारे विना मेरा जीवन कैसे होगा तुमको देख २ कर मैं जीता हूं तुम्हारे वियोग होनेसे मेरे प्राण इस शरीरमें एक क्षणमात्रभी नहीं रहेंगे मैं तुमको देखकर अपनेको स्वर्गी मानताहूं। हे पुत्र! तुमको पाकर मैं अपने शरीरकी मृत्युकोभी भूलगयाहूं। तुमहीं हमारे कुलके दीपक हो तुमहीं अब मेरी इस बूढी उमरमें मेरा जीवनहो जैसे अंधा लाठीके सहारेसे चलता फिरता है तैसे मैं भी तुम्हारे सहारेसे दिनोंको व्यतीत करताहूं मुझ निराश्रयको छोडकर तुम कहां जावोगे मेरेको तो सिवा आपके और राजपाटकी कुछभी जरूरत नहीं है इस प्रकार सिद्धार्थको उपदेश करते २ राजाकी आवाजभी बंद होगई और नेत्रोंसे आंसुवोंकी धारा बहने लगी पिताके कष्टको देखकर सिद्धार्थ भी जोर २ से रोने लगे बहुतसा रोकरके फिर दोनों चुपचाप बैठगये फिर राजाने कहा तुम घरको छोडकर क्यों चले जातेहो जो कुछ तुमको जरूरत हो सो मुझसे कहिये मैं देऊँगा यदि तुम चले जावोगे तब मैं किसके साथ रहूंगा और इस राज्यका मालिक कौन बनैगा और तुम्हारे बिना मैं कैसे जीऊँगा और तुम्हारे बिना इस घरमें अंधेरा छा जायगा। हे पुत्र! मेरे पर और इस राज्यपर दयाकरो तब बुद्धने कहा मेरेको वरदान दीजिये जो मेरेको जरूरत हो उसको मैं पूरा कर देऊँगा ऐसा जब कि आप मेरेसे करारकरैं तब तो मैं घरमें ही रहूंगा नहीं तो इस कारागारमें मैं कदापि नहीं रहूंगा। प्रथमतो मेरे पर वृद्धावस्था कभीभी न आवै, दूसरा मैं आपसे यह वर मांगताहूं कि सदैव मेरा शरीर आरोग्य रहे कभीभी किसी तरहकी बीमारी न हो तीसरा यह वर मांगताहूं कि मेरी आयु इतनी बडी हो जितनीकि सूर्य्य चन्द्रमाकीहै। चौथा मैं यह वर मांगताहूं कि मेरा दिल हमेशाही प्रसन्न रहे कभीभी मेरे मनमें फिकर चिंता उत्पन्न न हो अगर आप इन चारों वरोंको मुझको देसकते हैं तब तो घरको

छोडकर कहींभी नहीं जाऊंगा नहींतो घरमें रहना कठिनहै राजाने बुद्धसे कहा मेरेमें इन चारोंमेंसे एक वर देनेकीभी ताकत नहींहै जिन ऋषी लोकोंने हजारों बरसों तक तप कियाथा उनकोभी इन बरोंके देनेकी सामर्थ्य नहीं हुई फिर बुद्धने कहा यदि आप इन चारोंवरोंको नहीं देसक्तेहैं तव एकही वर मेरेको दीजिये वह येहै कि मेरी मुहब्बतको अपने दिलसे दूर कर दीजिये अर्थात् मेरेसे प्रेमको छोडदीजिये इस वरकोतो आप देसक्तेहैं क्योंकि आपके अधीनहै बुद्धकी इस बार्ताको सुनकर फिर राजा शुद्धोदन बार २ रोने और चिल्लाने लगे और लडकेके गलेसे लपटकर उस्को घर छोडनेकेलिये मना करने लगे। राजाके विलापको सुनकर अगर पत्थरकी तरह दिलवालाभी कोई होता उस्काभी दिल नरम होजाता परन्तु बुद्धका दिल राजाके विलाप करनेसेभी नरम न हुवा पर राजाके बिलापसे सिद्धार्थकी आंखोंसे भी जलकी धारा बहने. लगी परंतु मन सिद्धार्थका अपने वैराग्यसे चलायमान न हुवा जबकि राजा शुद्धोदनकी कोई कोशिशभी पेश न आई और किसी प्रकारके उपदेशनेभी बुद्धके दिलपर असर न किया तब धर्मात्मा राजाने अपने पुत्रको वनमें जानेसे रोकना मुनासिब न जानकर पुत्रको कहा हमभी अब आपके साथही बनको चलेंगे तुम्हारे बिना अकेले घरमें रह करके हम क्या करैंगे बुद्धने बडी भक्तिके साथ पितासे बिदा होनेकी आज्ञाली और महलमें जाकर सोरहा और इधर राजा शुद्धोदन पुत्रको संन्यास लेनेकी आज्ञाको देकर विलाप करने लगे विलाप करते २ कभी बेहोश होजाते और कभी फिर होशमें आकर फिर विलाप करने लगतेथे बस थोडी देरमें ही सब खुशीकी आवाज इधर उधरकी रुक गयी और राजा के कुलके लोगोंने राजासे कहा महाराज आप निश्चित रहिये हमलोग कुमारको किसी तरहसेभी नहीं जाने देवैंगे वह अकेलेहैं और हम लाखोंहैं लाखोंके आगे अकेलेकी क्या मजाल है जो भाग जाय ऐसा कहकर पांचसौ हथियार बांधकर बडे २ बहादुर बुद्धके रखनेके लिये तैयार होगये और कोई हाथीपर और कोई घोडेपर सवार होकर नगरके चारों तरफ पहरा देनेके लिये फिरने लगे तब राजाके दिलमें भी कुछ तसल्ली होगई फिर नगरके एक २ फाटकपर दो २ सौ सिपाही हथियार बंध पहरा देने लगे और कोई रास्ताभी बुद्धके भागजानेके लिये उन्होंने खाली न छोडा थोडी देरके पीछे यह खबर भीतर महलमें गोमती माताके पास भी पहुंच गई तब गोमतीने दास दासियोंको बुलाकर महलके भीतर जितनी

अंधेरी जगेंथीं सबमें रोशनी करादी और सब दासियोंसे कहदिया गया कि रात्रिभर तुम जागकर कुमारकी चौकी करो सब दासियोंने कहा हम रात्रि भर जागेंगीं और कुमारको भागने न देंगी और रूपवान् गानेवालियोंको बुलाकर कहदिया गया कि तुम कुमारके पास रात्रिभर राग रंगको सुनावो उन सबोंने सुंदर वस्त्र और भूषणोंको पहनकर कुमारके कमरेमें जाकर नाचना गाना प्रारंभ करदिया और कुमारके दिलको खुश करने लगीं परंतु सिद्धार्थका मन अपने वैराग्यसे किसी तरहसे भी चलायमान न हुवा और राजकुमार सोगये। जब कि कुमार घोरनिद्रामें सोगये तब नाचने गानेवाली स्त्रियोंने अपने मनमें विचार किया कि जिसके लिये हम गाती नाचती हैं वह तो सो गये हैं अब हम किसको खुश करें वह सबभी उसी जगहमें सो गईं और दीयोंकी पांती भी धीरे २ सब बुतगईं जबकि अर्द्ध रात्रिव्यतीत होगई और सब मनुष्य पक्षी आदिक भी सोगये तब सिद्धार्थने चुपचाप अपने बिछौनेसे उठकर चारों तरफ देखा कि इस वक्त सब कोई नींदके आराममें मग्न होरहे हैं फिर सिद्धार्थ मकानके फाटक पर गये और बाहरकी तरफ देखा तो चांदनी रात्रि खिलीहुई है और वह रात्रि बडी प्यारी मालूम होती है और दरवाजाके पास एक चौकीदार खडा है जब कि सिद्धार्थने सारथीको बुलाया तब वह पहरा देनेवाला उनके पास चला आया उससे बुद्धने कहा मैं इसी वक्त घरको छोडकर चला जाऊंगा तुम जलदी जाकर एक घोडा तेज रफतारवाला कसाकर लावो और छोटीसी उमरसे जिसके पानेके लिये मेरा दिल रात्रिदिन रुदन कर रहा है आज मैं उस्को हासिल करूंगा और आजही मेरे दिलकी मुराद पूरी होगी अब तुम देर मत करो जलदी घोडा कसकर लावो बुद्धकी इस वार्ताको सुनकर वह सारथी हकाबका रह गया और तिस्की जवान बन्द होगई कुछेदर पीछे तिसने कहा हे देव ! ऐसी वार्ता नहीं कहनी चाहिये। और ऐसी बे दरदी भी नहीं करनी चाहिये फूलकी तरह जो आपका बदन है सो तपस्या लायक नहीं है हे देव ! आप इस बडी ख्वाहिशको छोडदीजिये॥ सिद्धार्थने कहा संसारमें किसका जी चाहता है जो ऐसी गुणवती स्त्रीको छोडदे और फिर किसका मन चाहता है जो ऐसे प्रेमी माता पिता त्याग करदे फिर किसका मन चाहता है जो ऐसे राजपाटको छोडदे परन्तु क्या करूं मेरा मन इस संसारमें अब रहनेको नहीं चाहता है यदि मेरेको तरह तरहके भोगोंकी

प्राप्ति होनेपरभी मेरा मन उन भोगोंमें आसक्त नहीं है इतनी बडी संपतके प्राप्त होनेपरभी मेरा दिल तृप्तिको नहीं प्राप्त होता है जब कि इतने २ बडे भोग मेरे दिलको शान्ति नहीं करसक्ते हैं तब अधिक दिनोंतक इस कारागारमें रहकर मैं अपने दिनोंको क्यों व्यर्थ खोऊं ? शुद्धोदन कहते हैं हमने नियम कर लियाहै कि बाकी की आयुको मैं तपस्यामें गुजारूँगा यदि तपस्या करनेमें मेरा शरीर बरबादभी होजाय तबभी कुछ मेरेको खेद नहीं है अब मैंने उत्तम संकल्पको किया है इससे हटाकर अधर्ममें मैं प्रवृत्त होना नहीं चाहता हूं संसारके जीवोंके दुःख मेरेसे सहे नहीं जाते हैं हे सारथी ! तुमभी इस उत्तम काममें विघ्न मत डालो किंतु मदद करो सारथीने कहा स्वर्गके राज्यकी प्राप्तिके लिये या इस लोकके राज्यकी प्राप्तिके लिये तो लोक तपस्या करते हैं सोतो आपको प्राप्तही है फिर किस वास्ते आप राज्यका त्याग करके तपस्याको जाते हैं और भी अनेक प्रकारके फलोंवाले बाग और आज्ञाकारी स्त्री और अनेक दास और दासियें यह सब तो आपको प्राप्त हैं फिर और कौन फलके लिये आप तपस्याको जाते हैं अनेक प्रकारके हीरे मोती जिन मंदिरोंमें लगे हुवे हैं ऐसे मंदिर आपके रहनेके लिये और पर्वतोंके तुल्य ऊँचे हाथी आपके चढनेके लिये और अनेक प्रकारके घोडे और रथभी आपकी सवारीके लिये हरवक्त द्वार पर खडे रहते हैं । इस प्रकार के भोगोंकी सामग्रीके होने पर फिर क्यों आप वनमें तपस्या करनेके लिये जाते हैं । हे देव ! आपका सुंदर शरीर और आपकी युवावस्था अभी राज्य भोग करनेके लिये है तपस्या करनेके लिये नहीं है अभी कुछ दिन आप राज्यका सुख भोग करैं जब कि वृद्धावस्था आवैगी तब तप करनेके लिये जाना बुद्धने कहा यह जितना सांसारिक सुख है सो सभी क्षणिक है और परिणाम इसका दुःखहै और धर्मका नाशकहै यह जो विषय जन्य सुखहै सो बिजुलीकी तरह और जलके बुद्बुदेकी तरह क्षणमात्रमें नाश होजाने वालाहै और जो तपस्याका फलरूप सुखहै वह नित्यहै कदापि नाशको प्राप्त नहीं होने वाला है और जितने कि विद्वान् हैं वह सब क्षणिक सुखकी इच्छाको नहीं करते हैं, किंतु नित्य सुखकीही सब इच्छा करते हैं और नित्य सुखकी प्राप्तिके लिये बडे २ राज भोगोंकाभी त्याग कर देते हैं जोकि मूर्ख अज्ञानी जीव हैं वह विषय सुखकी इच्छाको करते हैं विषय सुख जितनाही भोगा जाय उतनाही इसके भोगनेकी इच्छा बढती जाती है विषयोंके

भोगनेसे तृष्णा कदापि नहीं घटती है जैसे घृतके डालनेसे अग्नि शांतिको कदापि प्राप्त नहीं होती है और जितने पाप हैं वह सब भोगोंकी इच्छासेही होते हैं जिस पुरुषने भोगोंकी इच्छाका त्याग कर दिया है उसने सर्व पापोंका भी त्याग करदिया है हे सारथि ! अब मैं इस गृहरूपी कारागारमें रहना नहीं चाहताहूं प्रथम मैं आपही इस संसाररूपी समुद्रसे पार होजाऊंगा फिर संसारी लोकोंकोभी इस महान दुःखसे पार करूंगा अर्थात् मुक्तिके मार्गका उपदेश । सिद्धार्थकी बातोंको सुनकर सारथिने दुःखी होकर पूँछा हे देव ! क्या आपने संसारके त्याग करनेका पूरा निश्चय कर लिया है? सिद्धार्थने कहा पर्वत हिलजायँ तो हिल जायँ सूर्य्य पश्चिमसे उदय होजायँ तो होजायँ परंतु मेरा निश्चय कदापि हटनेवाला नहीं है मैंने अपनी जवानीको और अपनी आयुको इसीको अर्पण कर दिया है । बुद्ध कहते हैं कि हे सारथी ! यदि मेरे सिरपर आकाश गिर पडे या हिमालय पर्वत मेरे रास्तेमें गिर पडे या समुद्र आकर मेरे चारों तरफ फैल जाय तबभी मेरा संकल्प दूर होनेवाला नहीं है इसलिये अब मेरेको इस निश्चयसे रोकना मुनासिब नहीं है और मैं तुम्हारे आगे हाथ जोडताहूं तुमभी मेरे मददगार बनो । बुद्धकी इन बातोंको सुनकर सारथी चुपचाप होगया और अपने मनमें विचार करने लगा कि ऐसे उत्तम कामके लिये यह जाना चाहते हैं अब इनका रोकना भी मुनासिब नहीं है ऐसा विचार करके शीघ्रगामी घोडा लेनेके लिये गया और इधर बुद्ध अपने मनमें कहते हैं कि अब हम हमेशाके लिये जाते हैं किसी ऐसे सफरको नहीं जाते हैं जोकि दस पांच दिनमें फिर लौटकर आवैंगे इस लिये अब एकबार अपने नये पैदा हुए लडकेका भी मुख देख लेना चाहिये और प्राणोंसे प्यारी गोपाका भी एक बार दर्शन करलेना चाहिये अपने मनमेंही ऐसा सोचकर धीरे २ पांवको रखते हुये गोपाके मकानमें गये वहां पर मंद २ दीप जल रहाथा अभी लडकेको पैदा हुवे सातही दिन गुजरेथे गोपाने अपना एक हाथ बच्चेके सिरके नीचे रक्खा और दूसरे हाथसे बच्चेको छातीसे लगाय कर निद्रामें मग्न होरही थी गोपाको नींदमें बेहोश देखकर सिद्धार्थके मनमें आयाकि अपने लड-केको एकबार मैंभी अपनी छातीसे लगाऊं फिर सोचा यदि गोपाकी नींद खुल जायगी तब मेरे घर छोडनेमें बडा भारी प्रतिबंध खडा होजायगा इसी सोचमें थोडीदेरतक वहांपर सिद्धार्थ खडे रहे और मोहके वशमें प्राप्त होगये फिर

तुरंतही मनको समझा बुझाकर मोहको दूर करके जलदी २ पांवको उठाकर बाहर दर्वाजापर चले आये और सारथीके आनेकी बाट देखने लगे थोडी देरके पीछे वहभी एक अति उत्तम घोडेको लेकर वहांपर बुद्धके समीप पहुंच गया बुद्धदेवभी तुरंत घोडेपर सवार होगये और शहर पनाहकी तरफ चले क्योंकि नगरके द्वार पर सैकडों पहरादार खडे होकर पहरा देरहेथे सिद्धार्थ इस लिये नगरके द्वारकी तरफ न गये और सारथीनेभी उनके पीछे २ चुपचाप होकर चल दिया वह घोडा जबकि दीवारके पास पहुंचा तब एकही छलांगसे शहर पनाहकी दीवारको कूद गया नगरसे बाहर होतेही बुद्धने घोडेको चलाया घोडा क्या था मानो वायुसे बातें करताथा अब आगेतो घोडा दौडा जाता है और पीछे २ वह सारथी नौकर दौडा जाता है । बुद्धकी हिम्मतको वही आदमी जानता है कि, जिसका दिल संसारसे उपराम रहता है और वैराग्यसे भरा है दूसरा आदमी रागी बुद्धकी हिम्मतको नहीं जानता है अब बुद्ध घोडेको जल्द २ चलाते हुवे रातोरात अपने पिताके राजकी हद्दसे बाहर होगये इतनेमें सबेरा होगया जबकि बुद्धने पीछेकी तरफ देखा तब वह सारथीभी दौडता हुवा आरहा है जबकि वह बुद्धके पास पहुंच गया तब बुद्धने उससे कहा तुम मेरे भूषणोंको और घोडेको लेकर पीछे वापस चले जाओ और मैं अब संन्यासीका भेष बनाकर जहां मेरी इच्छा होगी वहांको मैं जाऊंगा नौकरने कहा हे देव ! मैंभी आपके साथही संन्यासीका भेष बनाकर रहूंगा बुद्धने कहा ऐसा कभी भी नहीं होगा फिर बहुतही नम्रतासे तिसने कहा देव ! मैंआपकी सेवा करूंगा किसी प्रकारकाभी दुःख आपको मेरे साथ रहनेसे न होगा किंतु मैं सब प्रकारका सुखही आपको देऊंगा बुद्धने कहा संन्यासीके लिये अकेलाही रहना लिखा है जो संन्यासी किसी दूसरेको साथ लेकर फिरता है वह त्यागी नहीं कहा जाता है किन्तु वह रागी कहा जाताहै पुण्यके बदले घर छोडनेका उलटा तिसको पाप होता है इस लिये मैं आपको कदापि साथ नहीं रक्खूंगा ऐसा कहकर बुद्धने अपना सब भूषण उतार कर तिसके आगे धर दिया तब वह नौकर चुपचाप खडा होकर नेत्रोंसे जल बहाने लगा तब बुद्धने विचार किया कि लंबे २ बाल संन्यासीको शोभा नहीं देतेहैं इसलिये इनको भी काट देना चाहिये ऐसा सोचकर तलवारसे अपने सिरके बालोंको बुद्धने काटदिया फिर जबकि अपने रेशमी

कपडोंकी तरफ देखा तब कहा इनको भी उतारकर किसीको देदेना चाहिये इधर उधर देखने लगे इतनेमें उनको एक गरीब आदमी फटे हुये वस्त्रोंवाला दिखाई पडा उससे कहा हमारे कपडोंको तुम लेलेवो और अपने कपडोंको तुम हमको देदेवो उसने मान लिया बुद्धने अपने सब कपडे उतारकर तिस्के देदिये और उस्के कपडोंको आप पहन लिया वह गरीब उन कपडोंको लेकर बडा खुश हुवा । और जिस बुद्धके सिरके बालोंको अनेक प्रकारकी सुंगांधियें लगाई जातीथीं और धोनेके लिये बहुतसे नौकर चाकर हाजिर रहतेथे उन बालोंको काटकर बुद्धने पृथिवीपर फेंकदिया फिर जो बुद्ध दिनमें अनेकबार तरह तरहकी पोशाकोंको बदलतेथे उन्होंने फकीरोंकी तरह फटे पुराने कपडे पहन लिये हैं और पांवसे जूताकोभी उतार दिया है और संन्यासीका भेष बनाकर खडे होगये अब इस जगत्में ऐसा विचार होताहै कि प्रारब्धभी कोई वस्तु है क्योंकि जिस बुद्धने अपने विवाहसे पूर्व ऐसा विचार कियाथा।कि मैं घरमें रह करकेही सच्चे धर्मोंको हासिल करूंगा और लोकोंको सच्चे धर्मोंका उपदेश करके संसार समुद्रसे पार करूंगा इसी प्रकारके अनेक संकल्पोंको अपने मनमें बांधाथा वही बुद्ध जब राज पाटको छोडकर संन्यासीका भेष बनाकर खडेहैं बस इसीसे साबित होता है कि प्रारब्ध कर्मभी जरूर है और जन्मांतरभी अवश्य जीवको होता है बस संसारमें इस वार्ताको कोईभी नहीं जानताहै कि आज क्याहै और कल क्या होजावैगा देखो प्रथम बुद्धने अपने मनमें अनेक प्रकारके संकल्पोंको कियाथा कि जो मैं घरमें रह कर विषय भोगोंको भी भोगूँगा और परमार्थकोभी सिद्ध करूंगा और फिर विवाह करके दस बरस भोगोंकोभी तिसने भोगा और ग्यारहवें बरस अचानकही एक बूढेको देखकर तिस्के मनका ख्याल बदल गया थोडेही दिनोंके पीछे उस महात्माने रूपवती गुणवती स्त्रीका और सात दिनके बच्चेका त्याग करके हजारों पहरेदार बहादुरोंके बीचसे निकलकर संसारसे अलग हो खडे हुए ऐसे तीव्रतर वैराग्यवान् गौतम बुद्धकी कौन पुरुष स्तुति न करता होगा और कौन पुरुष उनको न जानता होगा किंतु विद्वान् लोकतो सभी तिनको जानते हैं बुद्धको उस वक्त संन्यासीके भेषमें देखकर सारथीने कपडेसे अपने मुखको ढांप लिया और जोर २ रोने लगा वहां नदीके किनारे पर खडे होकर बुद्धने अपने

नौकरसे कहा तुम इसी घोडे पर सवार होकर और इस जेवरको लेकर नगरको अभी चले जावो और हमारे पिताजीसे जाकर कहना बुद्ध कहतेथे कि मैंने किसी संसारिक दुःखसे दुःखी होकर संन्यासको धारण नहीं किया है किंतु लोकोंके उप उपकार करनेके लिये मैंने इस वेषको धारण किया है और फिर जब कि मेरी दिलीमुराद पूरी होजायँगी तब आकर आपका दर्शन करूंगा और आपके वियोगके दुःखको दूर कर देऊंगा हे भृत्य ! तुम जल्दी घरकी तरफ जावो और घबराये हुवे मेरे पिताको तसल्ली देवो यदि तुम अधिक देर इसी जगहमें लगावोगे तब ऐसा नहो कि मेरे पिता संसारसे कूंच करजावें इसवास्ते अब तुम देर मत करो भृत्य घोडेको लेकर उदास होकर चलपडा ॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्यपरमानंदसमाख्याधरविरचिते बुद्ध जीवनचरित्रनामकग्रंथे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अब बुद्धका नौकर घोडेको और जेवरको लेकर उदासीन होकर राजधानीकी तरफको चला जहांतक उसकी नजर बुद्ध तक पहुंचती रही वहांतकतो वार २ वह पीछेकी तरफ बराबर ताकताही चला आया फिर जब उसकी निगाहसे बहुत दूर बुद्ध रह गया तब वह बार २ रोता हुआ राजा शुद्धोदनके नगरकी तरफ रवाना हुआ जितना दुःख किसीको अपने लडकेके मर जानेसे होता है उससेभी अधिक तिसको हुआ अब इधरका हाल सुनिये जिस कालमें सिद्धार्थ चलागया तब कुछ देरके पीछे जिस कमरेमें बुद्ध सोयाथा और उसके दिलको प्रसन्न करनेवाली गायन करनेवालीं स्त्रियें भी सोई थीं वे स्त्रियें जब जागीं तब उन्होंने देखा कि सिद्धार्थ अपने बिस्तरेपर नहीं है तब वह सब राजभवनकी एक २ कोठडीमें बुद्धको खोजने लगीं परंतु उनको कहींभी बुद्धका पता न मिला तब वह सब एकबारगी बडे जोरसे रोने लगीं तब इधर उधरके घरोंके लोकभी उनके आवाजको सुनकर जागपडे और राजा शुद्धोदनकीभी नींद खुलगई और उनके रोनेका सबब पूछा तब राजाको मालूम हुआ कि सिद्धार्थ भाग गये हैं इस खबरके सुनतेही राजा शुद्धोदन बेहोश होकरके गिरपडे जब कुछ होशमें आये तब घबराहटमें किसीको नगरके भीतर कुमारकी तलाशमें भेजा और किसीको नगरके बाहर पूर्वकी तरफ किसीको पश्चिमकी तरफ किसीको उत्तरकी तरफ किसीको दक्षिणकी तरफ

कुमारकी तलाशके लिये भेजा इसीतरह गली २ में घर २ में भी आदमियोंको कुमारकी तलाशके लिये भेजा सब ढूंढते २ थक गये मगर कुमारका पता किसीको भी न मिला अब राजाके सवार चारों तरफ बिजुलीकी तरह सिद्धार्थको खोजते फिरते हैं सबोंने वन और बगीचे तथा जंगलोंको छान डाला परंतु सिद्धार्थका पता किसीकोभी न मिला बहुतसे सवार जंगलोंमें और ग्रामोंमें तथा नगरोंमें ढूंढ ढूंढ कर हारके वापस चले आये फिर जो एक सवारोंकी मंडली पूर्व दिशाकी तरफ जारहीथी उन्होंने दूरसे देखा कि एक आदमी कुमारके कपडोंकी गठडीको सिर पर उठाये हुये चला आता है उसको सवारोंने इस शुभेसे कैद कर लिया कि लालचसे इसने कुमारको मार डालाहोगा इतनेमें कुमारके जेवरको लियेहुये सारथीको देख उससे हालको जानकर तिसको छोड दिया । सारथीकी जुबानीसे सवारोंको मालूम हुवा कि बुद्ध संन्यासी होगये हैं घरको अब वह किसीतरहसेभी लौट करके नहीं आवैंगे तब सबके सब साथ मिलकर घरकी तरफ चले राजा शुद्धोदन कुमारके वियोगमें पागलकी तरह होकर भीतर राजमहलमें बैठेथे सारथी बुद्धके जेवरको लेकर उसी जगह राजाके पास चला गया जबकि कुमारका जेवर सारथीने राजाके आगे धर दिया तब जेवरको देख कर राजा शुद्धोदन और कुमारकी माता गोमती दोनों ढायें मार २ कर रोने लगे उनकी आवाजको सुनकर भीतरकी सब स्त्रियें दौड २ कर आगईं और पृथिवीपर गिरकर वह भी सब रोनेलगीं और गोमतीके विलापको सुनकर राजा शुद्धोदनभी बेहोश होगये । गोमती कहतीहै कि हा पुत्र! मुझको इस घोर दुःखमें छोडकर तुम क्यों चले गयेहो इस वृद्ध पिताको ऐसी अवस्थामें छोडकर तुम कहां चले गयेहो हम दोनोंको तुम अनाथ कर गयेहो हे पुत्र ! तुम्हारे बिना आज यह राजभवन सूना होरहा है इस प्रकारके अनेक विलापोंको करती हुई गोमतीभी मूर्च्छित होगई बहुतसा यत्न करनेके पीछे राजा और गोमतीकी मूर्च्छा छूटी मूर्च्छाके छूट जानेपर फिर राजा विलाप करने लगे हाय २ अंधेकी लाठीकी तरह हे पुत्र ! मुझको इस बुढापेमें तू छोड कर कहांको चला गया हे पुत्र ! तुम्हारे बिना अब मेरा अवलंब कोई नहीं है इस संसाररूपी घोर वनमें तू मुझको निराश्रय छोडकर क्यों चला गया है हे पुत्र ! मैंने ऐसा कौनसा अपराध किया था जो इस

अवस्थामें मेरेको ऐसा दारुण दुःख प्राप्त हुआहै अब मेरेसे यह तकलीफ सही नहीं जाती है तुम्हारे वियोगमें मेरा कलेजा फटा जाता है ऐसे २ दारुण विलापोंको करता २ राजा फिर मूर्च्छित होगया और इधर गोमती दीन स्वरसे विलाप करती २ बेहोश होगई कुछ देरके पीछे फिर दोनों होशमें आकर विलाप करने लगे उनके विलापको सुनकर पत्थरके समान दिलवालेकाभी दिल फट जाता था और राजा रानीके रुदनोंको सुनकर सब दास और दासियेंभी ढायें मार २ कर रोने लगे और सब नगरमें दुःखका एक अंधकार छागया इतना बडाभारी दुःख राजाको तथा प्रजाको हुआ कि जो लिखनेसे बाहर है और जितने कि राजाके घरानेके लोग थे वह सभी कुमारके संन्यासी होजानेको सुन कर बार २ ऊंचे स्वरोंसे रोने लगे और आसुवोंकी धाराको बहाने लगे सब लोकोंके रोनेका शब्द चारों तरफ गूंज उठा कुछ देरके पीछे राजाको ज्योतिषीका कथन स्मरण होआया राजाने कहा जिस कालमें सिद्धार्थका जन्म हुवा था तिस कालमें ज्योतिषीने हमसे कहा था यदि यह राज्य करैगा तब चक्रवर्ती राजा होगा और संन्यासको यदि यह धारण कर लेगा तब संसारी लोकोंके दुःखको दूर करनेवाला होगा अर्थात् संसार भर पर बडा उपकार करैगा अब सिद्धार्थने परोपकारके लिये अपना जीवन अर्पण किया है और उत्तम कर्मके लिये उसने राज्यका सुखभी त्याग करादिया है अब सब कोई मेरे साथ मिलकर ऐसा आशीर्वाद करो कि सिद्धार्थ चिरजीवीहो और जिस कामके लिये उसने घरका त्यागकर दिया है वह काम भी उस्का पूरा होजाय सब किसीने राजाके साथ मिलकर इसी तरहका बुद्धके लिये आशीर्वाद किया गोमतीभी वहांसे उठी और तालावके किनारेपर जाकर कुमारके जेवरको गरीबोंको बांट दिया परंतु सिद्धार्थकी जुदाईकी अग्नि चित्तसे दूर न हुई । भीतर रणवासमें जिसकालमें गोपाने बुद्धके चले जानेकी खबरको सुना तिसी कालमें गोपाके होशहवास उडगये जैसे किसीके सिर पर अचानक बिजुली गिर पडे और वह बेहोश होजाय इसी तरहकी गोपाकी हालत होगई जबकि होशमें आई तब गोपाके नेत्रोंसे मेघकी तरह जलकी धारा बहने लगी परंतु मुखसे तिसने कोई भी विलापका शब्द न निकाला और जडकी तरह चेष्टासे रहित होकर वह पड रही जब कि सारथी के आनेका हाल उसने सुना और फिर यहभी गोपाको मालूम होगया कि

हमारे प्राणप्यारेथे वह संन्यासी होगये तब गोपानेभी बडा भारी विलाप किया गोपाके विलापको सुनकर एकबारही मंदिर सब गूंज उठा विलाप करनेके थोडी देरपीछे गोपानेभी अपने सिरके बाल सब काट डाले और एक २ करके सब भूषणोंको उतार दिया और सुंदर वस्त्रोंको उतारकर फेंक दिया । केवल सादी लिवासको पहन लिया और जमीनपर अपना आसन लगा लिया और अच्छे २ भोजनोंका खाना छोडदिया किंतु साधारण भोजन दिनमें एक बार करना आरंभ कर दिया । गोपाने संपूर्ण संसारके भोगोंका त्याग कर दिया और ब्रह्मचर्य्यको धारण करके गोपा दिनोंको काटने लगी जिसका पति राजभोगोंका त्याग करके संन्यासी बन गयाहै वह गोपाभी घरमें रहतेही संन्यासिनी बनगई और गोपाके पिताने आकर गोपाको बहुत कुछ तसल्लीदी और अपने घरमें लेजानाभी चाहा परंतु गोपाने न माना राजा शुद्धोदननेभी गोपाको बहुतसी तसल्लीदी और कहा यह बच्चा तुम्हारा जीता रहे अब परमेश्वर इसीको इस राज्यका राजा बना वैगा इसको देखकर तुमभी जीवो और हमभी जियेंगे अब शोकको तुम दूर करो॥ सिद्धार्थ संसारके भोगोंका त्याग करके संन्यासीका भेष बनाकर वहांसे आगे एक जंगलमें जाकर सात रोज तक बराबर एक आमके वृक्षके नीचे ध्यान लगाकर बैठे रहे और अपने मनमें बडे प्रसन्न हुये जो अब हम संसारी बंधनोंसे छूटकर स्वतंत्रहो गयेहैं । अब हम अपना मतलब पूरी तौरसे हासिल कर सकेंगे आठवें दिन वहांसे उठकर पूर्व दिशाकी तरफ चले और चलते २ रेवत ऋषिके आश्रम पर पहुंचे वहांपर आश्रमवालेंने उनका बडा सत्कार किया वहांपर एक दो रोज रहकर फिर वहांसे आगेको चले आगे पेशालीनामक नगरमें पहुंचे वहांपर एक संन्यासी बडा पंडितथा उसके पास तीनसौसे अधिक विद्यार्थी पढतेथे वह संन्यासी बुद्ध देवकी मूर्तिको देखकर बडा प्रसन्न हुआ बुद्धदेवका उसने बडा आदर किया बुद्धदेव उसके पास पढने लगे थोडेही कालमें बुद्धदेवने उनसे छे दर्शनोंको पढलिया और ध्यान लगानेकी युक्तिकोभी सीखलिया तब बुद्धने अपने मनमें विचार किया कि जिस वस्तुके पानेके लिये हमने घरको छोडा है उसकी प्राप्तितो हमको अभीतक नहीं हुई है अब उस वस्तुकी प्राप्तिके लिये यहांसेभी चलना चाहिये ऐसा विचार करके एक दिन वहांसे भी चलदिया और चलते २ राजगृहीके भण्डारकी तरफ गये उस समयमें राजगृही मगध

देशकी राजधानीथी और इस राजधानीका राजाभी बडा बली था यह राजधानी पांच पहाडियोंसे घेरी हुईथी वे पांच पहाडियें तिस राजधानीके गिरदे एक किलाथीं इसीसे वह राजधानी वडी सुंदर प्रतीत होतीथी और इन्हीं पहाडियोंकी कंदरामें वहुतसे तपस्वीलोक रात्रि दिन तप करतेथे अर्थात् ईश्वरके ध्यानमें रात्रि दिन मग्न रहतेथे और पहाडोंकी कंदराभी वस्तीके समीपही थीं इसी वास्ते यहांके तपस्वियोंको खाने पीनेकाभी आराम रहताथा क्योंकि सव लोक हर एक वस्तुको उन तपस्वियोंके लिये लेजातेथे बुद्धभी थोडे दिनोंमें वहांपर पहुंच गये और नगरके समीप एक पर्वतकी कंदरामें इन्होंनेभी अपना आसन लगा लिया और सबेरे हाथमें भिक्षापात्रको लेकर नगरमें भिक्षा मांगनेके लिये गये और द्वार २ पर भिक्षा मांगने लगे नगरनिवासी बुद्धके सुंदर रूपको देखकर सब बुद्धकीही तरफ ताकने लगे। स्त्री लोक अपने द्वारपर भिक्षा देनेके बहाने उनके दर्शनसे अपने नेत्रोंको तृप्त करने लगीं तात्पर्य यहहै कि सब लोग स्त्री पुरुष बुद्धके दर्शनसे तृप्त न होते पुनः बुद्धकी तरफ देखतेथे अब नगरमें जिधरको बुद्ध जातेहैं उधरही लोक लगातार उनकी तरफ देखतेहैं राजाके मंत्रियोंनें जब बुद्धको देखा तब राजासे जाकरके कहा कि आज एक नये संन्यासी इस नगरमें भिक्षा मांगनेको आयेहैं और बडे शान्तमूर्तिहैं मानो साक्षात् विष्णु भगवान्‌ही दिखाई देतेहैं राजानेभी जब खिडकीकी राहसे बुद्धका दर्शन किया तब राजाभी उनकी सुंदर मूर्तिको देखकर मोहित होगया और अपने भृत्योंसे राजाने कहा तुम इनके पीछे२ जावो और इनकी जगहको देख आवो कि ये किस कंदरामें ठहरे हैं सिद्धार्थ नगरसे भिक्षा लेकर अपनी कंदरामें गये और भिक्षाको धरकर हाथ पांव धोकर सिद्धासनपर बैठकर भिक्षाको भोजन करनेलगे जिस बुद्धनें बचपनसे नाना प्रकारके भोजन किये हुवेथे उनसे वह भिक्षा कब खाई जातीथी परंतु वैराग्यकी प्रबलतासे उन्होंने उस भिक्षाको अपने पेटमें डाल लिया क्योंकि बुद्धकी दृष्टि अब प्राणोंकी रक्षाकी तरफ है कुछ स्वादोंकी तरफ नहीं है सच तो यह है कि बिना दुःख उठानेसे सुख कदापि नहीं मिल सक्ता है राजाके नौकरोंनें बुद्धके रहनेकी कंदराको देखकर राजासे जाकर सब हाल कहदिया तीसरे पहर राजा कुछ पंडितों और थोडेसे सिपाहियोंको साथ लेकर उनके पास गये और राजाने नम्रतासे बैठकर पूँछा महाराज आप कहांसे आते हैं सिद्धार्थने कहा राजन् मैं

शाकिया राजधानीके कपिलवस्तुसे आयाहूं इसके पश्चात् बातचीत करनेसे राजाको मालूम होगया कि यह राजा शुद्धोदनके लडके सिद्धार्थ हैं और इस मुलाकातसे पहले राजाकी कभी सिद्धार्थसे मुलाकातभी नहीं हुई थी परंतु बचपनमें एक दूसरेको परस्पर बहुतसी चीजें भेजतेथे दोस्ताना तरीकेपर फिर राजाने पूँछा प्यारे सिद्धार्थ ! आपने किसलिये संन्यासाश्रमको छोटीसी उमरमें धारण करलिया है और अपने राज्यको आपने क्यों त्याग दिया है आप अब यहांपर रहकर राजसंबंधी कामोंमें मेरी मदद कीजिये मैं आपके लिये सब तरहके आरामके सामानको तैयार कर देऊंगा आप इस जंगलमें मत रहिये इस घासके बिछौनेको और पृथिवीपर सोनेको छोड दीजिये क्योंकि आपका शरीर बडा कोमल है इन बिछौनोंके लायक नहीं है आप मेरे राजभवनमें चलकर तरह २ के भोगोंको भोगिये कोमल २ बिछौनोंपर और पलँगोंपर आराम कीजिये सिद्धार्थने कहा राजन् तुम्हारा कल्याणहो मैं कामनाकी इच्छा करके संन्यासी नहीं हुवा हूं ये भोगतो मेरे घरमें ही बहुतसे थे हे राजन् ! यह कामनाही विष है और अनंत दुःखोंका बीजभी यह कामना ही है इसी कामनाके अधीन होकर जीव नरक वास करता है कामनासेही संपूर्ण जगत् बंधनमें प्राप्त होरहा है कामनाके नाश होजानेसे जीव मुक्त होजाता है इसवास्ते विद्वान्लोक इस कामनासे किनारा करते हैं बुद्ध कहते हैं कि इस कामनाको मलकी तरह मैंने त्याग दिया है यह कामनाही पुरुषकी सब भलाइयोंको दूर करती है और बुराइयोंको उत्पन्न कर देती है और जीवको जितने दुःख पैदा होते हैं वह सब कामनासेही होते हैं और इस संसारमें ऐसा एक पुरुष भी मिलना कठिन है कि जो निष्काम हो और सत्यवादी हो असत्य करके ही सर्व जीव आच्छादित होरहे हैं जितने अनर्थ पुरुषसे होते हैं वह सब कामना करकेही होते हैं निष्कामसे कोई भी अनर्थ नहीं होता है हे राजन् ! निष्काम होनाही इस संसारमें दुर्लभ है और संसारमें ऐसा कोई पुरुष भी नहीं है जिसकी सब कामनायें पूरी होगई हों और जिसको संसारके सभी भोग प्राप्त हो गयेहों कामनाका माराहुआ जीव एक जन्मसे दूसरे जन्ममें जाता है कभी मनुष्य कभी देवता कभी पशु आदि योनियोंमें भ्रमता ही रहता है कभी भी स्थितिको नहीं प्राप्त करता है हे राजन् ! जो लोक शान्त दान्तादि गुणों करके युक्त होते हैं वह नित्य सुखको हासिल कर सक्ते हैं विषयोंके

भोगनेसे कभी भी मनकी तृप्ति नहीं होती है जैसे खारीपानीके पीनेसे कभीभी तृप्ति नहीं होती है किंतु और अधिक प्यास लग जाती है इसी तरह भोगोंके भोगनेसे तृप्ति नहीं होती है किंतु और अधिक इच्छा बढतीजाती है हे पृथिवीपाल ! आप विचारकरके देखिये कि यह शरीर बहुतही कम कालतक रहनेवाला है जैसे पानीका बुद्बुद होता है फिर यह शरीर दुःखोंका एक घर है और इसमें जितने छिद्र हैं उन सबसे रात्रि दिन मलही गिरता रहता है यह शरीर एक घृणाका पात्र है जो कुछ इसके भीतर भरा है यदि वह सब बाहरकी तरफ होता तो रात्रि दिन इसको खानेके लिये कूकर और कौवे वगैराही दौडते रहते और उन्हींके हटानेमें यह जीव लगा रहता । इसी वास्ते मैं इस अपवित्र शरीरमें स्नेहको नहीं करताहूं हे राजन् ! मैं अनेक प्रकारके भोगोंकी सामग्रीको छोडकर और अनेक सुंदर स्त्रियोंको छोडकर अपने कल्याण करनेके लिये मैं घरकोभी छोडकर संन्यासी बन गयाहूं तब सिद्धार्थके मित्र राजाकोभी मालूम होगया कि बुद्ध संसारके भोगोंके लिये संन्यासी नहीं हुवा है किंतु भोगोंको त्याग करके नित्य सुखकी प्राप्तिके लिये संन्यासी हुवा है इसी वास्ते यह हमारे भोगोंका भूँखा नहीं है राजाने कहा जब आपको आत्मज्ञानका लाभ होजाय तब एक बार हमारे घरमेंभी जरूर आइये और हमको भी उपदेश करके कृतार्थ कीजिये राजा इस प्रकारकी प्रार्थनाको करके फिर नमस्कार करके अपने घरको चलागया और सिद्धार्थनेभी इस प्रार्थनाको मंजूर किया दो चार दिनके पीछे सिद्धार्थ तो वहाँसे चल दिया और पहाडोंमें फिरने लगा फिरते २ एक पहाडकी कंदरामें एक ऋषि रहतेथे और बहुतसे विद्यार्थियोंको विद्याध्ययन कराते थे सिद्धार्थभी जाकर उनसे विद्याको अध्ययन करने लगे और थोडेही दिनोंमें सिद्धार्थने उनसे बहुतसी विद्याको पढलिया ऋषीने सिद्धार्थकी बुद्धिको देखकर कहा आप हमारे पास रहिये और हम तुम दोनों मिल करके विद्यार्थियोंको पढावेंगे सिद्धार्थने कहा हम इस कामके लिये संन्यासी नहीं हुये हैं हम अपने चित्तको शांत करनेके लिये संन्यासी हुये हैं हम परम शान्तिको हासिल करनेके लिये साधु हुये हैं इसलिये मैं इस जगहमें अधिक नहीं रहूंगा वहांपर ऋषीसे सिद्धार्थने योगशास्त्रका अधिक अध्ययन किया और अनेक प्रकारके प्राणायाम तथा योगकी मुद्रा और आसन आदिकोंकोभी सिद्धार्थ

ने सीख लिया परंतु जिस ध्यानसे आत्माका साक्षात्कारहो उस ध्यानको वह ऋषी नहीं जानतेथे इसलिये सिद्धार्थका पूरा २ मतलब वहांपर हासिल न हुआ और यहभी सिद्धार्थको माळूम होगया कि इन ऋषियोंके मनमें अभी अनेक प्रकारकी कामना भरी हैं यदिचेत् ये तितिक्षा बहुत करते हैं तथापि चित्तकी शान्ति इनको अभी नहीं मिली है इसलिये मेरा मतलब अब इनके पास रह कर पूरा नहीं होगा अब यहांसे चलनाही ठीक है और अन्यत्र जाकर कहीं कठिन तपस्याको मैं अब करूंगा ऐसा विचार करके बुद्धने वहांसे चलदिया इधर उधर फिरते २ आद्रू ग्राममें जा पहुँचे ग्रामके समीप एक नदी छोटीसी धीरे २ चलती थी और नदीमें अनेक प्रकारके जीव क्रीडा करते थे नदीके किनारे पर तरह २ के बडे सुंदर वृक्ष लगे हुयेथे नदीका पानी बहुतही साफथा और तिसके समीप जो जंगलथा वह फूलोंसे भरा था जंगलमें अनेक प्रकारकी चिडियां बोलतीथीं जमीन वहांकी बहुत साफथी कहीं २ बडा सुंदर रेताभी चमकता था ऐसी जगहको देखकर सिद्धार्थके मनमें आया कि यही जगह तप करनेके लायक है फिर सिद्धार्थ विचार करते हैं कि संसारमें कोई मंत्रके जप करनेको और फल फूल खानेको और उपवास व्रतोंके रखनेकोही सच्चे धर्म मानते हैं और कोई चुपचाप बैठनेको कोई एक वक्त खानेको कोई जटा और मृगछालाके धारण करनेको कोई नंगे रहनेको कोई सिर पर राख डालनेको कोई पंचाग्नि तापनेको धर्म मानते हैं और कोई हाथ पांवको ऊपर करके सुखानेको कोई भूतों प्रेतोंकी पूजाको कोई जलादि भूतोंकी पूजाको धर्म मानते हैं कोई वृक्षोंकी पूजाको कोई पशुओंकी पूजाको धर्म मानते हैं यह सब सच्ची पूजाको और सच्चे धर्मोंको नहीं जानते हैं इसीसे यह सब दुःखको प्राप्त हो रहे हैं मैं महान् तपस्याको करके सच्चे धर्मोंको जानूं गा ऐसा विचार करके सिद्धार्थ उसी नदीके किनारे पर बैठ कर तप करनेको उद्यत हुये और अपने मनको जीतनेके लिये तथा इन्द्रियोंको वश करनेके लिये और वासनाके नाश करनेके लिये वह तपस्याको करने लगे और चार ब्राह्मणोंके लडके जो युवा अवस्थामें उनके चेले बन गयेथे वे सिद्धार्थको आकरके मिले और इधर सिद्धार्थने भी बडे २ कठिन तपोंमें कुछ भी बाकी न छोडा किंतु सब प्रकारके तपोंको और साधनोंको किया प्रथमतः सिद्धार्थने प्राणोंको रोक

करके एक मैदानमें बैठकर चिरकाल तक तप किया बडे २ कठिन प्राणायामोंको किया छे बरस उनको ऐसे दारुण तप करते २ व्यतीत होगये और कभी छटांक या आधी छटांकभर अन्न और फलको भोजन करते थे उसको भी जो कोई लाकर देदेता था तव जिसमें कि प्राण शरीरमें बनेरहें और फिर बीचमें कितने दिन केवल जलको पान करके ही रह जाते थे गर्मी सरदी बरसात तीनों मोसमोंमें बराबरही एक स्थानमें बैठे रहते थे परंतु उनका मन ऐसी कठिन तकलीफ होने परभी अपने अभ्याससे चलायमान नहीं होता था सरदीके दिनोंमें पशु पक्षी भी किसी वृक्षकी आडमें रातको काटते हैं गर्मीकी धूपके बचावके वास्ते पशु आदि कभी वृक्षकी छायामें जाबैठते हैं बरसातके बचावके लिये सब जानवर किसी ओटको खोजते हैं बुद्ध तीनों मोसमोंमें बराबर छे बरसतक मैदानमें ही दृढ आसनको लगाकर अचल होकर बैठे रहे कभी भी छे बरसके अंदर बुद्धने अपने पांवको न फैलाया और न कभी अपने आसनको छोडकर खडे हुवे ऐसी कठिन तपस्याके करनेसे बुद्धका कोमल शरीर जो था सो सूख कर पतला होगया नेत्र बैठ गये हड्डियें और रगें बाहरको निकल आई सिरके बाल बहुत बढगये थे ऐसी सूरत उनकी बदल गई थी कि अब किसी तरहसे भी वह पहिचाने नहीं जाते थे और उस जंगलमें जोकि लकडहारे और घास काटनेवाले जाते थे वह उनको भूत जानकर उनपर घास और मट्टी डाल देते थे और शरीर उनका इस्कदर दुबला और बदसूरत होगया था कि उनके विद्यार्थी भी उनको नहीं पहँचान सक्ते थे इन छे बरसोंमें सिद्धार्थने किसी भोजनका भी स्वाद नहीं लिया था और न किसी आदमीसे उन्होंने मुलाकातकी थी किन्तु एकही आत्माके ध्यानमें वह मग्न रहे थे इतनी बडी तपस्याके करनेपरभी सिद्धार्थकी मुराद हासिल न हुई तब उनके मनमें यह वार्ता आगई कि शरीरको इतना कष्ट पहुँचानेसे तो मनोरथ कदापि सिद्ध नहीं होगा क्योंकि हमने अपने शरीरको अत्यन्त कष्ट दिया है जिसका पार नहीं है तबभी हमारा मनोरथ सिद्ध नहीं हुवा है फिर अब क्या करना चाहिये इस तरहसे विचारको करने लगे विचार करते २ उठ खडे हुये और नदीके किनारे पर धीरे टहलने लगे इतनेमें कमजोरीसे गिर पडे और बेहोश होगये तब उनके शिष्योंने जाना कि इनके प्राण अबकी शरीरसे निकल गये हैं थोडी देरके पीछे जबकि वह होशमें

आये तब उन्होंने जाना कि अभी इनमें प्राण हैं तब उनकी सेवाको वह करने लगे जब कि सिद्धार्थ होशमें आकर नेत्रोंको खोल कर ताकने लगे तब उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि शरीरको इतनी पीडा देनी ठीक नहीं है क्योंकि शरीरको पीडा देनेसे सचे धर्मोंका ज्ञान कदापि नहीं होता है और ये आत्मज्ञानका साधनभी नहीं है प्रथम तो उन्होंने ऐसा ही ख्याल किया था कि गेरूके वस्त्रोंको पहरकर शरीरको सुखानाही आत्मज्ञानका साधन है अब उनको यह मालूम होगया कि यह भी साधन आत्मज्ञानका नहीं है किंतु शरीरकी रक्षाकरना ही धर्मका साधन है तब एक दिन श्मशानमें किसी मुर्देका गिरा हुआ कपडा पडाथा उसको धोकर सिद्धार्थने पहन लिया उनके शिष्योंकाभी प्रथम येही ख्याल था कि शरीरको कष्ट देनेसे ही आत्मज्ञानका लाभ होताहै जबकि सिद्धार्थको कपडे पहने हुये और अन्नादिको खातेहुये उन्होंने देखा तब सिद्धार्थ पर उनकी पहले किसी श्रद्धा न रही और उनका विश्वास बदल गया अब उनके शिष्योंके मनमें यह निश्चय होगया कि उन्होंने अपने धर्मको छोड दिया है ऐसा जान करके उनके पांचो शिष्य उनको जंगलमें अकेला छोडकर काशीके समीप एक ऋषिके आश्रम पर चले गये बुद्धने प्रथम जिस साधनको चित्तकी शान्तिका कारण जानाथा और फिर जिस साधनके करनेमें बुद्धने अपना तन मन धनको अर्पण किया था उस साधनके करनेसे बुद्धने चित्तकी शान्तिको न पाया दूसरा जिस कालमें उनके मनमें इस तरहके संकल्प विकल्प उठतेथे कि किसतरहसे हमको वह शान्तिरूपी धनकी प्राप्ति होगी जिसकी प्राप्तिके लिये वह बेचैन रहतेथे और उनका मनभी डांवा डोल रहताथा वह वस्तु बुद्धको अभीतक न मिली और वह अकेले जंगलमें इधर उधर भटकने लगे और सब तरफ उनको अंधेराही दिखाई पडने लगा तब तिस कालमें कामदेव मनुष्यकी मूर्तिको धारण करके उनके पास आया जबतक आदमीका मन सचाईकी तरफ रहताहै तबतक इसको कोईभी नहीं सता सक्ता है फिर जब कि सचाईसे इसका मन फिरने लगता है तब सब कोई इसको सताने लगते हैं कामदेवने मीठिवाणीसे सिद्धार्थको कहा तुम अपने शरीरको क्यों व्यर्थ दुःख देतेहो इस शरीरकी रक्षाके विना कोई भी धर्म नहीं हो सक्ता है, तुमको ऐसे दुःखमें देख करके मुझे तुम्हारे ऊपर बडी दया आई है

क्योंकि, फूलकी तरह जो तुम्हारा शरीर था वह अब सूख कर लकडीकी तरह होगया है और तुम्हारे अंगोंकी शोभा सब उड गई है, अब तुम इस तपस्याको छोडकर अपने देशमें जाकर अपने राज्यको भोगो तुम इस दुःखमें अपनी जान व्यर्थ क्यों खोतेहो अभी तुम्हारा कुछ नहीं बिगडा है जलदी यहांसे जाकर अपने राज्यको सँभाल लेवो । कामदेवकी वार्ताको सुनकर बडे क्रोधके साथ सिद्धार्थ बोले हमको भुलानेके लिये तुम क्यों व्यर्थ बकवाद करतेहो जो मूर्ख हैं जिनको धर्माऽधर्मका पूरा ज्ञान नहीं है वहीलोग तुम्हारे पेचमें आजावैंगे हम तुम्हारे पेचमें नहीं आनेवाले हैं जो लोग भोगोंकी इच्छा रखते हैं उनको तुम भुला सक्तेहो मुझको तुम नहीं भुला सक्तेहो क्योंकि मैं मृत्युकी भी शंका नहीं करताहूं मैं ब्रह्मचर्य्यको धारण कर अपने जीवनको व्यतीत करूंगा हे मार ! जिसका मन शुद्ध है उसको अपने शरीरकीभी परवाह नहीं है शरीर रहे या न रहे मैं अपने पुरुषार्थका त्याग कदापि नहीं करूंगा संसारमें ऐसा आदमी कोईभी नहीं है जो मुझको अब सच्चे रास्तेसे हटासके दुःख करके जीने और कामनाकी गुलामीसे मरजानाही अच्छा है । बुद्धके सच्चे धर्मोंके सामने काम का बल सब चूर चूर होगया कामदेव सिद्धार्थकी हिम्मतको अपने बलसे दूर न करसका और निराश होकर चला गया तब सिद्धार्थ इधर उधर दौडने लगे और बेकरार होगये, उसका मन कुछभी निर्णय न करसका कि, अब हमको क्या करना चाहिये फिर सिद्धार्थ इस बातको अपने मनमें कहने लगे कि, अब हमारे मनकी मुराद पूरी न होगी अब कोई ऐसा साधन नहीं है कि जिसके करनेसे हमारा मनोरथ सिद्ध होजावे, अब अनेक प्रकारके संकल्प विकल्प सिद्धार्थके मनमें गुजरने लगे जिस बुद्धका मन सांसारिक पदार्थोंसे ग्लानि करता था उसी सिद्धार्थका मन अब दूसरी तरफसे हटकर फिर उसी तरफको चल पडा है । सिद्धार्थ कहने लगे और बडाई तथा घरका अपार सुख और संबन्धियोंका अटल प्रेम यह सब हमको प्राप्त था और मेरे देखे विना मेरे पिताको एक घडीभरभी चैन नहीं पडती थी और माता गोमतीका इतना मेरे ऊपर प्यार था कि जिसकी हद नहीं मेरे वियोगसे गोपा जीतेजी विधवा बनकर घरमें बैठीहै और मेरा लडका मेरे जीतेही अनाथ बनगया जितने मेरे दोस्त और संबंधी थे वह सभी मेरे बिना व्याकुल होरहे होंगे जब ऐसा सिद्धार्थके मनमें संकल्प फुरा तब वह कहनेलगे कि

जिस वस्तुकी प्राप्तिके लिये मैंने इतना यत्नभी किया और माता पिता स्त्री आदिकोंको दुःखभी पहुँचाया वह वस्तु अवतक मुझको नहीं मिली यदि मैं संसारी जीवोंके दुःखको दूर न करसका तो मेरे जीनेसे क्या फायदाहै ? अब संसारमें मेरे लिये सुख कहीं भी नहीं है इसलिये अब मुझको घरमें ही वापस चला जाना ठीक होगा क्या? हाय २बडा दुःख है अब मैं क्या करूं ऐसा सोचते२ बुद्ध बेहोश होगये उसी बेहोशीमें बुद्धदेवने एक स्वप्न देखा कि एक देवता हाथमें तीन तार-वाली बीणाको लेकर बजारहाहै उनतीन तारोंमेंसे एक तार तो ढीलाथा उसमेंसे कुछभी आवाज नहीं निकलती थी दूसरा तार बहुत कडा खींचाहुवा था उसमें बुरी आवाज निकलती थी तीसरा तार ठीक अपने दर्जे पर था इसलिये तिसमेंसे ठीक २ आवाज निकलती थी वह बडी मधुर सुनाई देतीथी इस स्वप्नके देखतेही बुद्धके दिलमें फिरसे अपने मतलबके हासिल करनेकी उम्मैद लग गई और बुद्धके दिलमें जो चिंता व्यापी हुई थी वह सब जाती रही फिर उम्मैदका प्रकाश उदय हो आया अब वे इस विचारको करनेलगे कि एक तरफ तो शरीरको सुखा कर नाना प्रकारके दुःखोंको उठाना और दूसरी तरफ संसारके भोगोंमें चित्तको लगाकर तृष्णाका गुलाम वन जाना यह दोनोंही मार्ग ठीक नहीं हैं किंतु दोनोंके बीचका रास्ताही ठीक है ऐसा विचार करके फिर बुद्ध एक वृक्षके नीचे बैठकर ध्यान करने लगे । जिस जंगलमें वृक्षके नीचे बैठकर यह ध्यान करतेथे तिससे थोडी दूर पर एक बस्ती थी उसका नाम सीनाई ग्राम था, वहांपर एक भारी जिमीदारकी पतिव्रता स्त्री थी उसने बचपनमें एक बरगदके वृक्षके नीचे आकर एक दिन मन्नत मानीथी कि यदि मुझको मेरी पसंदका पति मिलैगा तो मैं एक स्वर्णके थालमें खीर बनाकर भेंट करूगी और जो फिर मेरे पहले लडका होगा उस दिनसे सालमें एक बार स्वर्णके थालमें खीर रखकर आपकी भेंट करूंगी इस प्रकारकी जो उसकी कामना थी वह सब पूरी होगई तो उसने अपनी दासीसे कहा तुम जाकर उस वृक्षके नीचे झाडू देकर सफाई कर आवो इधर तो दासी सफा करनेको आई और उधर उसने गौके दूधकी बहुत सुंदर खीर बनाई इधर सिद्धार्थ भी दैवयोगसे उसी बरगदके वृक्षके नीचे जा बैठे थे, दासीने आकरके जब कि तिस वृक्षके नीचे उस मूर्तिको देखा तब दौडती हुई जाकरके अपनी मालि-किनीसे कहा देवता आकरके तिस वृक्षके नीचे मूर्तिमान् बैठे हैं वह दासीसे इस

खबरको सुनकर सुंदर भूषण और वस्त्रोंको पहन कर स्वर्णके वर्तनमें खीरको धरकर दासीके शिरपर उठवा कर वहां सिद्धार्थके पास पहुंच गई और सिद्धार्थको देवता जानकर दोनों हाथोंसे उसने प्रणाम किया और उनके शिरपर अतर वगैरह सुगंधीको लगाकर खीर उनके आगे धरदी सिद्धार्थने कहा तुम्हारे मनकी कामनापूरी हो वह इस शब्दको सुनकर बडी प्रसन्नतासे अपने घरको चलीगई और सिद्धार्थ उस खीरको लेकर नदीके किनारे पर चले गये खीरको धरकर प्रथम उन्होंने नदीमें स्नान किया । पश्चात् बडे प्रेमके साथ उसका भोग लगाया, उसके खानेसे उनकी क्षुधाकी निवृत्ति होगई पश्चात् पात्रको तिसी नदीमें फेंक दिया फिर उसी नदीके किनारे निर्जन देशमें दिनको व्यतीत किया संध्याके समयमें तिसी नदीके किनारे पर एक बरगदके वृक्षको देख कर तिसकी तरफसे चले और एक घासवारेसे कुछ घासको लेकर तिसका आसन बनाकर तिसपर बैठ करके फिरसे योग करने लगे और ध्यानके समुद्रमें डूबगये फिर कामदेवने उनके योगमें विघ्न करनेके लिये उपाय बांधा अर्थात् कामदेवने अपनी सुन्दर रूपवती कन्याको सिद्धार्थके पास भेजा । सिद्धार्थके मनको उलटानेके लिये कामदेवकी कन्याने बहुतसा यत्न किया परंतु सिद्धार्थके अटल विश्वासको वह किसी तरहसे भी उलटा न सकी फिर कामदेव अपनी सेनाको लेकर सिद्धार्थको जीतनेके लिये चला कामदेवने गरज करके सिद्धार्थकी समाधिमें विघ्न करना चाहा तब बुद्धने कहा हे कामदेव ! वह लोग तेरे वशीभूत होजाते हैं ।जिन लोगोंके मनमें भोगोंकी कामना भरी हैं मेरे मनमें किसी पदार्थकीभी कामना नहीं है मैं आत्मसुख लाभके लिये योगाभ्यासको करताहूं पर्वतके तुल्य मेरे विश्वासको तुम हटा नहीं सक्तेहो तुम यहांसे चलेजावो तुम्हारा कुछभी बल हमपर नहीं चलैगा काम पराजित होकर चला गया जिस पुरुषको संसारके भोगोंसे तीव्रतर वैराग्य होगया है उसका मन फिर कदापि विषय भोगोंके लिये लोभायमान नहीं होसक्ता है तब सिद्धार्थ महान् समाधिमें स्थित होगये, ध्यानमें डूबेहुए सिद्धार्थको रात्रिके समयमें वह ज्ञान प्राप्त होगया जिसके लिये वह यत्न करतेथे कि यह जगत् सब अविद्यासे याने अज्ञानसेही उत्पन्न हुआ है अज्ञानके दूर होजानेसे जगत्‌काभी अभाव होजाता है । जिसका अज्ञान नष्ट होजाता है वह मुक्त होजाता है, जिसका अज्ञान बना रहता

है वही बंधमें रहता है, आगे अज्ञानका कार्य वासना है इन वासनाओं करके ही सब जीव दुःखको पाते हैं, वासनाके नाश होजाने पर जीव दुःखोंसे छूट जाते हैं बस वासनाओंका नाश करदेनाही उत्तम धर्म है ॥

अब बुद्धकी अविद्याका नाश होगया अविद्याके नाश होजानेके साथही अविद्याका कार्य्य जो वासना है उसका भी नाश होगया, वासनाके नाश होतेही बुद्धको आत्माका भी साक्षात्कार होगया अब बुद्ध जन्म मरणसे रहित होकर परम शान्तिको प्राप्त होगये हैं जिस वृक्षके नीचे ध्यानमें स्थित होकर बुद्धको आत्मलाभ हुवा था उस वृक्षका नाम बुद्धिदायक था इसलिये सिद्धार्थका नाम भी बुद्ध होगया आत्माका लाभ होनेसे बुद्धके मनमें सच्चे और झूंठे धर्मोंकाभी निर्णय होगया अर्थात् वर्णाश्रम और जाति आदिक जितने हैं ये सब व्यवहारकी सिद्धिके लिये ऋषि मुनियोंने कल्पना कर दिये हैं कल्पित होनेसे ये सब झूंठे हैं झूंठा होनेसे यह सब जीवोंके कल्याण कारक नहीं हैं मूर्खलोग इन्हींमें अभ्यास करके बंधको प्राप्त होतेहैं और षट् शास्त्रोंमेंसे योग और वेदांत शास्त्रही सच्चे रास्तेको बतानेवाले हैं, योग वेदांतका सहायक है बिना योगसे खुश्क वेदांतभी कल्याणका कारक नहीं है और अन्य शास्त्रबंधनमें डालनेवाले हैं छुडाने वाले नहीं हैं उसी जंगलमें फिर बुद्ध दो महीना तक रहे ॥

इति श्रीमदुदासीनवर्यस्वामिहंसदासशिष्यपरमानंदाख्यविरचितबुद्धजीवन
चरित्रनामकग्रन्थे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

उसी वृक्षके नीचे बैठेहुए बुद्ध अपने मनमें विचार करनेलगे कि मैंने सच्चे धर्मको प्राप्त करलिया है संसारमें जो लोग पुराने धर्मोंमें फँसेहुये हैं और अनेक प्रकारके पाखंडोंमें अपनी आयुको व्यर्थ खोरहे हैं। कोई देवतोंके आगे पशुओंको मार २ कर अधर्मको धर्म मान रहे हैं और कोई यंत्र मंत्र तंत्रोंमें और मारण मोहन उच्चाटनादि पाखंडोंमें लगे हैं। कोई मद्यपानादिक पंचमकारोंको धर्म मान रहे हैं और कोई माला तिलकोंमेंही फँसे हैं, क्या वे लोग मेरे इस सच्चे धर्मको कबूल करेंगे? ऐसा विचार करके वह बेचैन होगये फिर अपने मनमें कहनेलगे कि मुझमें अपने सच्चे धर्मोंके प्रचार करनेकी हिम्मत है या नहीं तब आकाशवाणी हुई "संपूर्ण संसारी लोग अधर्मकी ओर जारहे हैं बुद्ध सच्चे

धर्मोको हासिल करकेभी फिर कमर बांध कर उनको सच्चे धर्मोंका उपदेश क्यों नहीं करता है ? क्यों सोच करता है और इस काममें देर लगाताहै ? अब देर लगानेका समय नहीं है जल्दी उठो और धर्मके प्रचारको करो देर मत करो" इस आकाशवाणीको सुनकर और लोगोंके दुःखोंको याद करके बुद्धने कहा मैं अब आत्मब्रह्ममें स्थित होकर जलदीही सच्चे धर्मोंके प्रचारको करूंगा । आकाशवाणीको सुनकर बुद्धके दिलमें बडाभारी हौसला पैदा होगया इसी वास्ते बुद्धका मन अब सच्चे धर्मोंके प्रचारके लिये बडे जोशमें आगया प्रथम बुद्धने कठिन तपस्या करके सच्चे धर्मोंको प्राप्त कर लिया तब उसने द्वार २ पर जाकर उन सच्चे धर्मोंका उपदेश करनेके लिये कमरको मजबूत बांधलिया इस संसारमें परोपकार करनेके लिये जैसा पुरुषार्थ बुद्धने किया है ऐसा और किसी-नेभी नहीं किया अपने जीवनको परोपकारके लिये उन्होंने समर्पण किया तब भी कामदेवने बुद्धको बहुतसा सताया और कहा सुंदर भोगोंको भोगो, विषया-नंदही परम धर्म है इससे बढकर और कोईभी धर्म नहीं है, जन्मांतरके जो पाप हैं वह पुरुषको पापकी तरफही लगातेहैं परंतु बुद्धकी हिम्मत और तपस्याने सब पापकी जडको उखाडकर फेंक दिया बुद्धका हृदय अब शुद्ध होगया है हृदयके शुद्ध होनेसेही बुद्धका मनभी शान्त होगया बुद्धने तब मनमें ख्याल बाँधा कि पहले जाकर अपने विद्या गुरुओंको इन अपने सच्चे धर्मोंका उपदेश करैं इतनेमें खबर मिली कि उनके शरीरपात होगये हैं,तब उन्होंने विचारा कि अब अपने पहलेवाले जो पांच शिष्य हैं उनको चलकर इन सच्चे धर्मोंका उपदेश करैं ऐसा सोच करके वहांसे चल पडे चलते २ एक दिन बुद्ध गयाके समीप एक वृक्षके नीचे गर्मीकी तप्तसे घबरा कर बैठ गये, वहांपर ठंढी २ वायु चलती थी और ठंढी छायाभी थी इससे बुद्ध बैठकर उस जगहमें सुस्ताने लगे । इतनेमें अजीवकनामक ब्राह्मण वहांपर आकर बुद्धके समीप बैठ गया और बुद्धकी शान्त मूर्तिको देखकर आश्चर्य युक्त होगया और बुद्धसे कहने लगा कि हे महाराज ! वह कौनसा धर्म है जिसके करनेसे आपका चित्त शान्त होगया है और परमानंदको प्राप्त हुआ है ? उस धर्मको मुझको भी उपदेश करिये मैं भी उस धर्मको धारण करके आपकी तरह परम शान्तिको प्राप्त होजाऊं । बुद्धने कहा अज्ञानता, मूर्खता, तृष्णा और पाप कर्मोंके त्याग करनेसे पुरुष शान्तिको प्राप्त होसक्ता है और मुझको भी शान्

इन्हीं धर्मोंके करनेसे प्राप्त हुई है फिर ब्राह्मणने पूंछा आपका क्या मतलब है और अब आप कहांको जा रहे हैं ? बुद्धने कहा जो लोग संसारमें अज्ञानरूपी निद्रामें सोकर दु:खोंको उठा रहे हैं उनको जगाकर सच्चे धर्मोंका उपदेश करनेको और बनारसमें धर्मका झंडा गाडनेको मैं जाताहूं बुद्धके बनारस जानेकी वार्ताको सुनकर वह ब्राह्मण गुस्सेमें आकर भौंहोंको टेढी करके कहने लगा कि तुम्हारा रास्ता वह और मेरा रास्ता यह, ऐसा कहकर जल्दी २ पांवोंको उठाता हुआ पूर्वकी तरफको वह चला गया । बुद्धदेव तिसके कटुवचनको सुनकर जराभी नाराज न हुए और वहांसे पश्चिमकी तरफ चलपडे । चलते २ कुछ दिनोंमें बुद्ध गंगाके किनारेपर पहुंचे वहां उन्होंने एक मल्लाहको देखकर कहा कि दया करके हमको नावमें बिठलाकर इस नदीसे पारकर देवो मल्लाहने कहा हमको मजदूरी दो तो अभी आपको किनारेपर पहुंचा देऊँ बुद्धदेवने कहा मैं किराया कहांसे लाऊं मेरे पास रुपैया पैसा कुछभी नहीं है मैं बडा गरीब हूं मल्लाहने कहा इसी किरायेसे मेरी जीविका चलती है—इसी कमाईसे मेरे लडकेबाले सब जीते हैं मैं बिना पैसाके किसी प्रकारसे भी पार नहीं लेजा सक्ताहूं। बुद्धने आकाशकी तरफ जब देखा तो बगुलोंकी एक धाड पंक्ती बाँधकर उडती हुई गंगासे पारको चली गई बुद्धने कहा ये सब बगुले अपनी शक्तिसे पारको जारहे हैं किसीको भी एक टका किरायेका नहीं देते हैं । मैं भी अपनी आत्मिक शक्तिसे यत्न करके इस संसार सागरसे पार जा रहूगा यह सोचकर वह अपनी शक्तिसे गंगामें तैरकर दूसरे किनारेपर जा पहुंचे फिर उस जगहपर जा निकले कि जहांपर उनके पुराने पांचों शिष्य बैठे थे बुद्धको दूरसे आते हुए देखकर उन पांचोंने आपसमें सलाहकी कि जिस आदमीने प्रणको छोडदिया है उसको गुरु मानकर उसकी इज्जत करना ठीक नहीं है किंतु उसको नामही लेकरके बुलाना उचित है, परंतु यह राजघरानेमें और उत्तम कुलमें पैदा हुए हैं इसलिये इनको बैठनेके लिये एक कुशाका आसन देदेना चाहिये जब कि बुद्ध उनके समीप पहुंच गये तब उन्होंने एक कुशाका आसन उनके बैठनेके लिये देदिया उन्होंने बुद्धकी कुछभी प्रतिष्ठा नहीं की तब बुद्धने उनसे कहा मैं सांसारिक भोगोंमें अपने जीवनको व्यतीत नहीं करता हूं बल्कि उनसे मैं किनारा करता हूं इसलिये तुम अपने मनमें ऐसा ख्याल मत करो कि इसने फिर वस्त्रोंको पहन लिया है मैं

नंगा रहनेको और पंचाग्नि तापनेको तथा जटा भस्मादिकोंके धारण करनेको मुक्ति का साधन नहीं मानताहूं किंतु मैंने अब मुक्तिके मार्गको ठीक २ जान लिया है जो आदमी मायाके बंधनमें फँसा है वह नंगा रहे चाहे सिर मुंडवा डाले, या जटा भस्मको धारण करलेवै या कंवल ओढै या पंचाग्नि तापै अर्थात् इनमेंसे किसी एक कामके करनेसे वा इन सब्र कामोंके करनेसे वह कदापि पवित्र नहीं हो सक्ता है जिस पुरुषका मन भोगोंमें आसक्त है और दुष्ट वासनाओं करके भरा हुआ है वह वेदोंका पाठ करै अथवा देवताओंका पूजन करै वा यज्ञोंको करै अथवा और अनेक प्रकारके तीर्थोंमें स्नान करै कदापि शुद्ध नहीं होसक्ता है। और शरावका पीना, क्रोध करना, हठ करना, दगाबाजी करना झूँठ बोलना दूसरेकी निंदा करना ये सब बातें मनुष्योंको अपवित्र करनेवाली हैं बुद्ध कहनेलगे कि हे संन्यासियो! मैं तुमको सच्चे धर्मोंका उपदेश करताहूँ शरीरको अति कष्ट देनेसे मुमुक्षुके मनमें बुरे संकल्प उठते हैं विचारके विना केवल शरीरको दुःख देना और पाखंडरूपी आचारोंका करना भी एक अज्ञानकाही चिह्न है इनके करनेसे चित्तकी शुद्धि कदापि नहीं होती है किंतु उलटी अशुद्धि-ही होतीहै । जो आदमी दीयेमें तेलकी जगह पानीको भरताहै वह कदापि अँधेरेको दूर नहीं कर सक्ता है इसी तरह जो पुरुष शरीरको दुःख देकर मुक्तिकी इच्छा करताहै वह कदापि मुक्तिको नहीं प्राप्त होसक्ताहै जो आदमी तपस्याकी इच्छासे तृष्णाकी अग्निको बुताना चाहताहै वह संसाररूपी बंधनोंसे छूट कैसे सक्ता है जवतक आदमीमें ममता और अहंकार बना रहताहै तबतक पुरुष मोक्षको प्राप्त नहीं होसक्ता है जिसका अहंकार नष्ट होगयाहै ममता जिस्की मरगई है और तृष्णा जिसकी दूर होगई है वह जीतेही मुक्त कहा जाता है क्योंकि वह इस लोक और परलोकके विषय वासनाओंकी इच्छा नहीं करता है वासनाही जीवके बंधनका हेतु है जिसके मनमें किसी प्रकारकी वासना नहीं है वह घरमें रहै वा जंगलमें, उस्को कोई पाप भी नहीं लग सक्ता है और जिसके मनमें वासना भरीहै वह अपनी कामनाओंका सदैव गुलामही बना रहताहै जो पुरुष शरीरमात्रके निर्बाहके लिये किसी प्रकारके अनर्थको नहीं करताहै किंतु यथा लाभ संतुष्ट रहता है वह कदापि पापका भागी नहीं होताहै । हे संन्यासियो! सच्चा मार्ग यही है जो कि मैंने आपलोगोंके आगे निरूपण किया है। उन्होंने

कहा—हे बुद्ध! जो कि धर्मका चक्र तुमने चलायाहै नेकचलनी इस चक्रके आरे हैं, नीति इस्की लंबाई है, ज्ञान इस्का हाल है, लज्जा इस्की नाभी है सत्य इस्का धुरा है, जिसने इस चक्रको जान लिया है उसने धर्मको जान लियाहै, बुद्ध कहतेहैं कि हरएक आदमी संसार बंधनसे छूट सक्ताहै परंतु किसी देवता या मनुष्य अथवा गुरूकी सहायतासे नहीं छूट सक्ता है किंतु अपनेही पुरुषार्थसे छूट सक्ता है। बहुत शास्त्रों और वेदोंके पढ़नेसे भी नहीं छूट सक्ता है किंतु वेदों और शास्त्रोंमें जो काम करना लिखा है उस कामके करनेसे ही छूट सक्ता है। केवल पाठमात्रके करनेसे नहीं छूट सक्ता है, और गुरू नाम है सच्चा रास्ता वताने वालेका जो सच्चा रास्ता है उसपर चलनेसेही छूट सक्ता है केवल गुरू करलेनेसे या बिना सच्चे रास्तेके चलनेसे कदापि नहीं छूट सक्ता है। दंभी गुरु तो टका लेनेके यार हैं उनकी वताई हुई पूजा पाठोंके करनेसे कदापि छूट नहीं सक्ता है जितना जीवोंको सुखः दुःख होताहै वह अपने किये हुए कर्मोंकाही फल है। कर्मोका चक्र चलताही रहता है इस चक्रको दूरकर देनेका नामही मुक्ति है। जैसे मकडी एक छोटासा जीव होताहै वह अपने मुखसे तार निकालकर आपही उसमें फँस जाताहै तैसे यह जीवभी आप कर्मोंको करके आपही उनमें वँध जाता है फिर अपनेही पुरुषार्थ करनेसे छूट सक्ता है बिना अपने पुरुषार्थसे ईश्वरभी इस्को नहीं छुडा सक्ताहै। जैसे किसी राजाने कानून बना दिया और सबको कहदिया कि तुम इसके मुताबिक काम करो, जो उसके मुताबिक काम करता है उसका दरजा राजा बढाता है जो उसके मुताबिक काम नहीं करता है किंतु केवल राजाकी स्तुतिकोही करता है तिसका दर्जा नहीं बढाता है तैसे वेद भी एक ईश्वरका वनायाहुआ कानून है उसमें लिखा है सत्यं वद सत्यवोलो धर्मंचर धर्मका आचरण करो। अव जो धर्मं चर २ ऐसा बार २ पाठही करतारहे और धर्मको न जाने और न उसका आचरण करै तव तो कुछभी फल पाठमात्र करनेसे नहीं होगा फलतो धर्मके आचरण करनेसे और सत्य भाषणसेही होगा इसी तरह अच्छे कामोंके करनेसेही फल होता है पूर्व जन्मके कर्मोका फल इस जन्ममें मिलता है और इस जन्मके कर्मोंका फल आगे जन्ममें मिलैगा इस कर्मके चक्रका नाश सच्चे धर्मके चक्रके चलानेसे होता है अब बुद्ध अपने सिद्धान्तोंको अपने शिष्योंके प्रति

कहते हैं प्रथम अपने मनको अपने काबूमें रखना । दूसरा सब जीवोंपर दया करनी किसीको दुःख न देना तीसरा--सब पुरुषोंको सच्चे धर्मोका ही उपदेश करना चौथा--उपकार करना पांचवां-- सत्य भाषण करना छठा--चोरी जारी न करना सातवां किसी जीवकीभी हिंसा न करना आठवां--दम्भ पाखंडको न करना नवां--एकही चेतनकी उपासना करनी दशवां--जीवात्माकी शक्तियोंको बढाना यह दश सिद्धान्त बुद्धके हैं । इनका ही उपदेश बुद्धने अपने शिष्योंको किया और कहा इनहीं पर चलनेसे जीवकी मुक्ति होती है और इन्हींका नाम सच्चाधर्म है इन्हीं धर्मोके करनेसे जीव परमेश्वरमें मिल जाताहै, परमेश्वरमें मिल जानेका नामही मुक्ति है किसीभी लोकांतरकी प्राप्तिका नाम मुक्ति नहीं है क्योंकि जितने उत्पत्ति-वाले पदार्थ है वह सब नाशवाले हैं लोक भी सब उत्पत्तिवाले पदार्थ हैं येभी सब नाशवान्‌हैं फिर बुद्ध कहतेहैं कि जैसे एक आदमीने स्वप्नमें भयानक सूरतोंको देखा है और जबतक उसका स्वप्न बना है तबतक वह उन भयानक सूरतोंसे डरता है जिस कालमें वह जाग उठताहै उसी कालमें स्वप्नकी भयानक सूरतें और उनसे डर सब जाता रहता है तैसे यह जीवभी अपने अज्ञान करके सोयाहुआ संकल्प विकल्पोंको करताही रहता है जब कि ज्ञानमें जाग उठता है तब इसके संकल्पोंकाभी नाश होजाता है तब यह मुक्तिको प्राप्त होताहै जब कि मंद अंधकारमें कहीं पडा रस्सीका टुकडा पुरुषको दिखाता है तब पुरुष उसको सांप जानकर उससे भागता है और कांपने लगता है । जब कि फिर वह दियेसे तिसको देखता है तब उसका भ्रम दूर होजाता है क्योंकि उसको निश्चय होजाता है कि यह सांप नहीं था रस्सी थी तब तिसका भय भी दूर हो जाता है और तिस्को सुख मिलता है तिसके भयका कारण तिस्का अज्ञानहै, तिस अज्ञानके दूर होजानेसे तिसको फिर शांति प्राप्त होती है इसी तरह जिसका अज्ञान संसारके विषयमें और धर्मोके विषयमें दूर होजाता है वही शान्ति-पदको प्राप्त होता है । जिसका चित्त शान्तिको प्राप्त हुवा है वही सुखी है । संसारमें सब बुराइयोंसे बचानेवाली सचाई है जिसने सत्यको आश्रयण किया है वह कदापि दुःखी नहीं होता है सब पापोंसे वह छूट जाता है क्योंकि जितने पाप होते हैं वह सब असत्यसे ही होते हैं सत्यके बिना और कोई भी इस जीवको संसारसे छुडानेवाला नहीं है । इस लिये सत्यकोही परम धर्म जानना

उचित है। असत्यही पुरुषको आपदामें डालता है इसलिये असत्यका त्याग करनाही जीवोंको उचित है।

बुद्धके सच्चे उपदेशोंको सुनकर उन पांचों शिष्योंके चित्तोंमें फिरसे बुद्धके ऊपर श्रद्धा जाग उठी और बुद्धको उन्होंने सत्य गुरू करके माना। थोडेसे दिनोंके व्यतीत होनेपर फिर बरसातका समय आपहुंचा चातुर्मासमें बुद्ध उसी स्थानमें रहगये जो लोग कि बुद्धके पास वहांपर आते उनको बुद्ध बडे प्रेमके साथ सच्चे धर्मोंका उपदेश करतेथे और वे लोग बुद्धके सच्चे धर्मोंको सुनकर बुद्धको बडी भक्तिसे अपना गुरु मानने लगे।

इति श्रीमदुदासीनवर्यस्वामिहंसदासशिष्यपरमानन्दाख्यविरचित
बुद्धजीवनचरित्रनामक ग्रंथे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

बनारस याने काशीपुरीमें शेष नाम करके एक धनी नई अवस्थावाला रहता था और रात्रि दिन वह विषय भोगोंमें ही लिप्त रहता था और विषय भोगोंको मुक्तिका सुख जानता था और उन्हीं भोगोंमें जीनेको भी सफल जानता था उसके संन्यासी होजानेका किसीको भी ख्याल न था। परंतु प्रारब्ध कर्मकी विचित्रता कुछभी नहीं कही जातीहै, एकदिन वह विषय भोगोंको भोगता हुआ मूर्च्छाको प्राप्त होगया जब कि वह होशमें आया तब उसदिन उसके शरीरमें बडी जलन पैदा हुई और तिसके चित्तमें बडा दुःख हुआ वह उसी समय अपने घरसे निकलकर उस स्थानमें पहुंच गया जहां कि बुद्धदेव बैठे थे आर बुद्धके समीप बैठकर कहने लगा कि इस संसारमें बडा दुःख है जिसका पार नहीं है. बुद्धने कहा हमारे पास न तो दुःख है और न कोई कष्ट है आवो हम तुमको सच्चे धर्मोंका उपदेश करैंगे और उन्हींके धारण करनेसे तुम्हारे सब दुःख कट जायँगे बुद्धके वचनको सुनकर तिसके दिलकी तसल्ली होगई कि अब जरूर हमारे दुःख कट जायँगे बुद्धने उसको मुक्तिके साधन जोकि सच्चे धर्म पीछे कहे हैं उनका उपदेश किया शेषके भी दिलमें बुद्धके उपदेशने असर किया और ज्ञानरूपी आंखें तिसकी खुल गईं फिर उसने जब कि अपने वस्त्रों औ भूषणोंकी तरफ देखा तब वह अपने मनमें लज्जित हुआ तब बुद्ध तिसके मनकी वार्ताको जानकर कहने लगे—जिसके मनमें सच्चा ज्ञान उत्पन्न हुआ है वह

अगर बाहरके भूषणोंको पहरे है तबभी वह शोभाको ही पाता है और जिसका मन भीतरसे विषय वासनामें रागवाला है और ऊपरसे वैराग्यके चिन्होंको भी धारण किये रहै तबभी वह शोभाको नहीं पाता है । क्योंकि उसका दाम्भिक व्यवहार है उसको कदापि सुख नहीं होताहै अब शेष बुद्धकी वार्ताको सुनकर सब भूषणों और वस्त्रोंको उतारकर संन्यासीका भेष बनाकर बुद्धके पास बैठ गया वहांपर शेषके चार मित्रोंने जाकरके जब शेषको संन्यासीका भेष बनाया हुआ देखा तब उनके मनमेंभी विचार उठा कि शेषने एक महात्मा संन्यासीके उपदेशसे सब कुछ त्याग करके संन्यासको धारण कर लिया है तब यह त्यागभी एक बडाभारी धर्म है । ऐसा विचार करके वह चारों उस शेषके पास गये और कहा हमकोभी इन महात्मासे कहकर उपदेश दिलवाइये शेषने बुद्धसे कहा बुद्ध देवने उनकोभी उपदेश देकर अपना चेला बनाया । इधर शेषके पिता माता और घरके लोगोंनेभी बुद्धका उपदेश लिया परंतु वह अपने गृहस्थाश्रममेंही रह कर बुद्धके धर्मोंका पालन करने लगे और उसी आश्रममें बनारसके समीप बहुतसे लोग आकर बुद्धके उपदेशको सुननेलने और बुद्धके मतमें आने लगे उसी जगहमें बैठे २ कई हजार आदमियोंको बुद्धने उपदेश देकर अपने मतमें कर लिया और प्रतिदिन हजारोंही आदमी आकर बुद्धके उपदेशको सुनने और स्वीकार करनेलगे । और अपने पुराने धर्मोंको छोडते जातेथे क्योंकि उनमें उनको पाखंड प्रतीत होने लग जाता था ।

एक दिन बुद्ध भगवान् उसी आश्रममें बैठे हुए थे उनके पास आजीविक नामक ब्राह्मण जो कि एक गयाके समीप मिलाथा आकर बैठ गया इसका पिछला हाल इसतरह है—कि एक शिकारी इसको तपस्वी जानकर इसके लिये खाने पीनेका बंदोबस्त करता था । एकदिन वह शिकारी कहीं दूर देशको चला गया तब तिसकी लडकी आजीविकके लिये भोजन लेकर आई सोरह बरसकी उसकी अवस्थाथी जब कि वह आजीविककी झोपडीके पास गई तब उस युवा अवस्थावाली लडकीको देख कर उस आजीविक ब्राह्मणने ऐसा नियम कर लिया कि या तो इस लडकीके साथ मैं अपना विवाह करूंगा नहीं तो खाना पीना छोडकर प्राणोंका त्याग कर देऊंगा । इधर तिस कन्याका पिता घरमें नहीं था इसलिये विवाह कैसे

हो और उधर उसने खाना पीना छोड दिया जब कि वह शिकारी घरपर आया तब उसको यह हाल मालूम हुआ तब उसने अपनी कन्याकी शादी आजीविकके साथ करदी अब आजीबिक बडे आनंदके साथ तिस कन्याको पाकरके रहने लगा कुछ कालके पीछे तिस कन्यासे एक लडका उत्पन्न हुआ इससे आजीविकको बडी खुशी हुई आजीविकमें सुस्ती बहुत थी और सफाई नहीं रखताथा दरिद्र बना रहता था इसीसे तिसकी स्त्री उससे बहुत नाराज रहती थी और तिसको नित्यही ताडती फाडती रहती थी इस प्रकार यह स्त्री जब कि नित्यही निरादर करने लगी तब आजीविकके मनमें स्त्रीसे वैराग्य उत्पन्न हुआ और संसारसे उदास होकर सांसारिक दुःखोंसे छूटनेके लिये बुद्धकी शणरमें प्राप्त हुआ और बुद्धने उस (संन्यासी) को सच्चे धर्मोंका उपदेश करके अपना शिष्य बनालिया उसी जगह बरसातके चार महीनोंमें बुद्धके संन्यासी चेले साठ बनगये और गृहस्थी चेले तो बनारसके देशमें लाखों बन गये जिन्होंने बुद्धके सिद्धान्तोंको मानकर बुद्धका मत स्वीकार करलिया जब बरसातके दिन व्यतीत होगये तब बुद्धने मनमें विचार किया कि अब और देशोंकी भी भलाई करनी चाहिये और उनको भी सच्चे धर्मोंका उपदेश करके उनकेभी दुःखोंको काटना चाहिये ऐसा विचार करके फिर बुद्धने अपने चतुर शिष्योंसे कहा कि तुम चारों दिशाओंमें जाकर अपने इस मतका प्रचार करो और सच्चे धर्मोंका उपदेश करके लोगोंको सांसारिक दुःखोंसे छुडावो बडे प्रेमके साथ लोगोंको उपदेश करो और जो अतिमूर्ख हैं वह तुमको यदि गालियें भी दें तबभी तुम उनसे प्रेमके साथ बोलो और उनके कटुवचनोंको भी सहन करके दयादृष्टिसे उनकोभी तुम सच्चे धर्मोंका उपदेश करके उनके दुःखोंको दूर करो अभी तुम चले जाओ देर मत करो बुद्धकी आज्ञाको पाकर वह शिष्य चारों दिशाओंमें फैल गये और बुद्ध स्वयं पूर्वकी तरफको पधारे प्रथम सीनानी ग्राममें गये उधर बुद्धके शिष्य लोगोंने पहलेही जाकरके ग्राम २ और नगर २ में धर्मका संग्राम मचादिया था और लाखों आदमियोंको उन्होंने सच्चे धर्मोंका उपदेश करके अपने मतमें करलिया सच्चे धर्मोंका इतना बल है कि अकेले एक २ शिष्यने एक २ नगरमें जाकर हजारों लाखों बनावटके धर्मवालोंको पराजय करके उनको अपने मतमें कर लिया इधर बुद्ध चलते २ कापाशिया जंगलमें पहुंचे और वहां तीस बदचलनवाले अमीरोंके लडकोंको धर्मका

उपदेश करके अपना शिष्य बनाया अर्थात् उनको संन्यासी बनाकर संसारके दुःखोंसे उनको छुडादिया और उनको भी उपदेश किया कि तुम देश देश और नगर २ में जाकर लोगोंको धर्मका उपदेश करो वहभी भिक्षुकके भेषको धारण करके देश देशांतरमें लोगोंको धर्मका उपदेश करने लगे उसी जंगलके देशमें एक कश्यप नाम करके पंडित और दो तिसके भाई रहते थे, वह तीनों बडे पंडित थे और अग्निके उपासक थे याने अग्निको ही ईश्वररूप करके मानतेथे और इनके भी बहुतसे शिष्य थे जिनको कि वह पढातेथे उनके साथ बुद्धकी मित्रता होगई बुद्धका वह बडा सत्कार करते थे बुद्धके उपदेशोंको सुनकर उनकी बुद्धपर बडी श्रद्धा होगई उन्होंने भी अपने पुराने धर्मको छोडकर बुद्धके धर्मको स्वीकार कर लिया कश्यपके दोनों भाइयोंने और उनके सब विद्यार्थियोंने भी बुद्ध धर्मको स्वीकार कर लिया कश्यप अपने देशमें बहुतही प्रसिद्ध पंडित था उसने अपने सारे देशमें बुद्ध मतका प्रचार कर डाला वहांसे बुद्ध गयाके जिलेमें गये और गयाके समीप एक पर्वत पर बुद्ध एक दिन बैठे हुये थे कि इतनेमें एक पहाडपर आग लग उठी बुद्धने आगकी तरफ देखकर कहा पुरुष जबतक आत्माके अज्ञानमें पडा है तब तक काम क्रोधादिरूप अग्निमें इस जंगलकी तरह जलता रहता है और तृष्णा भोगोंकी दिन प्रतिदिन बढती रहती है और रात्रि दिन चिंता इसको सताती रहती है और अनेक प्रकारके रोगादिक और बुढापा तथा मृत्युभी इसकी तरफ देखकर हँसती रहती है । जबतक इसको आत्मिक ज्ञान उत्पन्न नहीं होता तबतक यह दुःखी रहता है । इस प्रकार अनेक युक्तियोंसे बुद्धने धर्मका उपदेश लोगोंको किया फिर वहांसे अपने शिष्यों सहित राजगृहकी तरफ रवाना हुए गंगाके किनारेसे पचास कोस दक्षिणकी तरफ और इतनाही पूर्व पश्चिम तक सब मगध देश कहाता है । बुद्धके आनेकी खबरको सुनकर वहांका राजा बुद्धके पास आया और बुद्धकी उसने बडी प्रतिष्ठा की वहांके बूढे बालक और स्त्रियें भी सब बुद्धके दर्शनको आये उस स्थानमें आदमियोंकी बडी भारी भीड होगई और सब रास्ता बंद होगये इतनी भीड होगई कि बहुत दूरतक आदमियोंके शिर ही शिर दिखाई पडने लगे तब बुद्धने काश्यपसे प्रश्न किया कि हे काश्यप ! तुमने अग्निकी उपासनाको क्यों छोड दिया है ? काश्यपने कहा महाराज संसारमें बहुतसे लोग तो ऐसे हैं कि जो शब्द स्पर्शरूप,रस, गंध इन पांचों विषयोंमें ही इन्द्रियों

द्वारा कालको व्यतीत करते हैं अर्थात् विषयानंदको ही भोगते हैं । और कुछ लोग ऐसे है जो कि धातुवोंके देवतोंकी मूर्तियोंको बनाकर उनके आगे बकरोंको मार २ करके खाते हैं और कुछ लोग ऐसे हैं जोकि चेतनको छोडकर जडोंके आगे ही शिरको पटकते रहते है अर्थात् अग्नि वायु आदि भूतोंकीही उपासनाको करते है या भूतोंके कार्य जोकि स्थूल रूपवाले बने हैं उनकी उपासनाको करते हैं और कोई आंडबर करके लोगोंसे धन वंचन करते हैं, जब कि हमको मालूम हुआ कि यह सब उपासना ठीक नहीं है तब हमने इनकी उपासनाको छोड दिया क्योंकि जो पुरुष कामनाका दास बना है वही इस प्रकारकी उपासना करता है कामनाका और संसारी लोगोंका दास रहताहै और वही देवताओंके आगे जीवोंकी हिंसा करके पापका बोझ अपने शिरपर लेता है और बार २ जन्म मरणको प्राप्त होता है कभीभी शान्तिको प्राप्त नहीं होता है फिर जो अग्निकी उपासना करताहै तो अग्नि उसको क्या नहीं जलाती है किंतु अवश्यही जलादेतीहै जो उपासना नहीं करता है उसको भी जला देती है क्योंकि वह जड है जड पदार्थको अपने और दूसरेकी पहचान नहीं होती है इसी तरह जल भी जड है उसकोभी अपने और दूसरेकी पहचान नहीं है तब ये अपने उपासकको फल क्या देसक्ते हैं फल तो चेतनही देसक्ता है इसलिये मैंने अग्निकी उपासना छोड दी है बुद्ध राजासे कहनेलगे कि हे राजन् ! पुरुषको यह वार्ता जरूर जाननी चाहिये कि मै क्या हूं और यह जगत क्या है ? और यह शरीर किसकी सत्तासे काम करता है और सच्चे धर्म कौन है और झूंठे धर्म कौन हैं ? हे राजन् ! मैं शब्द आत्माका वाचक है अर्थात् आत्माका बोध करता है वह आत्मा नित्य है न जन्मता है न मरता है जन्मना मरना शरीरका धर्म है, शरीर भूतोंका कार्य है और मिथ्या है । जगत् भी सब मायाका कार्य है और अनित्य है स्वप्नकी सृष्टिके तुल्य मिथ्या है और अग्नि आदिक जडोंकी उपासना सब झूंठे धर्म हैं सत्य भाषण और इन्द्रियोंका जीतना आदिक सब सच्चे धर्म हैं और बिना सच्चे धर्मोंके धारण करनेसे कदापि पुरुषका कल्याण नहीं होता है आत्माकी सत्तासे शरीर सब व्यवहार करता है जिस कालमें आत्मा शरीरको छोड देता है तिस कालमें शरीर जड मिट्टी होजाता है संपूर्ण लोग मोह ममतामें फँसे हैं इसीसे सब जीव जन्म मरण रूपी दुःखोंको उठाते हैं और मोहके वशमें प्राप्त होकर अनेक प्रकारके

दुःखोंको उठाते हैं। यह मोह और ममताही जीवोंको खराब कर रही है मोह रूपी निद्रामें सब जीव सो रहे हैं जो उस नींदसे जागा है वही शान्तिको प्राप्त होता है जो पुरुष जागा है वह स्वप्नमें देखी हुई भयानक वस्तुवोंसे नहीं डरता है वैसेही जो ज्ञानरूपी जाग्रतमें जाग पडा है वह फिर मोहको प्राप्त नहीं होता है। हे राजन् ! तुम मोहरूपी निद्रासे उठो और अपने आपको चीन्हों तथा सच्चे धर्मोंपर चलो तब तुम्हारा चित्त भी शान्तिको प्राप्र होगा जो सत्य वस्तुको जान लेता है वह संसारकी तृष्णाका और ममता आदिकोंका याग कर देता है और तिसका मन परम शान्तिको प्राप्त होजाता है हे राजन्! संसारी लोग सब स्वार्थमें फँसे हुए है इसीसे दुःख पाते हैं जिसने स्वार्थ खुद गरजीको छोड दिया है वह सुखी होगया है । परोपकार करनाही एक परम धर्म है। जैसे माता आप दुःख उठाकर अपने बच्चेको सुख देती है तैसे जिसने सच्चा रास्ता जानलिया उसको उचित है कि वह सब जीवोंकी भलाईके लिये अपने ऊपर दुःखको उठाकरके औरोंको सुख पहुँचावे और सच्चे धर्मोंमें लगावे और अपने मनसे सब तरहकी बुराइयोंको दूर करे और नेकियोंमें मनको लगावे, सच्चे धर्मोंसे मनको पवित्र करै, इस प्रकारके बुद्धके उपदेशोंको सुनकर राजा बडे प्रसन्न हुए और राजाने भी अपने पुराने धर्मको छोडकर बुद्धके धर्मको स्वीकार करालिया। अब मगध देशमें बडा शोर मचगया क्योंकि एक तो काश्यप बडा भारी पंडित बुद्धके मतमें होगया और दूसरा मगध देशका राजा भी उनके मतमें आगया। अब तो लाखों आदमी बुद्धके दर्शनको आने लगे दूसरे दिन बुद्ध नगरमें भिक्षाके लिये गये तब हजारों स्त्री पुरुष उनके पीछे हो लिये और कहने लगे कि कुछ दिन यहांपर रहकर हम लोगोंको कृतार्थ कीजिये अब तो नित्यही बुद्धके उपदेशको सुनकर लोग उनके मतको स्वीकार करने लगे। नगरके समीप एक वन था उसी वनमें चातुर्मास भर रहते और आठ महीने बाहर और २ देशोंमें जाकर लोगोंको धर्मका उपदेश करते कई एक बरस बुद्धको इसी तरह करते व्यतीत होगये। एक दिन बुद्ध नगरमें भिक्षा मांगनेके लिये गये तब रास्तेमें दो युवा अवस्थावाले ब्राह्मणोंके लडके खडे थे वे बुद्धकी शान्त मूर्तिको देखकर मोहित होगये और दोनोंने बुद्धके उपदेशको सुन कर संन्यास धारण करलिया। उनकी विशाल बुद्धिको देखकर बद्ध बडे प्रसन्न हुए

और उनको भी बुद्धने धर्म प्रचारके लिये आज्ञादी वह धर्मका प्रचार करने लगे । जिस कालमें बुद्ध राजगृहीमें प्रथम आये थे और अपने सच्चे धर्मोका उपदेश करने लगे थे तब बुद्धके धर्मोको नया जानकर बहुतसे ब्राह्मण और दूसरी २ जातिवाले भी बुद्धसे द्वेष करने लग गये थे । परन्तु जब कि बुद्धकी अमृतरूपी वाणीको सुना तब लोगोंके दिलमें बुद्धके उपदेशने बडा असर किया और धीरे २ लोग बुद्धके मतमें आने लगे और थोडेही दिनोंमें उस देशमें लाखों आदमी बुद्धके मतमें होगये क्योंकि बुद्धके पास एक सत्यही ऐसा हथियार था कि जिसके सामने किसी तरहका भी पाखंड नहीं ठहर सक्ता था उस सत्यरूपी हथियारको कोईभी तोडने वाला नहीं था उसी सत्यरूपी हथियारसे सबको मोहित करते चले जातेथे जब सब देशोंमें बुद्धके उपदेशोंकी चर्चा फैल गई तब राजा शुद्धोंको भी खबर मिली कि, सिद्धार्थ सिद्ध होगया है और हजारों आदमियोंको अपने वचनरूपी अमृतको पान कराकर जन्म मरण रूपी फाँसीसे छुडाता जाता है तब राजा शुद्धोंने अपने एक आदमीको बुद्धके लेनेके लिये राजगृहीकी तरफ भेजा और उससे कहा तुम जाकर बुद्धसे कहना कि तुम्हारे पिता वृद्ध होगये हैं, वह एक दफा तुम्हारे दर्शनको चाहते हैं आप चलकर उनको दर्शन दीजिये वह आदमी जब कि, बुद्धके पास पहुंचा तब बुद्धके उपदेशोंको सुनकर उसी दम वह बुद्धका शिष्य बन गया और संन्यास लेकर उसी जगहमें बुद्धके पास रह गया हठ करके राजा शुद्धोंको कुछभी जवाब उसने न दिया तब राजाने कुछ दिनके पीछे एक और आदमीको बुद्धके पास भेजा वहभी बुद्धके उपदेशोंको सुनकर उसी जगह बुद्धका शिष्य बनकर रह गया फिर राजाने एक और आदमी बुद्धके लिवानेके लिये भेजा वहभी बुद्धके उपदेशोंको सुनकर उसी जगहमें संन्यासी बनकर रहगया तब राजा वडे चिंतातुर हुए एक आदमी राजाका बहुत पुराना नौकर था उसको बुला कर राजाने कहा, मेरा जीवन अब समाप्त होनेवाला है मैं एक बार अपने लडकेके मुखको देखना चाहताहूं मैंने पारी २ से तीन आदमियोंको भेजा है मालूम नहीं कि क्या हुआ उनमेंसे एक भी लौटकरके नहीं आया और न कोई खबर उन्होंने भेजी अब तुम्हीं हमारे आखिरी सहारे हो, अब तुम मुझपर दया करके एकबार राजगृहीको जावो और मेरे लडकेसे कहो कि, आपके पिताने एक बार आपका मुख देखना चाहा है, जिसतरह

होसके उस तरहसे एकबार उनको यहांपर लावो राजाकी दुःखभरी बातोंको सुनकर वह आदमी भी राजगृहीकी तरफको चला और थोडेही दिनोंमें बुद्धके पास पहुंचगया बुद्धके नये जीवन और पवित्रताको देखकर और उनके धर्मोको सुनकर उसका मन भी मोहित होगया उसी तरह उसको भी बुद्धके पास पहुंचे दो महीने गुजर गये इतनेमें वसंतका मोसम आगया और बसंती हवाचलने लगी, सब पृथिवी जहां तहाँ फूलोंसे खुशबूदार, होगई, एक दिन उसने बुद्धसे कहा महाराज देशकी शैर करनेके लिये यही मोसम अच्छा है आप हमारे साथ बाहरकी शैर करनेको चलिये अब आपके पिताकाभी अंतका समय समीप पहुँच गया है आप चलकर एकबार उनको दर्शन दीजिये जिससे उनका मनभी शीतल हो बुद्धने उसका कहना मान लिया और अपने सब संन्यासी शिष्योंकी मंडली-को लेकर अपने देशकी तरफ रवाना हुए इस समय उन देशके सब राजाओंने बुद्धके मतको स्वीकारकर लियाथा. उपाली नामक नाऊभी उस धर्मको स्वीकार करके भिक्षुकोंकी मंडलीमें मिल गयाथा दो महीनोंमें बुद्ध अपने देशमें पहुँचे और नग-रके समीप एक जंगल था उसमें बुद्धकी मंडलीने डेरा लगाया बुद्धके आनेकी खबर सुनकर नगरके छोटेबडे बूढे बालक सब अपने२घरोंसे निकल २ कर उस जंगलकी तरफ रवाना हुए कोई तो हाथमें फूलोंकी माला लेकरके जाता था कोई मेवा मिठाईका दोना लेकर जाता था सब रास्तोंमें एक बडाभारी मेला जम गया और राजा शुद्धों तथा दूसरे उसके सम्बन्धी भी सब राजाके साथ मिलकर गये राजा शुद्धों उनके पास पहुँचे परन्तु बुद्धने राजाको न प्रणामही किया और न खडा होकर उनका स्वागत ही किया तब कोई२ राजाके सम्बन्धी इस बातपर नाराज हुए कि सिद्धार्थने उठकर राजाका सत्कार क्यों नहीं किया वह इस वार्ताको नहीं जानता था कि संन्यासीका यह धर्म नहीं है सब लोग संध्यातक वहांपर बैठे रहे संध्याके अनंतर अपने २ घरोंको चले आये और संन्यासी लोग उसी जंगलमें रह गये दूसरे दिन बुद्ध हाथमें भिक्षापात्र लेकर नगरकी तरफ जब चले तब अपने मनमें विचार करने लगे कि प्रथम राजभवनमें जाकर भिक्षा मांगनी चाहिये या और २ द्वारोंपर जाकर मांगनी चाहिये तब फिर ऐसा विचार किया कि प्रथम और २ द्वारोंपर जाकर भिक्षा मांगनी चाहिये तब उन्होंने नगरमें आकर द्वार २ पर भिक्षा मांगनी प्रारंभ की नगरनिवासी लोग बुद्धको भिक्षा मांगते देखकर बडे जोरसे रोने लगे

और स्त्रियें भी सब विलाप करने लगीं अब चारों तरफसे बडा भारी कोलाहल मचगया रोनेकी आवाजको सुनकर गोपाने अपनी खिडकीसे देखा कि हमारे स्वामी नंगे पांव शिर मुँडाये हुए हाथमें भिक्षापात्र लियेहुये नीचेको दृष्टि किये हुए द्वार २ पर भिक्षा मांग रहे हैं गोपा इस भेषमें पतिको देखकर बेहोश होगई पीछे जब होशमें आई तब रुदन करने लगी और अपने श्वशुरको उसने खबरकी राजा शुद्धों इस खबरके सुनतेही राजभवनसे बाहर निकलकर पुत्रको भीख मांगते देख कर रोने लगे और कहने लगे कि इस पेटके लिये तुम क्यों द्वार २ में भीख माँगते हो ? क्या संन्यासियोंकी मंडलीको मैं खानेको नहीं देसक्ताहूं ? हमारे कुलमें क्या आजतक किसीने भीख मांगी है ? भीख मांगना राजपुत्रोंका धर्म नहीं है, बुद्धने कहा कि प्राणी जबतक गृहस्थाश्रममें रहता है तब तक भिक्षा वृत्ति तिसका धर्म नहीं है। जब कि गृहस्थाश्रमको त्याग करके संन्यासाश्रमको ग्रहण करलेता है तब भिक्षा ही मांग करके खाना उसका धर्म है हे पिता ! जब किसीके पुत्रको जवाहिरातका छिपाहुवा खजाना मिलजाता है तब वह पुत्र तिस खजानेको पिताकी ही नजर करता है इतना कह, उसी रास्तेमें खडे होकर बुद्धने कहा—हे पिता ! अब आपको मोह ममताकी नींदसे जागना ही उचित है। क्योंकि बहुत कालसे आप इस नींदमें सोये हुए हैं। अब देर मत करिये, नये जीवनको हासिल करिये। जो आदमी सच्चे धर्मको हासिल करता है उसको इस लोक और परलोकमें सुख होता है. हे पिता ! अब आपको यही उचित है कि इस संसारमें मोहका त्याग करके अपनेको जानना चाहिये कि मुझको इस मनुष्य जन्ममें क्या करना चाहिये हे पिता ! यह स्त्री पुत्रादिक तो कूकर सूकर योनिमें भी मिल सक्ते हैं इनकी प्राप्तिका हर्षतो अज्ञानी मूर्ख लोग करते हैं, जो वस्तु कि मनुष्यही योनिमें मिल सक्ती है इतर पशु आदि योनियोंमें नहीं मिल सक्ती है, उसी वस्तुके प्राप्त करनेके लिये यह मनुष्य शरीर आपको मिला है कुछ विषय भोगोंके लिये यह शरीर नहीं है ? अब आप आत्मिक सुखकी प्राप्तिके लिये यत्न करैं राजाने बुद्धकी वार्ताका कुछभी जवाब न दिया और पुत्रके हाथसे भिक्षा पात्रको लेकर अपने साथ उसको राजभवनमें लेगये जब बुद्ध भीतर गये तब सब नौकरोंने और राजाके सम्बन्धियोंने बुद्धका वडा सत्कार किया, राजाके सब सम्बन्धी वहांपर आये परंतु गोपाको किसीने भी वहां पर न देखा गोपाने

अपने मनमें यह विचार किया कि अगर मुझमें कुछभी उनका प्रेम होगा तो वह आपही भीतर मेरे पास आवेंगे । तब मैं अपने दिलका सब हाल कहूँगी जब कि बुद्धने चारों तरफ नजर की और गोपाको वहां न देखा तब अपने सब शिष्योंको साथ लेकर भीतर गोपाके पास चले गये और रास्तेमें अपने शिष्योंसे कहदिया कि यदि कोई स्त्री मुझको आलिंगन करनेके लिये यत्न करे तो तुम उसको न रोकना बुद्धको आते देखकर गोपा वेचैन होकर रुदन करने लगी और बुद्धके चरणोंपर गिरपडी गोपाने आँसुओंकी धारासे बुद्धके चरण धोये बहुत कालके पीछे पतिके चरणोंको छूनेसे गोपाके दिलमें एक मोहका समुद्र उमड उठा और बहुत देर तक उन चरणोंको पकडी हुई गोपा जोर २ रोती रही गोपाने अपने मनमें यह विचार किया कि यदि मैं जन्मभर रोती रहूंगी तबभी मेरे पति फिर मेरे स्वामी नहीं बनेंगे ऐसा सोचकर रोती २ गोपा एक तरफको हटकर खडी होगई गोपाके हटजाने पर राजा शुद्धोंने अपने लडकेसे कहा कि जबसे तुम घरको छोड कर चले गये हो तबसे तुम्हारी स्त्री बडे कठिन ब्रह्मचर्य्यको धारण करके दिनोंको काट रही है बहुत ही कम खाती है और कम सोती है । पलंगपर कभी भी नहीं सोती है नहीं मालूम यह कैसे जीती है । बडे दुःखके साथ यह प्राणोंको धारण कर रही है । गोपाके दुःखको सुनकर बुद्ध अपने मनमें कहने लगे कि गोपा हमको बडी प्यारी थी, जो गोपा हमको अपने जीनेका साथी समझती थी वह गोपा अब अपार दुःखमें डूब रही है अब इसको धर्मका उपदेश करके सुखी करना चाहिये बुद्धने अपनी प्यारी गोपाको भी धर्मका उपदेश करके उसके दुःखको कुछ २ दूर किया और परिवार सहित राजाने भी बुद्धके मतको स्वीकार किया । राजाकी गोमती रानीसे भी एक लडका पैदा हुवा था उसका नाम नंद था उस नंदकी दूसरे दिन शादी थी और साथ ही राजगद्दी भी होनेवालीथी बुद्धने नंदसे जाकर मुलाकातकी और थोडासा उपदेशभी उसको किया बुद्धके उपदेशको सुनकर नंदका मन भी मोहित होगया और उसने मनमें कहा थोडेसे उपदेश सुननेसे तो मुझको इतना बडा सुख मिलाहै अगर मैं अधिक उपदेश सुनकर इस धर्ममें कोशिश करूंगा तो न मालूम मुझको और कितना बडा सुख मिलैगा ऐसा विचार करके नंदने विवाह करनेसे और राज्य करनेसे इनकार किया इस बातके फैलनेसे सब राजमहलमें हाहाकार होने लगा जिस

कन्याके मनमें यह खुशी थी कि आज मेरी शादी होगी और मैं रानी बनकर राज्यके अपार सुखको भोगोंगी उसकी सब खुशी जाती रही वह कन्या और राज्यके लोग अनेक प्रकारके विलाप करने लगे और नंदके चित्तको फेरनेके लिये बहुतसी कोशिस कीगई मगर उन्होंने कुछ काम न किया जिसने अनंत सुखको जान लियाहै क्या वह इस तुच्छ विषयजन्य सुखके लिये मोहित होसक्ता है? कदापि वह सांसारिक सुखके लिये मोहित नहीं होसक्ताहै । नंदने जाकर बुद्धसे संन्यासको धारण कर लिया फिर एक दिन बुद्ध राजमहलमें भोजन करनेके लिये गये तब गोपाने अपने लडकेसे कहा तुमभी जाकर अपने पितासे उपदेश लेवो उसने कहा मैं तो राजाको ही पिता जानताहूं और को तो मैं पिता जानताही नहीं हूं तो किसके पास जाऊं? गोपाने उंगलीके इशारेसे बुद्धको बताया कि, तुम्हारे पिता वह बैठे हैं तब उस बालकने बुद्धको प्रणाम करके कहा पिताजी ! मुझको भी वैराग्यका उपदेश कीजिये बुद्ध बोले नहीं। भोजन करके वे जंगलकी तरफ चलपडे पीछे २ बालकने भी चलदिया और बार २ कहने लगा कि, उपदेश दीजिये जब कि जंगलके समीप पहुंचे तब बुद्धने शिष्योंसे कहा इस बालकको उठा लीजिये उन्होंने उठा लिया, जंगलमें जाकर अपने आसन पर बैठकर उस बालकके वस्त्र भूषण उतार और मूडकर उसको भी संन्यासी बनाकर सच्चे धर्मोका उपदेश कर दिया ऐसे पिता संसारमें बहुत कम हैं जो कि, अपने पुत्रको भी संसार-बंधनसे छुडानेवाले हैं किंतु संसारबंधनमें फँसानेवाले ही पिता बहुत हैं यथार्थमें वह पिता नहीं कुपिता हैं । जब कि, बुद्धका लड़का रायलनामक भी भिक्षुकोंकी मंडलीमें भिक्षुक बनकर बैठ गया तब राजा शुद्धोंने इस खबरको सुनकर बडा ही दु:खीहुआ और जंगलमें जाकर बुद्धसे उसने कहा एक वरदान मुझको दीजिये, आजसे किसी बालकको संन्यासी न बनाइये । बुद्धने इस बातको मानलिया और कहा फिर ऐसा नहीं होगा । उसी दिनसे बुद्धके मतमें बालकको संन्यासी करना मना होगया । फिर जितने दिन बुद्ध वहां२ रहे अपने माता पिताको धर्मका उपदेश करते रहे उनके उपदेशोंसे राजा शुद्धोंका भी मन शान्तिको प्राप्त होगया और अपने कुलके लोगोंको भी धर्मका उपदेश करके उनके चित्तोंको भी बुद्धने शान्त करदिया । फिर जितने नगरके लोग थे उनको भी धर्मका उपदेश करके उनके चित्तोंको भी बुद्धने शान्त किया, सब

लोगोंने पुराने धर्मोंको छोडकर बुद्धके धर्मोंको स्वीकार करलिया और सब बुद्धके मतमें होगये ॥

कुछ कालके पीछे फिर बुद्ध वहांसे राजगृहीकी तरफ शिष्योंकी मंडलीके समेत रवाना हुये रास्तेमें प्राननामक नदीके किनारे पर एक ग्राम था यह वही जगह है जहां पर घरसे भागकर बुद्धने आकर प्रथम संन्यासको धारण कियाथा । अब यहांसे बुद्ध श्वशुरालके नगरमें गये और वहांके बहुतसे राजा और प्रजाको धर्मका उपदेश किया उन सबोंने भी बुद्धके मतको स्वीकार करलिया । फिर वहांसे जब राजगृहीकी तरफ चले तब रास्तेमें जो २ ग्राम और नगर आते गये उनमें भी सब पुरुषोंको धर्मका उपदेश करके बुद्ध अपने मतमें करते चले गये । फिर बुद्ध बेन वनमें पहुँचे । वहां बरसातका मोसम व्यतीत किया, इस वनके पास एक ग्राममें सौदतनामक एक महाजन बडा दौलतमंद रहता था उस महाजनका एक लडका था जो कि, गरीबों और अनाथोंकी बडी सेवा करता था वह एक दिन बुद्धके पास आया और उसने कहा कि, मेरे दिलके हालको सुनकर आप मुझे उपदेश कीजिये कि, मुझको अब क्या करना चाहिये उसने कहा मैं बहुतसे कामोंमें लगा रहताहूं और धनके उपार्जन करनेमें मेरा मन सदैव फिकरमंद रहता है परंतु मैं अपने कामके करनेसे नहीं चूकता हूं और मैं हिसाबके साथ खरच करता हूं मैंने आपकी स्तुति सुनी है कि, आप राज छोडकर संन्यासी हुए हैं लोगोंको दुःखसे छुडानेके लिये आप देशदेशांतरमें अटन करते हैं, अब आप मुझको जो करना हो उसका उपदेश करिये ! बुद्धने कहा–जो आदमी सच्चे रास्तेमें चलता है वह धर्मका जीवन हासिल करता है और जो आदमी दौलतमें ममताको बाँधकर जीवनको व्यतीत करता है वह पापका जीवन व्यतीत करता है और सदैव दुःखी रहता है । और जो आदमी दौलतको पाकर उसमें फसता नहीं है किंतु उसको ठीक २ उपकार पर खरच करताहै और सच्चे धर्मोंपर चलता है वह जरूर संसारबंधनसे छूट जाताहै. हे धनिक ! अपने जीनेमें जो तुमने उपकारको धर्म समझा है सो तुमने बहुतही उत्तम काम कियाहै तुम अपने घरमें ही रह कर इस उपकारके कामको और सब जीवों पर दयादृष्टि हमेशा ही रक्खा करो और सच्च बोला करो कभी भी झूँठ न बोला करो तुम्हारा इसीमें कल्याण हो जायगा । मनुष्य

कमलके फूलकी तरह निर्लेप होकर घरमें भी रहकर दोषका भागी नहीं होताहै। बुद्धके उपदेशको सुनकर फिर उसने कहा–मेरी इच्छा है कि इस अपनी बस्तीमें एक धर्मका स्थान बनादूँ कि, जिसमें भिक्षुकलोग रहा करैं और मुक्तिके साधनोंको किया करैं और दूसरोंसे भी कराया करैं मेरी इस प्रार्थनाको आप स्वीकार करैं बुद्धने उसकी प्रार्थनाको स्वीकार करलिया और कहा-दानी होकर श्रद्धासे अभिमान-रहित होकर जो दानको करता है उसको अनंत फल होता है और इस लोकमें भी उसका यश होताहै सब लोग उसका आदर करते हैं, बुद्धके उपदेशोंको सुनकर उसका मन भी शान्त हुआ और उसने अपने नगरमें एक बडा भारी स्थान भिक्षुकोंके लिये बनवाया और तिसके गिरदे बाग लगवा दिया और बीचमें कूवां भी बनवा दिया और खाने पीनेके लिये भी सब प्रकारका सामान जमा कर दिया, इस स्थानका नाम जीतबन रक्खा गया, कुछ रोज वहां रहकर फिर वहांसे राजगृहीमें गये वहां तीन बरस तक बराबर रहकर फिर वहांसे भी बुद्धदेव अपने शिष्योंसहित चल दिया रास्तामें शाली नगरमें कुछ दिन रहकर फिर डोसती नगरकी तरफ चलदिये, एक दिन रास्तेमें बुद्धके शिष्योंने आगे बढकर एक मकानमें डेरा लगाया और अच्छी जगह सब रोक ली, पीछे जो वृद्ध संन्यासी थे उनके लिये आरामकी जगह न रही उन्होंने वृक्षोंके नीचे बैठकर रात्रि व्यतीत की, सबेरे जब बुद्धने उनको तक-लीफमें देखा तब मनमें कहने लगे कि हमारे जीतेही ये लोग आपसमें रागद्वेष करतेहैं तब हमारे पीछे न मालूम यह क्या करैंगे। उनको बुलाकर समझाया बुझाया और उनसे पूछा-सबसे अधिक प्रतिष्ठा करनेके लायक कौन है? तब किसीने तो कहा कि, जो राज्यको त्याग कर संन्यासी हुआ है वही अधिक प्रतिष्ठाके लायकहै और किसीने कहा कि, जो संन्यास धर्मके कायदेको अच्छी तरहसे जनता हो वही प्रतिष्ठा-योग्य है और किसीने कहा कि, जिसने निर्वाणपदवी हासिल की हो वही अधिक प्रतिष्ठाके योग्य है. बुद्धने कहा-जिसने संन्यासके धर्मोंपर पूरा अमल कियाहो और आयुमेंभी वृद्ध हो वही सबसे अधिक सन्मान करनेके योग्य है। बुद्धके आनेकी खबरको सुन वही महाजन कि, जिसने भिक्षुकोंके लिये स्थान बनायाथा उसने बुद्धको नगरमें लेजानेके लिये बडी तैयारी की, सब रास्तोंमें फूलोंका फरश बिछा दिया और अनेक प्रकारकी सुगंधियोंको जलाया नौ महीना तक बडाभारी उत्सव रहा उस वनको उसने बुद्धके प्रति दान कर दिया, वहां पर रहकर बुद्धने अपने मतके

सूत्र बनाये वह सूत्र उनके लडकेके नामसे याने रायलसूत्र करके प्रसिद्ध हुए, चार बरस तक बुद्ध वहां रहे वहां उन्होंने बहुतसे लोगोंको धर्मका उपदेश करके कृतार्थ किया । वहांके राजाका नाम परसन था, उसको जब बुद्धके आनेकी खबर मिली तब राजा भी पालकीमें सवार होकर जीतवन बाहर जो कि, भिक्षुकोंका स्थान था वहां गये और बुद्धको दण्डवत करके कहा–मैं धन्य हूं और मेरा यह राज्य भी धन्य है जिसमें कि, आपके चरण आयेहैं और जबसे आप हमारे देशमें आयेहैं तबसे हमारी प्रजाको किसी तरहकी भी आपत्ति नहीं आई वल्कि सब प्रकारसे मेरी प्रजा सुखी है और आपके अमृतरूपी वचनोंको सुनकर सब कोई कृतार्थ होतेहैं, अब आप मुझको अपने अमृतरूपी वचनोंको पान कराइये. बुद्धने कहा--जो लोग अपने जन्मान्तरके कुकर्मोंसे नीच जातिमें उत्पन्न हुए हैं या दरिद्र दुःखियोंके घरोंमें पैदा हुए हैं और अधर्मके फलसे दुःखी रहतेहैं जब कि, वह किसी धर्मात्मा पुरुषको देखतेहैं तब उनके मनमें भी धर्मपर श्रद्धा खडी होजातीहै हे राजन् ! अब मैं संक्षेपसे धर्मका उपदेश करताहूं तुम मन लगा कर सुनो, हम लोगोंके जन्मान्तरके किये हुए कर्म शुभ और अशुभ दोनों छायाकी तरह हमारे पीछे चलते हैं हे राजन् ! प्रथम इसलिये सबसे अधिक प्रेम करनेकी जरूरत है सबसे प्रेम करनेसे पुरुषको बडाभारी सुख मिलता है इसलिये तुम सबसे प्रेम किया करो और अपनी प्रजाको अपने लडकेकी बराबर पाला करो, किसी परभी जुल्म न करो और सदैव न्याय करनेकी कोशिश किया करो कभी अन्यायकी तरफ चित्त न जाने दिया करो विद्वानोंकी और धार्मिक संन्यासियोंकी प्रतिष्ठा किया करो सदैव परोपकार करो सत्य पर चलो असत्यवादीको दण्ड दिया करो अपनी तारीफको पसंद मत करो न्याययुक्त कामको पसंद करो और नित्यही दो एक घंटा आत्माके ध्यानमें मनको लगाया करो शरीरको बेफायदा दुःख मत दिया करो और हमेशा सच्चे धर्मका विचार किया करो जहांतक बने भोगोंकी तृष्णाको कम करो । बुरे काम जो कि, मांस और मद्य पानादिक हैं इनका त्याग करदो । अपने मनको बुराइयोंकी तरफसे हटाकर भलाइयोंमें लगावो जैसे जिस वृक्षकी जडमें और शाखामें आग लगीहै उस वृक्षपर पक्षी बास नहीं करते हैं तैसेही जिस पुरुषका मन संसारके भोगोंकी इच्छारूपी आगसे जल रहाहै उसके

चित्तमें शान्ति कदापि नहीं होती है बिना चित्तकी शान्तिके पुरुषको कदापि नित्य सुखकी प्राप्ति नहीं होती है । हे राजन्! तुम प्रथम चित्तकी शान्तिका उपाय करो । बुद्धके उपदेशोंको सुनकर राजाने उनको अपने दिलमें धारण किया और वह भी बुद्धके मतमें आगये और उन्होंने बुद्धके मतके प्रचारके लिये बडाभारी यत्न करना प्रारंभ करदिया ॥

एक दिन बहुतसे लोग नगरके एक मकानमें बुद्धकी स्तुति कर रहेथे वहांपर एक चीफनर मतका आदमीभी बैठा हुआ था उसने अपने मनमें कहा कि हमभी बुद्धसे जाकरके मिलें तब वह अपने मतके गुरुके पास गया और उनसे बुद्धके पास जानेकी आज्ञा मांगी उन्होंने कहा—बुद्धके पास तुम मत जावो क्योंकि बुद्ध कर्मोंके फलको नहीं मानताहै फिर दो चार दिनके पीछे उसने आज्ञा मांगी तब भी ऐसाही कहा फिर मागी तबभी उसने जानेको मनाही किया तब वह बिना आज्ञाकेही बुद्धके पास चला गया और दण्डवत प्रणाम करके बैठगया, फिर उसने बुद्धसे पूछा भगवन् मैंने सुना है कि आप कर्मोंके फलको नहीं मानते हैं इस तरहसे जब उसने कहा तब बुद्धने कहा जैसे कि हम मानते हैं सो तुमको सब सुनातेहैं—बुरे कामोंका चिन्तन न करना, कदाचित् बुरे ख्याल मनमें आनेलगें तो यत्नसे उनको रोकना सदा अच्छे २ कामोंको करना इत्यादि हैं हे सिंह! अपने मनको अपने काबूमें करो, जिसने अपने मनको जीत लिया है उसने सब दुनियाको जीत लियाहै बाहरके शत्रुओंको जीतनेसे पुरुष शत्रुजित् नहीं कहाता है जिसने काम क्रोधादि शत्रुओंको जीता है वही शत्रुजित् कहा जाताहै। हे सिंह! सब जीवोंपर दया करनाही परमधर्म है और सच्चे धर्मोंको धारण करनाही मुक्तिका साधन है बुद्धके उपदेशको सुनकर वहभी बुद्धका शिष्य बनगया फिर यहांसे राजगृहीमें बुद्ध चले गये और वहां सात बरस तक बुद्ध बराबरही रह गये वहां एक आदमी नटबाजीका काम किया करताथा उसको संन्यासी बनाकर बुद्धने ऐसा उपदेश किया कि, तुम मनकी वासनाओंका त्याग करके संसारमें सुखपूर्वक विचरो । बुद्धकी वाणीमें एक ऐसी विलक्षण शक्ति थी कि जिसको सुनकर लोग आपसे आप बुद्धके मतमें हो जातेथे। एक दिन पूर्न नाम करके एक पंडित बुद्धके साथ शास्त्रार्थ करनेको आया और शास्त्रार्थमें हारगया तब वह शर्मके मारे नदीमें डूबकर मर गया ॥

एक दिन आनंद संन्यासीके मनमें फिरसे अपनी स्त्रीमें राग उठा और घर पर जाकर उसको ग्रहण करनेकी इच्छा करने लगा बुद्धने उसके अभिप्रायको जानकर एक दृष्टांतसे उसको समझादिया। दृष्टान्त–कलक नामवाला एक सौदागर था उसने एक गदहा रक्खा था और उस गदहेपर मालको लादकर जहां तहां जाकर वह बेचता था मगर गदहेको बहुत आरामसे रखता था और उत्तम २ पदार्थ उसको खिलाता था, एक दिन वह रास्तेमें चला जाता था कि, गदहेने एक गदहीको देखा, गदहीको देखते ही गदहा कामातुर होकर उसी जगह खडा होगया कितना ही सौदागरने उसको लाठियोंसे मारा पीटा परंतु गदहा एक कदम भी आगे को न बढा तब सौदागरने गदहेसे कहा–मैं घरपर चलकर तुम्हारे आरामके लिये गदहीको बुला देऊंगा तुम घर पर चलो गदहा घरकी तरफ चल पडा, घरमें जाकर सौदागरने कहा–मैं अपने करारको पूरा करूंगा. मगर उसमें एक शर्त है कि जितना खाना मैं अब तुमको देताहूं इतनाही फिर भी देऊंगा तुम्हारी गदही और उसके बच्चोंसे मेरा वास्ता नहीं है। गदहेने विचार किया कि उतने खानेमें तो मेरा काम नहीं होगा तब फिर मुझको दुःखही उठाना पडैगा इससे तो मैं गदहीके विनाही अच्छा हूं अपने आराममें तो रहता हूं. गदहेने गदहीके संकल्पको छोड दिया आनंदने भी इस कथाको सुनकर अपने संकल्पको छोड दिया। बुद्धने जब कि अपने कुलके सब राज कुमारोंको संन्यासी बना लिया तब फिर राजकुलकी सब स्त्रियाँ बाकी रहगई और वे बिना पतियोंके बडी दुःखी हुई तब बुद्धने अपने देशमें जाकर उन सब स्त्रियोंको भी संन्यासिनी बनादिया, और गोपाको भी संन्यासिनी बनाकर उन स्त्रियोंकी महंतिनी बना दिया उसने उन सबोंके चित्तोंको शान्त किया नंदकी स्त्री भी संन्यासिनी बनकर स्त्रियोंकी मंडलीमें मिलगई और स्त्रियोंकी मंडलीकी ऐसी मर्यादा बांधदी कि, उनके बीचमें कोई भी सन्यासी पुरुष रहने न पावै और ब्रह्मचर्य्यके धर्मोंकी वह पालना करैं और आत्मिक विचार तथा ध्यानको करनाही उनके लिये कायदा बना दिया ॥

बरसातके दिन गुजारनेके लिये फिर बुद्ध उसी जीतवनमें चले आये वहां बुद्धके खिलाफ मतवाले बुद्धसे दुशमनी करने लगे क्योंकि बुद्धके सामने पाखंडियोंकी टिकी उखडती जातीथी और पुराने मतोंके पाखंडोंके पोलोंको दिखलाकर

बुद्ध सच्चे धर्मोका उपदेश करके लोगोंको सच्चे मार्गमें लाते जातेथे जब उन पाखं-डियोंका कुछभी बश न चला तब बुद्धके शुद्ध चारित्रोंपर उन्होंने दोष लगाना शुरू किया पाखंडियोंने एक स्त्रीको कुछ लालच देकर सिखा पढादिया वह स्त्री सुंदर भूषणों और वस्त्रोंको पहन कर जब कि लोग बाहरसे धर्मकथाको सुन कर नगरकी तरफ आते तब नगरसे बाहरकी तरफ जातीहुई उनको रास्तेमें मिलती जब फिर सबेरे लोग धर्मकथाके सुननेको बाहर बुद्धके पास जाते तब वह बिखरे हालोंसे बाहरसे आती हुई लोगोंको रास्तेमें मिलती जब कोई उससे आने जानेके बारेमें पूछता तब कह देती कि, तुमको इससे क्या मतलब है । उस स्त्रीने इस ढंगसे लोगोंके दिलोंमें बुद्धकी तरफसे शक पैदा कर दिया फिर एक दिन उस स्त्रीने लोगोंसे कहा दिया कि बुद्धसे मेरेको गर्भ रह गया है और इस बातके साबित करनेके लिये उस स्त्रीने अपने पेटपर एक छोटासा रूईका गद्दा बना कर बांध लिया और ऊपरसे कुरता पहन लिया अब उसको पेट बडा भारी मालूम होने लगा और वह लोगोंको दिखलाने लगी दैवयोगसे बंधन ढीला होगया तब वह रुईका गद्दा नीचे गिरपडा और उसका पाखंड जाहिर होगया लोगोंने उसको बहुतसा मलामत किया फिर एक और दूसरी स्त्रीको पाखंडियोंने लोभ दिया वह लोगोंमें जहां तहां बुद्धकी निंदा करती फिरै और लोगोंसे कहै कि, बुद्धका चालचलन अच्छा नहीं है उस स्त्रीको कि-सीने एक दिन मार डाला तब पाखंडियोंने उडा दिया कि, बुद्धनेही इसको मरवा दिया है क्योंकि बुद्धके चालचलनकी यह निंदा करती थी अपने कलंकके हटानेके लिये बुद्धने ऐसा काम किया है जिस आदमीने उनको माराथा वह एक दिन शराबके नशेकी बेहोशीमें लोगोंसे कहने लगा कि, बुद्धको कलंक लगानेके लिये यह काम हमने किया है तब बुद्धकी तरफसे लोगोंको जो शक पैदा हुआ था वह जाता रहा, बुद्ध तब बडे जोरशोरसे धर्मका प्रचार करने लगे पाखंडी लोग हमेशह अपनी लालचसे धर्मात्मासे द्वेष करते चले आये हैं क्या कभी सत्य धर्मके आये असत्य ठहर सक्ता है कदापि नहीं । बुद्धके संन्यासियोंमें एक दिन झगडा होगया । वह आपसमें फट कर दो हिस्से होगये अर्थात् संन्यासियोंकी दो मंडली बन गई, बुद्धने उन को बहुत समझाया परंतु वह न समझे तब बुद्धने वहांसे चल दिया दूसरी जग-

हमें आकर बुद्ध रहने लगे पीछे बुद्धके भक्तोंने उनके चेलोंका आदर सम्मान करना छोड दिया तब वह अपनी भूलको माफकरानेके लिये बुद्धके पास गये, बुद्ध उनको एक कथा सुनाकर समझाने लगे—पूर्वकालमें ब्रह्मदत्त नाम करके एक बडा बली काशीका राजा था, उसने कौशलके राजा पर फौज लेकर चढाई की, कौशलका राजा अपनेको दुर्बल जानकर अपनी स्त्रीको लेकर राज छोडकर भाग गया काशीके राजाने उसके राजको दखल कर लिया, कुछ दिनोंके पीछे कोश-लका राजा भेष बदल कर रानीके साथ काशीमें एक कुम्हारके घरमें आकर रहने लगा और अपनी आयुके दिनोंको आरामसे व्यतीत करने लगा वहांपर एक लडका उसके घरमें उत्पन्न हुआ उसका नाम उसने दीर्घायु रक्खा और उसको सिखाने पढाने लगा जब वह कुछ बडा होगया तब राजाने विचार करके अपने लडकेसे कहा—तुम जाकर कहीं दूसरी जगह रहो और किसीसे कुछ गुण सीखो अपने हाल किसीसे जाहिर मत करना हम इस वास्ते तुमको अलग करते हैं कि, काशीके राजाको कभी खबर होगई तो वह हमसे बहुतही बुराई करैगा। लडका बापकी आज्ञा मानकर किसी गाने बजाने वालेके पास जाकर नौकर रहा और उससे गाना बजाना सीखने लगा थोडेही दिनोंमें वह उस विद्यामें निपुण होगया, इधर एक दिन कोशल देशका नाऊ वहां आया उसने कुंभारके घरमें राजाको देखकर पहचान लिया और जाकरके काशीके राजासे कह दिया कि, तुम्हारा दुश्मन एक कुम्भारके घरमें छिपा है, काशीके राजाने अपने नौकरोंको हुक्म दिया कि, उस राजाको रानीके सलेत पकडकर फाँसी दे देवो । राजा और उसकी रानीको पकड कर जब ।कि लेचले तब रास्तामें मा बापके दर्शनके लिये राजाका लडकाभी दीर्घायु खडा था, बापसे मोहके मारे रहा न गया दूसरी तरफ मुख करके राजाने चलते २ अपने लडकेको उपदेश किया कि, हे मेरे बेटे! दीर्घायु मुद्दत तक मत रक्खो जलदी मत करो प्यारसे शत्रुको जीतो ऐसा कह कर राजा जल्लादोंके साथ चलागया जल्लादोंने राजा और रानीको लेजाकर फांसी दे दिया. उसके लडकेने वहुत तेज शराब लेकर पहरेवालोंको पिलाकर बेहोश करके मा बापके मुरदेको जंगलमें लेजाकर अपने हाथसे फूँक दिया और उनके क्रिया कर्म भी कर दिये. राजाको जब इस बातकी खबर पहुंची तव राजाके मनमें भय होगया कि, दीर्घायु जो उसका

लडका है वह जरूर हमसे बापका बदला लेवैगा । कुछ दिनके पीछे दीर्घायुने जाकर घोडोंके दारोगाके पास नौकरी कर ली । एक दिन वह लडका सवेरे मधुर स्वरसे गान करता था राजाने जब उसकी आवाजको सुना तब पूछा यह कौन गाता है ? नौकरने कहा एक नया जवान गाता है तब राजाने उसको बुलाकर अपने मकानमें नौकर कर लिया । एक दिन राजा शिकारको गये वह भी राजाके साथ गया । राजा जंगलमें अकेला पडगया परंतु दीर्घायुने राजाका साथ न छोडा राजा जब थकगये तो एक वृक्षके नीचे दीर्घायुने बिछौना बिछा दिया राजा जब सोगये तब दीर्घायुने विचारा अब इससे बदला लेना चाहिये तलवार निकालकर जब मारने लगा तब बापकी नशीहत उसको याद आगई कि, जल्दी नहीं करनी चाहिये । राजा सोते २ बेचैनीसे घबराकर उठ बैठा तब दीर्घायुने पूछा राजन्! आप घबराकर क्यों जाग उठे हैं ? राजाने कहा मुझे नींदमें हमेशा घबराहट होती है और स्वप्नमें मैंने देखाहै कि एक युवा अवस्थावाला पुरुष दीर्घायुनामक मुझे मारनेके लिये आरहा है तब दीर्घायुने तलवारको निकाल कर कहा कि जिसके माता पिताको तुमने फाँसी दी है वह दीर्घायु मैं ही हूं अब मैं तुझको कतल करताहूं तब राजाने कहा तू मुझे कतल मत कर मैं तुझको कसम धराताहूं मेरे ऊपर दया करके मेरी जानका दान करदे तब दीर्घायुनें कहा तू भी इस बातकी कसम कर कि, मेरे साथ फिर तू किसीतरहकी बुराई न करना तब मैं तेरी जानको बखशूँगा । राजाने कसम खाई । दोनोंने हाथ मिलाकर परस्पर मित्रता कर ली तब राजाने उससे पूछा तुम्हारे पिताने जो तुमको मरती समय उपदेश किया था उस उपदेशका क्या अर्थ है दीर्घायुने उसका अर्थ राजाको समझाया राजा सुनकर प्रसन्न हुआ और अपनी लडकीकी शादी उसके साथ करके उसने दीर्घायुका राज्य उसको फेर दिया । दीर्घायु अपने राज्यपर चला गया । इस कथाको सुनाकर बुद्धने भी भिक्षुकोंका मेल करादिया और उनको अलग भी करदिया ॥

इति श्रीमदुदासीनवर्यस्वामिहंसदासशिष्यपरमानंदाख्यविराचितबुद्ध-जीवनचरित्रनामकग्रन्थे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

बुद्ध अकेले ही वहांसे चलकर नालानामक ग्रामके बाहर एक वृक्षके नीचे बैठ गये उस ग्राममें एक भारद्वाजी नाम करके ब्राह्मण रहता था उसके पास बहुत जमीन थी और वह खेतीका काम करता था जब वह हलको लेकर खेतमें जाने लगा तब बुद्ध भिक्षापात्रको लेकर उसके द्वारपर चले गये बुद्धको देखकर वह ब्राह्मण आग होगया ब्राह्मणने कहा—तुमको शरम नहीं आती है कि, द्वार २ पर मांगते हो तुम मेहनत करके हमारी तरह क्यों नहीं खाते हो ? जैसे कि हम खेती करते हैं वैसे तुमभी खेती करके खावो. बुद्धने कहा—मैं भी खेती करता हूं विश्वास और सचाई हमारा बीज है पुरुषोंके मन मेरे खेत हैं नेक कामरूपी जलसे उन खेतोंको सींचता हूं धर्मरूप मेरा हर है पुरुषार्थ और तपस्या मेरे बैल हैं इस प्रकारकी खेतीकी सामग्रीको सुनकर ब्राह्मणका चित्त बहुतही नरम होगया और घरमें जाकर बुद्धके लिये उमदा भोजन लेकर हाजिर होगया, बुद्धने कहा—उपदेशके बदलेमें हम कुछ नहीं लेते हैं उन मोहित करनेवाले उपदेशोंको सुनकर भारद्वाजका मन फिर गया और बुद्धका शिष्य होकर उसने संन्यासको धारण करलिया,वहां कुछ दिन रहकर बुद्ध कौशल देशकी तरफ चले गये वहां भी कुछ दिनोंतक धर्मका प्रचार करते हुए फिर दक्षिण देशकी तरफ चले गये वहांसे दक्षिणके मंडल देशमें जाकर अपने धर्मका प्रचार करने लगे कुछ काल उस देशमें रहकर फिर बनारस होतेहुए शरबस्ती मुकामपर चले आये वहांसे फिर बरसातके मोसममें चालिया ग्राममें चले गये उस जगह बरसातको गुजार कर फिर शरबस्तीको वापस चले आये बरसातके मोसममें धर्म प्रचारके लिये बुद्ध बाहरको कभी नहीं जाते थे किन्तु एकही जगह रहते थे और उसी जगह धर्मका विचार करते और लोगोंके कठिन २ प्रश्नोंके उत्तरोंको देते थे जब रायलकी उमर बीस बरससे अधिक होगई तब बुद्धने उसको संन्यास धर्मका उपदेश करके संन्यासी बनादिया और भिक्षुकोंकी मडलीका महंत बनाकर देश देशांतरमें धर्म प्रचार करनेकी उसको आज्ञा दी और कहा—हमेशह अपने मन और अपनी इन्द्रियोंको अपने काबूमें रखना १ । संन्यासाश्रमके धर्मोंका पालन सदैव करते रहना२। लोगोंको सच्चे धर्मोंका उपदेश करना ३। चित्तको कभी विषय विकारोंकी तरफ जाने न देना ४ । सदैव सत्यही भाषण करना ५ । कभी भूल करके भी असत्य न बोलना ६। सब जीवोंपर क्षमा और दयाकोही करना ७ । शत्रुसे भी

प्रेम भावसे बोलना ८। शत्रुपरभी उपकारही करना ९। सबको सच्चे धर्ममें लगाना १०। इस प्रकारका उपदेश करके रायलको बुद्धने देशांतरको रवाना करादिया और आप वहांसे अलावीनामक ग्राममें चले आये। वहां एक मकानको खाली जानकर उसमें जाकर टिक रहे। थोड़ी देरके पीछे एक कडे मिजाज वाले आदमीने आकरके कहा कि, तुम कौन हो जो हमारे मकानमें ठहरे हो? जलदी बाहर निकलो। बुद्ध अपने कमंडलुको लेकर जब चले तब उसने कहा कि, तुम तो साधु जान पडते हो भला बतलावो तो इस संसारमें आदमीके लिये सबसे अच्छा धन क्या है? और किस कामके करनेमें आदमीको सुख मिलता है? और सबसे बढकर स्वाद बस्तु संसारमें कौन है? और संसारमें कौनसा आदमी सबसे उत्तम है? इन मेरे प्रश्नोंके उत्तरोंको कह कर यहांसे जावो नहीं तो उठाकर गगासे पार तुमको हम पटक देंगे! बुद्ध खडे होकर उसके सवालोंके जवाब कहने लगे विश्वासही पुरुषके लिये सबसे उत्तम धन है। और सच्चे मनके साथ सच्चे धर्मकी पालना करनेसे ही पुरुषको सुख मिलता है। संसारमें सत्यही सबसे स्वादु वस्तु है। ज्ञानी पुरुष ही संसारमें सबसे उत्तम है। और उसका जीवन भी उत्तम है। फिर उस पुरुषने प्रश्न किया—ईश्वरकी भक्ति क्या है? और उसका फल क्या है? बुद्धने कहा—सच्चे धर्मोंपर चलनाही ईश्वरकी भक्ति है और जन्म मरणकी निवृत्ति उसका फल है। फिर उसने प्रश्न किया कि मैं किस उपायसे जन्म मरणसे छूटसक्ताहूं? और इस जन्म मरणरूपी समुद्रसे मैं कैसे पार होसक्ता हूं? किस कामके करनेसे मैं शुद्धचित्त हो सक्ताहूं? बुद्धने कहाविश्वास और सच्चे धर्मसे तुम जन्म मरणसे छूट सक्ते हो प्रेम और ज्ञानसे ही तुम संसार समुद्रसे पार होसक्ते हो शुभ आचरण करनेसे तुम्हारा चित्त शुद्ध होसक्ता है फिर उसने पूछा—ज्ञानकी प्राप्ति कैसे हो सक्ती है? और किस कामके करनेसे परलोकमें सुख मिलता है? बुद्धने कहा-श्रद्धा और प्रेमके साथ धर्मकी कथाओंके सुननेसे ज्ञानकी प्राप्ति होसक्ती है, पुरुषार्थ करनेसे परलोकमें सुख मिलताहै। फिर सब लोग कौन कर्म करनेसे अपने मित्र बन जातेहैं? बुद्धने कहा-सबसे प्रेम करनेसे और सबपर दया करने और कपटसे रहित शुद्ध आचरण करनेसे सबलोग मित्र बन जाते तथा बडाई करतेहैं. बुद्धके उपदेशोंको सुनकर उस निर्दई पुरुषका भी चित्त बदल गया और उसके मनमें भी धर्मका भाव जाग पडा

तब वह बुद्धसे संन्यास लेकर गांव २ में जाकर धर्मकी मुनादी करनेलगा । फिर वहांसे बुद्ध चालिया ग्राममें चले आये वहां बरसातको गुजार कर फिर राजगृहीको चले गये । एकदिन बुद्ध जंगलमें जाते थे वहांपर उन्होंने एक मृगको जालमें फँसाहुआ बाण लगनेसे बहुत व्याकुल और दुःखी देखा तब बुद्धको उस मृगपर बडी दया आई और उस्के बाणको निकाल और उस्को जालसे छुडाकर उसी जगहमें एक वृक्षके नीचे ध्यानावस्थित होकर बुद्ध बैठ गये शिकारीने जब कि दूरसे मृगको न देखा तब एक बाण उसने बुद्धको मारा वह बाण बुद्धके पाससे निकल गया परंतु बुद्धको लगा नहीं उस शिकारीने आकरके समीप जब कि, बुद्धकी शान्त मूर्तिको देखा तब तिसके मनमें बुद्धपर बडी श्रद्धा और भक्ति उत्पन्न होगई और हाथ जोडकर खडा होगया जब कि, बुद्धदेव ध्यानसे उतरे तब तिस शिकारीको देख करके बुद्ध तिस्को सुंदर २ कथाओंको सुनाने लगे और दया दृष्टिसे उस्को धर्मका उपदेश करने लगे । बुद्धके उपदेशोंको सुनकर उस्का चित्त बहुत नरम होगया और अपने निंदित कर्मपर धिक्कार देने लगा और अपने पहले पाप कर्मोंसे पश्चात्ताप करके रोने लगा और बुद्धके सामने बहुत ही शरमिंदा हुआ बुद्धने उसको धर्मका उपदेश करके कुटुंबसहित अपने मतमें कर लिया फिर वहांसे बुद्ध गौतम शरवस्ती स्थानमें चले गये । वहां बुद्धने बरसातके दिनोंको गुजारा उस समय बुद्धकी अवस्था सत्तर बरसके करीब पहुंच गई थी तो भी उन्होंने अपने पुरुषार्थको नहीं छोडाथा पर तबभी ग्रामोंमें घूमघूम कर यह लोगोंको धर्मका उपदेश करते थे । जब बुद्धका शरीर अधिक कमजोर होगया तब आनन्दनामक अपने चेलेको भिक्षा मांगने और सेवाके लिये साथमें रख लिया । चालियाके पास जंगलमें एक बडाभारी डाकू रहा करताथा उसके हाथसे वहांके लोग बडे दुःखी थे वह नित्यही ग्रामोंमें जाकर डाका मारता था और उसके जुल्मसे वहांके सब ग्रामोंके लोग बडे दुःखी थे उस डाकूको धर्मपर लानेके लिये बुद्धने अपने मनमें निश्चय करलिया और उस जंगलमें जाकरके उससे मिले और उसको धर्मका उपदेश करके अधर्म जालसे उन्होंने छुडादिया बुद्धका चेला बनकर वह भी लोगोंको धर्मका उपदेश करने लगा फिर बुद्ध शराबस्ती नगरमें चले आये और वहां विशाखनामक स्त्रीको धर्मका उपदेश करके बुद्धमतमें करलिया उसके पास

वडा द्रव्य था उसने धर्मके काममें उस द्रव्यको लगाना शुरू करदिया भि-क्षुकोंके लिये सुंदर २ रहनेके स्थान बनवादिये और उनकी बीमारियोंके लिये शफाखाने बनवादिये खानेके लिये क्षेत्र खोलदिये और जाडा बरसातके लिये वस्त्र बनवादिये बडाभारी धर्मका काम उसने करदिया। अब फिर बुद्ध धर्म उपदेशके लिये दक्षिण दिशाको गये । जब वहांसे बुद्ध वापस आये तो दक्षिण देशसे देवदत्तनामवाला एक आदमी किसी बातपर भागकर राजगृहीमें चला आया वहांके वंबीराजाके लडकेने उसके रहनेके लिये एक मकान बनवा-दिया उसमें वह रहने लगा जब कि, बुद्ध राजगृहीमें आये तब देवदत्त उनके पास जाकर कहने लगा कि। देव? मेरी मरजी है कि भिक्षुकोंकी एक और मंडली बनाई जावे जिसका सब बंदोवस्त मेरे अधीन रहे उस मंडलीके असूल बडे कठिन तितिक्षा करनेके हों और वैराग्यकी उसमें अवधी हो । बुद्धने उसकी बातको न माना, तब देवदत्त अपने मकानपर चला गया और उसने बुद्धके साथ मनमें वैर भावको खडाकिया और बुद्धके मरवानेके फिकरमें लगा, एक वार किसी आदमीको बुद्धके मारनेके लिये उसने भेजा परंतु उसको मारनेका अवसर न मिला दूसरी दफा एक ऊंचे टीलेसे एक पत्थर उनके ऊपर गिर-वा दिया वह पत्थर भी उनको न लगा तीसरी बार उसने एक हाथी छोड दिया वह हाथी भी भाग गया बुद्धके समीप न आया फिर वह एक दिन बुद्धके पास आकर कहने लगा कि मैंने भिक्षुकोंके लिये सख्त कायदे बनाये हैं—एक तो भिक्षुक नगरके बाहर खुले मैंदानमे रहा करें दूसरा फटे पुराने कपडोंको जहां तहां बटोर धो और सी करके पहना करैं तीसरा भिक्षुकलोग हमेशह भिक्षा मांगकर खाया करें कभी भी किसीका नेवता न माना करैं, बुद्ध गौतमने कहा मेरा उपदेश नगरके निवासियों और ग्रामके निवासियोंके लिये बराबर ही है और जंगलके रहनेवालोंके लिये भी बराबर ही है यदि कोई आदमी अति कठोर भी नियमोंको पालन करना चाहे तो मेरी तरफसे कुछ रुकावट नहीं है जो वह न करै तो मैं ऐसे कठोर नियमोंके पालन करनेके लिये कोई नियम भी ज री नहीं करताहूं क्योंकि ऐसे कठोर नियमोंके करनेसे चित्त तामसी होजाता है शान्तिको कदापि प्राप्त नहीं होता मैंने ऐसे नियम बनाये हैं जिनके करनेसे भिक्षुकोंको अति कष्ट न हो, जो प्रेमसे जैसा चाहै भिक्षुकोंको भोजन करा देवै ।

चाहै घरमें लेजाकर करावै चाहै स्थान पर देजावे चाहे भिक्षा मांगते समय देदे, प्रेम और श्रद्धाके साथ जैसा वस्त्र चाहै भिक्षुकोंको देदे उसको भिक्षुक पहर ले भिक्षुकोंके लिये इन्द्रियों और मनको अपने काबूमें रखनेका नियम है और असत्य भाषण तथा छल कपटको कदापि न करै और अपने सच्चे धर्मोंकी पालना हमेशह करता रहे, और दूसरोंसे भी कराता रहे देवदत्तने बुद्धके वाक्योंकी तरफ कुछ भी ख्याल न किया और अपने मनमें दुःखी होकर चला गया । तब उसने एक नई भिक्षुकोंकी जमात खडी की और उनके लिये नये नियमोंको बनाया परंतु वह जमात थोडे ही दिनोंमें तितर बितर होकर टूटगई, अंतमें देवदत्तने आकर बुद्धकी शरण ली और अपने कसूरको बुद्धदेवसे माफ कराया. अब बुद्धकी आयु उनासी बरसकी होगई फिर जीतबनमें चातुरमास भर रहकर राजगृहीके पास एक पर्वतकी कंदरामें बुद्ध जा रहे । वहांके राजानें गंगापारके देशको अपने काबूमें करनेके लिये बडी तैयारी करके बुद्धसे सलाह लेनेके लिये अपने वजीरको बुद्धके पास भेजा, वजीरने जाकर जब राजाकी तरफसे सब हाल बुद्धसे कहा तो सुनकर बुद्धने कहा-आपने नहीं सुना कि, वे लोग हमेशह अपनी साधारण सभा मुकरर करते रहते हैं और जितने उनके मुकदमें होते हैं उनको वे लोग आपसमें मिलकर फैसला करलेते हैं वे लोग आपसमें हमेशह मिले रहते हैं सब काम मिल कर करते रहते हैं, जब तक उनका परस्पर प्रेम है तबतक उनको जीतना कठिन है । इसीपर एक दृष्टांत कहते हैं—एक राजाके बहुतसे लडके थे और सबका आपसमें मेल था, जब राजा मरने लगे तब उन्होंने अपने लडकोंको बुलाकर कहा—एक २ पतलीसी लकडी सब कोई लेते आवें । वह सब ले आये तब कहा—अपनी २ लकडीको सब कोई तोड डालो । उन्होंने तुरन्त तोड डाला फिर कहा । एक २ और लावो वह एक २ लकडी और ले आये । राजाने कहा—इन सबको इकट्ठा करके गठा बना देओ उन्होंने बना दिया । तब एक लडकेसे कहा इसको दोनों हाथोंके जोरसे तोड डालो उसने कितना हीं जोर लगाया परंतु उसको नहीं तोडसका फिर दूसरेसे कहा इसको तोडो उसनेभी जोर लगाया परंतु वह नहीं टूटा इसी तरह सब लडकोंने अपना २ जोर लगाया परंतु वह गट्ठा नहीं टूटा तब राजाने अपने पुत्रोंसे कहा कि, तुम सब आपसमें मिलकरके रहोगे तो तुमको कोई भी राजा

नहीं तोड सकेगा और तुम्हारा राज बनाही रहेगा यदि तुम आपसमें फूट करके जुदा २ होकर रहोगे तो तुमारे शत्रु तुम सबको एक २ करके मारकर राज लेलेवैंगे । इसी तरह जिस जातिका परस्पर इत्तिफाक है उस्को कोई भी शत्रु नहीं जीत सक्ता है बुद्धके उपदेशको सुनकर वजीर चला गया । बुद्धने अपने चेले आनंदसे कहा कि, तुम सब भिक्षुकोंको बुलावो, आनंदने सबको इकट्ठा किया तब बुद्धने उनसे कहा तुम सब परस्पर मिलकर देश २ में और नगर २ में तथा ग्राम २ में सभायें मुकरर करो और आपसमें मेल करके अपने असूलें यानें उपदेशोंको करो जब तुम ऐसा करोगे तब लोगोंका भला होगा और तुमको पुण्य होगा जबतक तुम संसारके भोगोंमें आसक्त नहीं रहोगे और जबतक तुम अपनी सच्चाईपर कायम रहोगे तबतक संसारभरमें तुम्हारा यश व्याप्त रहेगा और राज बना रहेगा । फिर जबतक तुम अपने धर्मोमें दृढ रहोगे तबतक कोई पापभी तुम्हारे समीप नहीं आवैगा जबतक तुम अपने पुरुषार्थको दृढ रक्खोगे तबतक तुम्हारे मतकी उन्नति रहैगी तुम हमेशह अपने मनको पवित्र रक्खो और सत्यरूपी हथियारको हमेशह अपने काबूमें रक्खो इसी हथियारसे तुम संसारबंधनसे छूट सक्ते हो शिष्योंको इस प्रकारके उपदेशोंको करके फिर बुद्ध वहांसे बाहर नगरों और ग्रामोंमें उपदेशके लिये चलदिये । बुद्ध फिर पाटली ग्राममें पहुंचे जो इस कालमें पटना नगर करके प्रसिद्ध है । इस ग्राममें राजगृहीका राजा अजातशत्रु गंगापार-वाले लोगोंको दुःख देनेके लिये एक किला बनवाता था इस ग्रामके लोग जो कि, बुद्धके शिष्य थे वह सब बुद्धके आनेको सुनकर बुद्धके पास आये और बडी श्रद्धासे बुद्धकी सेवा करने लगे, बुद्धने उनसे कहा कि, जो पुरुष पापी होताहै वह पाप करनेसे नहीं डरता है । पापी आदमी पांच तरहके दुःखोंको उठातेहैं एक तो संसारमें कोई पुरुष भी उस्का विश्वास नहीं करताहै दूसरे उस्का चित्त हमेशह दुःखी रहता है तीसरे ऐसे आदमीकी चारों तरफ बदनामी होती है और सब कोई उसकी निंदा करते हैं चौथा जहाँ कहीं वह जाता है उसका मन हमेशह खतरेमें रहता है पांचवा मरनेके पीछे नरककी नानायोनियोंमें वह बार २ जन्मता मरता रहता है । यह पांच प्रकारके दुःख पापीको अपने पापके फल भोगने पडते हैं । जो पुरुष पुण्य

कर्म करता है वह इन पांच प्रकारके दुःखोंसे बचा रहता है एक तो सब कोई उसका विश्वास करते हैं दूसरे वह हमेशाह सुख भोगता है तीसरे सब लोग उसका यश करते हैं चौथा हमेशाह वह चिंता और फिकरसे रहित होता है पांचवां मरनेके पीछे वह सुखरूप हो जाता है और जबतक जीता है और जहांपर जाता है सबलोग उसकी प्रतिष्ठा करते हैं इस प्रकारके उपदेशोंको वहां करके फिर वहांसे बुद्ध गंगापार होकर कोटीग्राममें गये वहांसे फिर नाइक ग्राममें जाकर वहां कुछ दिन रहे फिर वहांसे शाली नगरमें गये, वहां एक बडी दौलतमंद विधवा स्त्री शूद्र जातिकी रहती थी वह बडे प्रेमके साथ बुद्धके पास गई, भक्ति तथा श्रद्धासे बुद्धको उसने नेवता दिया । बुद्धजातिके भूखे नहीं थे किंतु प्रेमके भूखे थे इसलिये स्त्रीके नेवते को उन्होंने मान लिया फिर वहांके राज-घरानेके लोगोने बुद्धसे नेबताके लिये कहा तब बुद्धने उनसे कहा—हमने प्रथमही कलका नेवता फलानी विधवाका मान लिया है इसलिये कलका नेवता हम नहीं मान सक्ते हैं वह लोग मनमें नाराज होकर चले गये, परंतु बुद्धके तात्पर्य को वह नहीं जानतेथे कि, बुद्ध समबुद्धि हैं विषम दृष्टि बुद्धकी नहीं है । दूसरे दिन बुद्धने उस विधवाके गृहमें जाकर भोजनकिया तब विधवाने बडी नम्र-ताके साथ बुद्धसे कहा—महाराज ! मैंने अपने बगीचेको भिक्षुकोंके रहनेके लिये दान कर दिया है सदैव इसमें भिक्षुक लोग रहा करैं, उसी दिनसे भिक्षुक लोग उस बगीचेमें रहने लगे. दैव योगसे बुद्ध बीमार होगये थोडे दिनोंके पीछे जब वह अच्छे हुए तब वहांसे चलकर वेलौरनामक एक ग्राममे पहुंचे वहाँ फिर बुद्धका शरीर बीमार होगया, आनंद बुद्धका बडा प्यारा शिष्य था उसने देखा कि, बुद्धका शरीर बहुत दिनतक नहीं रह सक्ता है तब वह रोने लगा बुद्ध ने आनंदसे कहा कि, तुम रोते क्यों हो ? जिसका जन्म होता है उसका मरण भी जरूर एक दिन होता है जो वस्तु एक दिन अवश्यही नाश होनेवाली है उसके लिये रुदन करना व्यर्थ है रुदन तब करना चाहिये जब कि, स्थिरवस्तुकाभी नाश होजाय सो ऐसा तो नहीं है क्योंकि आत्मा नित्य है और तीनों कालोंमें आत्मा ज्योंका त्यों एक रस रहता है अर्थात् आत्माका नाश कभी भी नहीं होता है तब मरनेसे क्यों डरना और मरनेका शोक क्यों करना ? मरना भी एक अवश्य भावी है । क्या गरीब

क्या अमीर क्या ज्ञानी क्या अज्ञानी सबके लिये बराबर ही है । इसकी चिंता मूर्ख ही लोग करते हैं ज्ञानीलोग नहीं करते हैं । फिर बुद्धने अपने शिष्य आनन्दसे कहा कि अब कुछ दिनोंमें मेरा शरीर अवश्य ही नाश हो जायगा इस लिये "तुम अब सब भिक्षुकोंको जहां तहांसे बुलाकर इस मकानमें इकट्ठा करो, मैं अब भिक्षुकोंको कुछ उपदेश करूंगा।" बुद्धकी आज्ञाको पाकर आनंदने जहांतहांसे भिक्षुकोंको बुलाकर इकट्ठा किया। सब भिक्षुकोंने आकर प्रथम बुद्धको दण्डवत् प्रणाम किया फिर सब भिक्षुकलोग हाथ जोडकर बुद्धके सन्मुख बैठ गये। बुद्ध कहने लगे कि हे भिक्षुको ! दश कर्मोंके करनेसे संपूर्ण मनुष्योंके दोनों लोक बिगड जाते हैं, अर्थात् जीते मनुष्योंके सब काम बिगड जाते हैं। और इन्हीं दश कर्मोंके त्याग करदेनेसे मनुष्योंके सब काम बनजाते हैं। उन दश कर्मोंमेंसे तीन कर्म शरीरके हैं चार कर्म बाणीके हैं और तीन कर्म मनके हैं और जीवोंकी हिंसा करनी १ चोरी करनी २ परस्त्री या वेश्या आदिकोंके साथ मैथुन करना ३ ये तीन पापके बीज कर्म शरीरसे होतेहैं । झूँठ बोलना १ दूसरेको गाली-देना २ परकी निंदा करनी ३ व्यर्थ बकबाद करना ४ ये चार कर्म पापके मूल बाणीसे होते हैं । ईर्षा करनी १ दूसरेका अनिष्ट चिंतन करना २ हर एक वार्तामें संशय होना ३ ये तीन कर्म पापरूप मनसे होते हैं, हे भिक्षुको ! तुम लोग सदैव इन दश कर्मोंसे बचना और संसारी लोगोंको भी इनसे बचनेका उपदेश करना। किसी जीवको भी कदापि तुम लोग दुःख न देना और लूटपाट चोरी वगैरह कर्मोंको न करना बल्कि ऐसे आदमियोंको भी अपने उपदेशोंसे इन कामोंसे हटा देना विषयी पुरुषोंकी कदापि संगत न करना किंतु परस्त्री आदिकोंको माता या भगिनी करके जानना। कदापि मिथ्या भाषण न करना किंतु सदा सत्य और प्रिय भाषण करना सबसे प्रेम रखना, बुद्धिमानोंके साथ काम करना और किसीके ऐबको प्रगट न करना बल्कि छिपाना, किसी प्रकारकी भी कसम न खाना किंतु सचाईके साथ काम करना और व्यर्थ बातोंमें कालको मत खोना बल्कि मतलबकी बात कहकर चुप होजाना लालच कभी भी न करना किसीसे बखीली भी न करनी बल्कि धनवानों और सुखियोंको देख कर प्रसन्न होना। अपने मनको क्रोधसे कीनासे बदनीयतीसे साफ रखना अर्थात् इन बातोंको कदापि दिलमें आने नहीं देना हे भिक्षुको ! जिन

धर्मोंको मैने प्रगट किया है और तुम्हारे प्रति उपदेश कियाहै उन (धर्मों) को तुम अच्छी तरहसे जानो समझो और बडे उत्साहके साथ जगत्में उनको प्रचार करो, फिर बुद्धने कहा जब मै इस दुनियांसे कूच करजाऊँ तब तुम लोग ऐसा करना कि इन भिक्षुकोंमें जिसको तुम सबसे विद्वान् समझो और अपनेसे गुणों करके अधिक जानो और सच्चे धर्मोंका उपदेश करनेमें बडा निपुण देखो और मेरी जगहमें तुमको वह उपदेश करसके उसको तुमलोग मेरी जगहमें स्थापन करके उसको मेरा रूप जानकर उसीसे उपदेशोंको सुनना और उसके उपदेशोंपर अमल करना क्योंकि वही वैराग्यवान् तुम्हारा आचार्य्य याने धर्मका उपदेशक कहा जावेगा और उपदेशकको चाहिये कि वह बडे उत्साहके साथ धर्मके श्रोतालोगोंको धर्मका उपदेश करै और जिन सच्चे धर्मोंका लोगोंको उपदेश करै आप उन धर्मोंपर आरूढ रहे अर्थात् उन धर्मोंके धारण करनेमें बडा दृढ हो और हमेशह उसको सत्यवादी धर्मात्माके साथ रहना चाहिये जो लोग बदचलन और छोटे हैं उनके साथ कदापि वह न रहे और जो लोग धर्म-चर्चा सुननेके लिये आवें उनके साथ उपदेशकको बडा प्रेम करना चाहिये और उपदेशकको उचितहै कि, दूसरे उपदेशकोंकी शिकायत न करै और उनके ऐबोंकोभी प्रगट न करै किंतु अपने सच्चे धर्मोके उपदेशोंको करै, फिर उपदेश-कको चाहिये कि साफ और गेरुवे रंगका रंगाहुवा कपडा पहने जो जल्दी मैला न हो । उपदेशक ऐसी चालसे रहै जिस चालसे कोई उसकी निंदा न करै। मान और अपमानको सम जानकर लोगोंकी भलाई और मिलौनीके लिये यत्न करै। अपने देशकी भलाईका ख्याल रक्खे । संसारमें जो मतवादके झगडे पैदा हुये हैं उन झगडोंके मिटानेकी कोशिश करै । और अपने नामके लिये कोई नया मत पैदा करनेकी कदापि इच्छा न करै किंतु सचाईकी तरफ ही हमेशह ख्याल रक्खे जो लोग सचाईको स्वीकार कर लेतेहैं उनको ईश्वरात्मा और जीवात्माके स्वरूपका पूरा ज्ञान होजाता है । जो लोग पाप कर्मोंको करके मलिन हृदयवाले हो रहेहैं वह उपदेशकके गम्भीर मधुर और पवित्र स्वरसे सच्चे धर्मोंको सुनकर सच्चे धर्मोंको स्वीकार करके पापोंसे छूट जायँगे ।

फिर उपदेशकको चाहिये कि हमेशह लोगोंको असत्य मार्गसे हटानेकाही उम्मेदवार बना रहे । ना उम्मेद कभी भी न हो जबतक लोगोंकी समझमें सच्चा उपदेश न आवे तबतक समझाताही रहे समझानेमें आलस्य कभी-

भी न करै । श्रोता लोगोंसे पुत्रवत् स्नेहको उत्पन्न करै और अति प्यारके साथ प्रश्नोंके उत्तर उनसे कहे । फिर बुद्ध शिष्योंके प्रति उपदेश करने लगे- आपही मनुष्य बुराईको पैदा करताहै, आपही तिस्के फल दुःखको उठाता है फिर आपही अशुद्ध बनता है आपही शुद्ध बनता है । शुद्धि और अशुद्धि इसीसे पैदा होती है । कोई दूसरा इनका करनेवाला नहीं है जो आदमी मूर्ख है वह यदि अपनी मूर्खताको जानै तो वह कुछ न कुछ इस बातमें बुद्धिमान् है लेकिन जो मूर्ख अपनेको बुद्धिमान् समझता है वही पूरा मूर्ख है । जो आदमी पापोंसे भराहै उसकी नजरमें पाप मीठा है, जब तक पापका फल उस्को पूरा २ नहीं मिलताहै तबतक वह उसको खुशी देनेवाला समझता है, लेकिन जब तिसका फल प्रत्यक्ष होने लगता है उस कालमें वह उसको पाप करके जानता है ।

इसी प्रकार अनेक आदमी धर्मको तबतक बुरा जानते हैं जबतक उनको धर्मका फल पूरा २ नहीं मिलता है--जब कि फल ठीक २ दिखाने लगता है तब उसको धर्म प्यारा लगने लगता है । दूसरोंके ऐबोंको देखना बहुतही आसान है लेकिन अपने ऐबोंको देखना बहुतही कठिन है, आदमी अपने पडोसीके ऐबोंको रुईके फोहेके तुल्य उडाता है मगर अपने ऐबोंको उडाना मुशकिल है बल्कि छिपाताहै । बुद्धिमानको मुनासिब है कि हमेशह अपनी भूलोंपर और बुरे कामों- की तरफ निगाह रक्खे और उनके दूर करनेका फिकर करे । सज्जन पुरुष बरफसे ढकेहुए पहाडकी तरह दूरसेही चमकते हैं और असज्जन पुरुष अंधेरेमें धरीहुई बस्तुकी तरह नजर नहीं आते हैं जो आदमी दूसरोंको दुःख पहुंचाकर अपने सुखकी इच्छा करता है उसको कदापि सुख नहीं मिलता है । आदमीको चाहिये कि क्रोधको क्षमासे झूँठको सचाईसे बुराईको नेकीसे दूर करे । जिस तरह मक्खी फूलसे मीठे रसको चूस लेती है और तिसके रंगको तथा गंधीको छोड देती है इसी तरह बुद्धिमान पुरुष सबसे गुणको ग्रहण करलेता है और अवगुणों- का त्याग कर देताहै । आकाश समुद्र तथा पर्वतोंमें कहीं भी उस पापी पुरुषको जगह न मिलैगी जहांपर वह अपने पापोंको छिपा सके और अपने बुरे कामोंसे बचे जब कोई आदमी दूरसे सफर करके अपने घरको वापस आता है तब उसके सम्बन्धी और मित्र उसकी पेशवाईको आकर उसको इज्जतके साथ घरमें

ले जाते हैं इसी तरह नेक आदमीकी नेकियां भी इसकी इज्जत करती हैं जब कि वह शरीरको त्याग कर अपने असली घरको जाने लगता है । बुद्ध कहनेलगे अब मेरे दलमें सचाईने दखल कर लिया है मेरा शरीर गौतमका शरीर है और यह अपने वक्तपर गिरजायगा याने नाश होजायगा तब गौतम सिद्धार्थ किसीको भी नजर नहीं आवैगा लेकिन बुद्ध जो आत्मा है वह कदापि नहीं मरैगा वह हमेशह ही जीता रहेगा जब मैं शरीरको त्यागूँगा तब जैसे अग्निकी लाट महान् अग्निमें मिल जाती है तैसे मेरा आत्मा भी व्यापक आत्मामें मिल जायगा हे भिक्षुको ! मैं अब संसाररूपी समुद्रके दूसरे किनारे पर पहुंच गया हूं औरोंकी भी पारले किनारे पर पहुँचनेमें मैं सहायता करताहूं मैं बंधनसे छूट चुकाहूं और दूसरोंको भी बंधनसे छुडानेकी कोशिश करताहूं जिस साधन करके मैं बंधनसे छूटा हूं वह सचाई है जिसका मैंने अमल किया है वह सचाई है मेरी बाणीका तात्पर्य भी सचाई है मेरे मनके संकल्प भी हमेशह सचाईमें ही होते हैं मेरा आत्मा सचाईमेंही लीन होगया है, इसलिये मैं सचाई रूप होगया हूं । जो आदमी सचाईको ठीक २ जान लेगा वही निर्बाणपदको हासिल करैगा बुद्ध कहते हैं कि सब संसारी जीव एकसे ही हुए जैसे कुम्हार एक ही मट्टीसे नानाप्रकारके बरतनोंको बनाता है परंतु सब बरतनोंमें एकही मट्टी है केवल रूप जुदा २ देखनेमें आता है । कोई बरतन शुद्ध वस्तुके सम्बन्धसे शुद्ध कहा जाता है, कोई अशुद्धके सम्बन्धसे अशुद्ध कहा जाता है तैसे सब प्राणियोंका आत्मा एकही है परंतु उपाधियोंके भेदसे और कर्मोंके भेदसे भिन्न २ शुद्ध अशुद्ध बन रहा है, वास्तवमें आत्मामें भेद नहीं है किंतु शरीरोंके भेदसे आत्मामें भेद प्रतीति होती है । फिर बुद्धने कहा—यदि कोई मूर्ख आदमी मेरे साथ बुराईसे पेश आता है तब मैं उसके बदलेमें उसके साथ नेकीसे पेश आताहूं हे भिक्षुको ! तुमने भी ऐसा ही करना । बुद्धकी इस बातको एक गँवारने सुना वह गंवार बुद्धको गाली देने लगा जब वह थक कर चुप करगया तब बुद्धने उससे कहा कि कोई आदमी किसीके लिये तोशा लाता है और उस तोशेको दूसरा नहीं लेता है तब वह तोशा किसके पास रहेगा उस गंवारने कहा उसी लानेवालेके पास रहेगा तब बुद्धने कहा आप जो हमारे वास्ते तोशा लायेथे उसको हमने स्वीकार नहीं किया है वह आपहीके पास रहेगा न ? वह गँवार बुद्धकी

बातको सुनकर शर्मिंदा हुआ बुद्धने फिर उससे कहा जैसे परछांही अपनी असली वस्तुके साथ ही रहती है तैसे ही बुराई बुरे काम करनेवालेके ही साथ रहती है बुद्ध कहते हैं कि जो आदमी भले आदमीके साथ बुराई करता है वह बुराई उसीको होती है जैसे कोई आदमी आकाशकी तरफ थूकता है वह थूक उसीके ऊपर आकर गिरता है। ऐसा ही बुराईका भी फल है। जैसे कोई आदमी जिधरसे बायु आती हो उसी तरफको धूली फेंकता है। तो वह धूलि उसीके ऊपर पडती है। तैसे ही कोई भी पुरुष पीछेसे किसीका बुरा भला कहता है वह उसीको लगता है दूसरेका कुछ भी नुकसान नहीं होता है जो दूसरेको दुःख देना चाहता है वह दुःख उसीके शिरपर आता है। वह गाली देने-वाला बडा शरमिंदा हुआ और बुद्धकी शरणको प्राप्त हुआ बुद्धने अपने उपदेशोंसे उसकी मूर्खताको हटाकर उसको भी साधु बना दिया।

एक दिन एक विद्वान् ब्राह्मणने आकर बुद्धसे प्रश्न किया कि सबसे तेज तलवार कौन है ?॥ उ० ॥ जो वाणी क्रोधके समय मुखसे निकलती है वही सबसे तेज तलवारहै ॥ प्र० ॥ सबसे अधिक जैर कौन हैं उ० ॥ लालचसे बढकर कोई जैर नहीं है ॥ प्र० ॥ भयानक अग्नि कौन है ॥ उ० ॥ क्रोध सबसे भारी अग्नि है ॥ प्र० ॥ अंधेरी रात्री कौन है ॥ उ० ॥ अज्ञान हीं अंधेरी रात्रि है ॥ प्र० ॥ सबसे अधिक नफा किसको मिलता है ॥ उ० ॥ जो दूसरोंके प्रति निष्कामतासे दानको देता है ॥ प्र० ॥ अधिक नुकसान किसको होता है ॥ उ० ॥ बिना दियेहुये जो दूसरोंसे लेता है या लेकर देता नहीं है ॥ प्र० ॥ किस जिरोंके पहरनेसे कोई भी हथियार असर नहीं करता है ॥ उ० ॥ सब्र एक ऐसी जिरों है जिसपर कोई भी हथियार काम नहीं करता है ॥ प्र० ॥ सबसे अच्छा हथियार कौन है ॥ उ० ॥ बुद्धिमानी सबसे अच्छा हथियार है ॥ प्र० ॥ खौफ-नाक चोर कौन है ? और बेशकीमती खजाना कौन है ॥ उ० ॥ बुरा ख्याल खौफनाक चोर है, नेकी और नेक चलनी बेशकीमती खजाना है ॥ प्र० ॥ कौनसी वस्तु मनको खैंचनेवाली है और कौनसी वस्तु तकलीफ देनेवाली है ॥ उ० ॥ नेकी दिलको खैंचनेवाली है और बुराई दिलको तकलीफ देनेवाली है ॥ प्र० ॥ वह कौनसी वस्तु है जिसको अग्नि जला नहीं सक्ती है और पानी गीला नहीं करसक्ता है और हवा उडा नहीं सक्ती है ॥ उ० ॥ नेक कामकी बरकत है।

वह ब्राह्मण बुद्धकी बातोंसे प्रसन्न होकर चला गया बुद्ध कहने लगे कि हे भिक्षुकों! एक दौलतमंदका बहुत पुराना बडा भारी मकान था उस मकानकी छतकी लकडियें बहुत पुरानी होगई थीं एक दिन तिस दौलतमंदको मकानमें आगकी गरमी मालूम हुई तब वह जलदीसे मकानके बाहर निकल आया और क्या देखता है कि छत जलरही है तब उसको बडा डर पैदा हुवा क्योंकि वह अपनी संततिको बडे प्यारसे रखताथा और इस बातको भी जानता था कि वह इस जलतेहुए मकानके अंदर बे खबर सोरही है तब उसने अपने मनमें विचार किया अब मुझको क्या करना चाहिये क्योंकि सब लडके नादान हैं यदि मैं एकको अपनी गोदमें लेकर बाहर निकलताहूं तब दूसरेके जलनेका डर है इतनेमें उसके दिलमें एक ख्याल पैदा हुआ कि मेरे लडके खिलौनोंको बहुत चाहते हैं इसी बहानेसे उनको बाहर निकालना चाहिये। ऐसा विचार करके एकबारगी वह चिल्लाने लगा ए मेरे प्यारे बचों तुम जल्दीसे बाहर आओ मैं तुम्हारे वास्ते बडे सुंदर खिलौने लायाहूँ और क्या अच्छे तमाशे होरहे हैं उसकी आवाजको सुनकर सबके सब लडके जल्दीसे भागते और जलते हुए मकानसे बाहर निकल आये तब बापने बडी खुशीसे उनको सुंदर २ खिलौने मंगा कर दे दिये। जब लडकोंने मकानकी तरफ देखा कि, वह जल रहा है तब वह अपने बापकी भलाईको समझे और अपने बापकी स्तुति करने लगे क्योंकि बापकी बुद्धिमानीसे उनकी जान बची। दार्ष्टांतमें यह संसाररूपी मकान राग द्वेष रूपी अग्निसे जल रहा है इसके अंदर अज्ञानरूपी निद्रामें जीव सब सो रहे हैं। पितारूपी उपदेशक उनको कहता है आवो मैं तुमको एक तमाशा दिखलाऊं इस तरहका लोभ देकर उनको उस जलती हुई आगसे बाहर निकाल लेता है बाहर होकर वह फिर उसके उपकारको मानने लगते हैं बुद्ध अपने शिष्योंसे कहनेलगे एक जन्मके अंधेने कहा—मैं चांदनेको नहीं मानताहूं और नीले पीले लाल वगैरह रंगोंको भी मैं नहीं मानताहूं चन्द्रमा, सूर्य्य, तारे इत्यादिको भी मैं नहीं मानताहूं क्योंकि ये सब नहीं हैं लोक सब झूँठ कहते हैं उसके मित्रोंने बहुत सी युक्तियोंसे उसको समझाया परंतु उसने एक भी न मानी और अंधेने कहा तुम जो कहतेहो देखते हैं तुम हमको धोखा देतेहो। अगर कोई रंग होता तब मैं भी उसको छूकर जान लेता वहांपर एक वैद्य रहताथा अंधेके

मित्रोंने उस हकीमसे जाकर कहा—इस अंधेका तुम इलाज करो हकीमने चार औषधियाँ मिलाकर अंधेको खिलाई अंधेको भी सबकुछ दीखने लगगया तब अंधेने हकीमका वडा उपकार माना । दार्ष्टांतमें यह जीव अज्ञानरूपी अंधकार करके अंधा होरहा है उपदेशक रूपी गुरु अर्थात् हकीम जब इसको सचाईरूपी औषधीको खिलाता है तब इसके ज्ञानरूपी नेत्र खुल जाते हैं उनसे इसको सत्य मिथ्या सब दिखाई पडने लग जातेहैं। बुद्धने कहा अगर कोई धनी लाखों रुपैयोंका नित्य दान करताहै और एक दूसरा आदमी एक मुहूर्त भर अपने मनको रोकताहै उस दानका फल मनको रोकनेवालेके बराबर नहीं होसक्ताहै हे भिक्षुको ! तुमको उचित है कि हमारे कहेहुए पवित्र धर्मसे अपने मनको पवित्र रखना कभी भी अधर्म-रूपी पापकी तरफ अपने मनको जाने न देना। मैं अब तुमसे इस संसारसे रुखसत होना चाहताहूं ऐसा कहकर बुद्धने सब संन्यासियोंके सामने काश्यपको बुलाकर अपने पहने हुए कपडे उतारकर उस्को पहना दिये और उस्के पहने हुए कपडोंको आप पहन लिया और उससे कहा मेरे मरनेके पीछे मेरी जगहमें रहकर तुमने सब लोगोंको धर्मका उपदेश करना सब पर दयादृष्टि रखना सबसे प्रेमके साथ मिलना और किसीको भी अपना शत्रु न समझना किंतु सबको अपना मित्र जानना । फिर वहांसे बुद्ध धीरे २ काशीपुरीकी तरफ रवाना हुए रास्तेमें उन्होंने अपने चेलोंसे कहा मेरे मरनेके पीछे यदि कोई आदमी मेरे मुखसे धर्मकी बातको निकलीहुई बतलादे और वह बात हमारे धर्म पुस्तकसे विरुद्धहो तब उस वार्ताको तुम नहीं मानना । जो हमारे धर्मसे वह वार्ता मिलतीहो तो मान लेना। फिर बुद्ध पाव ग्राममें पहुंचे और ग्रामके बाहर एकांत देशमें उन्होंने आसन जमाया । इसी ग्राममें एक चंडनाम करके ठठेरा रहता था। जब उसने बुद्धके आनेकी खबर सुनी तो उसी समय वह नंगे पाँवसे बुद्धके पास दौड आया और बडी भक्ति और नम्रताके साथ प्रथम उसने साष्टांग दण्डवत किया पीछे बुद्धको भोजनके लिये नेवता दिया। बुद्धनेभी उस्के नेवताको मान लिया । वह ठठेरा गरीब था इसलिये उसने मोटाही अन्न बनाया उसके प्रेमके वशमें होकर उसी अन्नको बुद्धने भोजन किया। बुद्धका शरीरतो पहलेसेही बीमारथा बाकीका उसके अन्नने बहुत सा बिगाड कर दिया अर्थात् बुद्धकी बीमारीको उस अन्नने बहुतही बढा

दिया । तब बुद्ध वहांसे कोष्टा नदीके किनारे पर चले गये और उस नदीमें स्नान करके बडे हर्षको प्राप्त हुए वहांसे मलराजकी तरफ जाकर शाल बागमें उन्होंने विश्राम किया वहां आनंदको बुलाकर शिक्षा करने लगे—हे आनंद ! भिक्षुकोंको कभीभी स्त्रीकी तरफ देखना उचित नहीं है यदि रास्तेमें चलते समय कोई स्त्री सामनेसे आजाय तब आंखको बंद कर लेवे या दूसरी तरफसे होकर चला जावे या नीचेकी तरफ आँखको कर लेवे उस स्त्रीकी तरफ मत देखै और न उससे संभाषणही करै । यदि वह स्त्री धर्मके विषयमें कुछ पूछे तव नीचेको देखते हुए ही उसको धर्मका उपदेश करै उसकी आँखसे आँखको न मिलावै तुम अपने ब्रह्मचर्य्यको दृढ रक्खो और अपने सच्चे धर्मोंकी पालनाको सदैव करते रहना और असत्य भाषण कदापि नहीं करना । बुद्ध फिर कहने लगे—हे आनंद ! अब मेरा अंतका समय समीप आगया है । जिस कालमें मेरे प्राण शरीरसे निकल जावें उस समय मेरे मृतक शरीरको नये कपडेमें लपेटकर उसको घृत या तेलमें डुबोकर चिता पर धर कर जलादेना जब जलजाय तब उस राखको बटोर कर किसी जगह स्मरणके लिये गाडकर उसके ऊपर समाधि बनादेना परंतु उस समाधिकी पूजा कभी भी न करना क्योंकि यदि तुम लोग उस राखकी पूजामें लग जाओगे तो तुम्हारे धर्मके मार्गमें बडा विघ्न पड जावेगा अर्थात् फिर तुमसे सच्चे धर्म नहीं बन पडैंगे बल्कि असली धर्मका रास्ता तुमसे छूट जायगा । धर्मके साधनोंका यह बडा भारी प्रतिबंधक है इसलिये स्मरणार्थही उसको बनाना और एक इस वार्ताको भी याद रखना कि यह जीव अपने पुरुषार्थसे ही मुक्तिको प्राप्त हो सक्ता है किसी देवता वगैरहकी सहायतासे या उसकी उपासनासे मुक्तिको कदापि नहीं प्राप्त होसक्ता है ॥

जब इस तरहके उपदेशोंको बुद्ध करचुके तब धीरे २ कमजोर होनेलगे उस कालमें जो राजा और धनीलोग बुद्धके शिष्यथे वह सब आकर जमा होगये और बुद्धके मरनेका अफसोस करने लगे । तब बुद्धने उनसे कहा कि अनित्य शरीरका तुम क्या अपसोस करते हो यह शरीर स्थूल भूतोंका कार्य्य है एक दिन नाशको प्राप्त होकर भूतोंमें ही मिल जायगा मेरे इस शरीरके दर्शनसे तुम अपना कल्याण मत मानना किंतु मेरे उपदेशों पर चलना । और मैंने जो तुमको सच्चे २ धर्मोंका उपदेश किया है उनको मत छोडना फिर थोडे

देरके पीछे एक सुभद्रनामक ब्राह्मण अपने मनके संशयोंको दूर करनेके लिये बुद्धके पास आकर कहने लगा—यहांपर जितने ज्ञानी पुरुष रहते हैं इन सबका एक विश्वास नहीं है बल्कि सबका जुदा २ है। इसी हेतुसे इनका मत भी एक नहीं है तब फिर किसका मत ठीक है? बुद्धने कहा जिसके मतमें सच्चे धर्मोंका पालन करना है उसीका मत ठीक है। जो एकही निराकार निरवयव व्यापक चेतनको ईश्वर मानता है और उसकी आज्ञाको पालन करता है उसीका मत ठीक है। जो सच्चे धर्मोंकी पालना नहीं करता है और ईश्वरको एकदेशी मानता है अर्थात् किसी देशमें बैठाहुवा मानता है उसका मत ठीक नहीं किन्तु त्यागने योग्य है फिर बुद्धने उस ब्राह्मणसे कहा—मैं २९ बरसकी उमरमें केवल धर्मकी तलाशके लिये घरसे निकला और बडे भारी तपोंको मैंने किया और हजारों दु:ख उठाये तब सच्चे धर्मको हासिल किया और धर्म सम्बन्धी जीवनको पाकर फिर निर्वाणपद मैंने हासिल किया है। इस शरीरको त्याग करके अब मैं संसारसे मुक्त होजाऊंगा। बुद्धके उपदेशको श्रवण करके उस ब्राह्मणने भी बुद्धके मतको स्वीकार करके संन्यासको धारण कर लिया और जिस बागमें बुद्ध देवजी ठहरेथे उसी बागमें एक शाल वृक्षके नीचे बुद्धने अपने शरीरका त्याग करदिया उनका संसारसे चला जाना क्या था मानो एक सूर्य्यही अस्त होगये शिष्योंने उनकी आज्ञाके अनुसार उनके शरीरको एक नये कपडेमें लपेटकर उसको घृत में डुबा दिया और चंदनकी चितापर रखके फूँक दिया । जब कि चार पांच दिनमें चिता ठंढी होगई तब राखको बटोर कर राजगृहके पहाडमें उनकी समाधि बनाई गई कोई लोग कहते हैं कि जो बोध गयाका मंदिर वह उनकी समाधी है। बुद्धके मरनेके बाद बुद्धके शिष्योंने बुद्ध मतके प्रचार करनेमें कमर बांधी ॥

इति श्रीमदुदासीनवर्यस्वामिहंसदासशिष्यपरमानंदाख्यविरचितबुद्धजीवन-चरित्रनामकग्रन्थे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इस अध्यायमें उन धर्मोंको दिखाया जावेगा जो कि अपने धर्मलोक सूत्रोंमें बुद्धने कहे हैं जो पुरुष हमारे कहेहुए सच्चे धर्मों पर श्रद्धा कर लेता है उसके चित्तका मनोरथ पूराहो जाता है क्योंकि जो पुरुष जिस कामके करनेमें पूरी कमर बांध लेताहै वह उस कामको पूरा ही कर लेताहै । अर्थात् उसको धर्मके स्वरूपका

ज्ञान भी पूरा २ ही होजाता है जो पुरुष किसी भी जीवकी हिंसाको नहीं करता है वह धार्मिक कहा जाता है या जो पुरुष परोपकार करनेमें कमर कस लेता है वह धार्मिक कहा जाता है जो पुरुष सब जीवोंके आत्माको अपने आत्माके बराबर जानता है वही धार्मिक कहा जाता है और उसी पुरुषके दिलमें सच्चे धर्म असरकर जाते हैं धर्मसम्बन्धी नेत्र उसके खुल जाते हैं और वही पुरुष कर्तव्य और अकर्तव्यका विवेक कर सक्ता है वह पुरुष नित्य और अनित्य सुखोंके स्वरूपोंकोभी जान सक्ता है इसी वास्ते वह नित्य सुखकी प्राप्तिके लिये यत्नकोभी करता है क्रमसे वह प्रजा चक्षु, दिव्य चक्षु और सर्वज्ञता चक्षुको प्राप्त होकर सदाके लिये मुक्त होकर मुक्तलोकमें याने व्यापक चेतनमें मिल जाता है पुरुषको उचित है कि प्रथम पापोंके छोडनेमें और पुण्यके संग्रह करनेमें यत्न करै पापोंसे चित्त मलीन होता है और पुण्योंसे चित्त शुद्ध होता है चित्तकी शुद्धिका नामही प्रसाद है क्योंकि वह चित्त शुद्ध होनेसे बडा प्रसन्न होता है इसी हेतुसे चित्तकी शुद्धिका नामही प्रसाद है और चित्तकी प्रसन्नताभी धीरे २ ही बढती है अर्थात् पुरुष जितना २ पुण्य कर्मोंको बढाताजाता है उतना २ ही चित्त अधिक शुद्ध होताजाता है अर्थात् चित्तकी शक्तियें बढतीजातीहै । क्योंकि जितना चित्त शुद्ध होता जाताहै उतनी २ चित्तकी मलिनता निकलती जातीहै । येही कारण चित्तकी शक्तियोंके बढनेकाहै प्रातःकालमें ज्यों २ सूर्य्यका प्रकाश क्रमसे बढता जाताहै त्यों २ अंधकार क्रमसे कम होता चला जाता है । जैसे प्रकाश तमको दूर करता हैं तैसे ही चित्तकी शुद्धि भी चित्तकी मलिनताको दूर करती है और चित्तमें रज तमकी अधिकता होनेसे चित्त अशुद्ध कहा जाता है । सत्व गुणकी अधिकता होनेसे चित्त शुद्ध कहा जाताहै वास्तवमें चित्त स्वभावसे शुद्धही है । अनेक प्रकारकी जो वासना चित्तमें भर रहीहैं उन्होंही करके चित्त अशुद्ध बन रहाहै वासनाके दूर होजानेसे चित्त फिर ज्योंका त्यों अर्थात् शुद्धही हो जाताहै वह वासना ध्यानके बलसे सब नाश होजातीहै और उस पुरुषके चित्तमें हर्ष होताहै अर्थात् महात्मा पुरुषोंको देखकर चित्तमें हर्ष उत्पन्न होताहै किसीको भी ईर्षा नहीं होतीहै । उसी पुरुषकी जगत्में प्रतिष्ठा होतीहै । यदि च विरक्त पुरुषको संसारियोंकी प्रतिष्ठा करनेसे कुछभी लाभ नहीं होताहै तो भी उससे संसारको लाभ तो अवश्य होताहै । क्योंकि प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध पुरुषके पास साधारण लोग सब

ज्ञानका उपदेश लेनेको आतेहैं। और आत्मज्ञानको प्राप्त होकर संसारसे फिर मुक्त होजातेहैं इसलिये संसारमें प्रसिद्ध होकर उपकार करना भी एक वडा भारी धर्महै। सब पुरुषोंके साथ तुल्य प्रेम करनेका नामही प्रीतिहै। यह साधारण प्रेम भी चित्तकी शुद्धिकोही करताहै। जिस पुरुषके चित्तमें सब जीवोंके साथ प्रेम उत्पन्न हो जाताहै उस पुरुषके चित्तका द्वेष निकल जाताहै और स्वार्थताभी दूर होजातीहै। सबको अपने तुल्य जाननेसे परोपकारमें भी प्रवृत्ति होतीहै फिर पुरुष जितना २ परोपकारमें अधिक प्रवृत्त होता जाताहै उतना २ ही उसके हृदयमें शुद्ध धर्मका प्रकाश भी उदय होता जाताहै और कपट छलादिक भी तिसके चित्तसे निकल जातेहैं और उदारता बढती जाती है। बुद्धका अर्थ ईश्वर है और बुद्ध नाम मुक्तस्वरूप सर्वज्ञ योगीका भी है प्रथम अल्पज्ञ-ताको दिखाकर फिर सर्वज्ञताके अर्थको दिखावेंगे। आत्मा प्रथम मनके साथ जुडता है फिर मन इन्द्रियके साथ जुडताहै, इन्द्रिय अर्थके साथ जुडताहै तब सब पदार्थोंका ज्ञान होताहै किसी पदार्थके संयोगसे सुख उत्पन्न होताहै और किसी पदार्थके संयोगसे दुःख उत्पन्न होता है जिस पदार्थके सम्बन्धसे एक कालमें दुःख उत्पन्न होताहै फिर उसी पदार्थके सम्बन्धसे दूसरे कालमें सुख उत्पन्न होताहै इसीसे जाना जाता है कि पदार्थोंके संयोगसे जो दुःख सुख उत्पन्न होते हैं वह सब अनित्य हैं और जिन इन्द्रियों द्वारा सुख दुःखका ज्ञान होता है वह ज्ञानेन्द्रिय कहे जाते हैं चक्षु इन्द्रिय करके पुरुष रूपको जान लेता है श्रोत्र इन्द्रिय द्वारा पुरुष शब्द को सुनता है। घ्राण इन्द्रियसे गंधको ग्रहण करता है। रसना इन्द्रिय करके रसको लेता है त्वक् इन्द्रिय करके स्पर्शको मालूम करता है बिना इन्द्रियोंके पुरुषको बाहरके किसी पदार्थकाभी ज्ञान नहीं होताहै। फिर जिस विषयको अपने अनुकूल जानता है उसके संपादन करनेकी इच्छा करता है। यदि वह विषय इसको मिलजावें तो सुखी होता है यदि वह न मिलैं तो दुःखी होता है। इसी तरह जिस वस्तुके त्यागकी इच्छा करताहै यदि वह छूट जावें तब तो सुखी होता है नहीं तो दुःखी होता है सुख और दुःख दोनोंको मनसे अनुभव करता हुआ फिर रागद्वेष रूपी तृष्णाको उत्पन्न करता है और उसके बंधनमें अपनेको बांधता है क्योंकि रागद्वेषसे उन कर्मोंको करता है जिनसे फिर इष्ट अनिष्ट फलको प्राप्त होता है। फिर वासना भावना आशयको दृढ करके उनके अनुकूल

चौरासी लाख योनियोंमें शरीरोंको धारणही करता रहता है । जिस योनिके शरीरको धारण करता है उसीमें व्याधि वृद्धावस्था और मृत्यु करके संयुक्त होकर संसारचक्रमें घूमता है और कभी अपनेको बालक कभी युवा और कभी बूढा मानता है और कभी अपनेको जीता और कभी मरता मानता है फिर अपने धन संपत्ति आदिकोंकरके युक्त और कभी दारिद्रता आदिकों करके संयुक्त देखता है । इनहीं हेतुओंसे जीव अल्पज्ञ कहा जाता है इसकी अल्पज्ञता प्रत्यक्ष प्रमाणसे दूर नहीं होती क्योंकि सूर्य्यादिकोंकी सहायतासे इसको पदार्थोंका प्रत्यक्ष होता है बिना उनकी सहायतासे नहीं होता है । शब्दसे भी इसकी अल्पज्ञता दूर नहीं होती है क्योंकि वेद शास्त्रको सुनके भी किसी पदार्थका यथार्थ अनुभव नहीं कर सक्ताहै ऐसी अत्यन्त अल्पज्ञतामें डूबाहुआ कौन पुरुष है जो सर्वज्ञताको हासिल करसके जो पुरुष सर्वज्ञता पानेके लिये यत्न नहीं करता है वह अपनी विद्या और आयुको व्यर्थही खोता है जो पुरुष अपनी स्वभावकी सर्वज्ञता प्राप्त करनेके लिये यत्न करता है वह अपने खोयेहुए अनंत धनको पाकर सदैव आनंदसे रहता है जैसे परमात्मामें अनंत शक्तियां हैं तैसे जीवात्मामें भी अनन्त शक्तियाँ हैं जीवको अपनी शक्तियोंका विस्मरण हो रहा है, यत्न करके जीवभी अनंत शक्तियोंवाला होकर मुक्त होजाता है और दया करनेका नामही करुणा है करुणासे अहिंसा उत्पन्न होती है जिस पुरुषमें दया उत्पन होजाती है वह फिर किसी जीवकीभी हिंसा नहीं करता है किंतु जिस जीवको दुःखी देखता है उसके उपकार करनेमें प्रवृत्त होता है जिस कालमें जिस पुरुषके मनमें हर्ष उत्पन्न होताहै वह अभ्यास करनेमें प्रवृत्त होता है और जिसके मनमें खेद होता है वह अभ्यास कदापि नहीं कर सक्ता है और न वह शुभ कर्मोंकोही कर सक्ता है बिना शुभ कर्मोंके अभ्यासकी सिद्धि कदापि नहीं होती है इस लिये येन केन उपाय करके पूर्ववाले गुणोंको अपने मनमें उत्पन्न करना चाहिये । उपेक्षासे विषय भोगोंमें घृणा उत्पन्न होती है । जिस पुरुषके मनमें उपेक्षा निवास करलेतीहै उसको विषय भोगोंसे अति घृणा उत्पन्न होजाती है ऐसा उपेक्षाका फल है मैत्री करुणा मुदिता उपेक्षा इन चारोंका नाम ब्रह्मविहार है इन चारोंमें स्थित होकर योगी ब्रह्म विहारको करता है । और अभ्यासका मुख्य कारण ब्रह्मचर्य्य है जो ब्रह्मचर्य्यमें दृढ रहता है वह सदैव सुखकोही प्राप्त होता है ब्रह्मचर्य्यको

दृढ करनेसे आदिमें और मध्यमें तथा अन्तमें पुरुषको सुखही प्राप्त होताहै और ब्रह्मचर्य्यही मोक्षका भी साधन है, इस लिये अत्यन्त शुद्ध ब्रह्मचर्य्यमें स्थित होना चाहिये यही बुद्ध भगवानका मुख्य उपदेश है और ब्रह्मचर्य्यके दो अर्थ हैं एक तो संस्कार विधिके पश्चात् गुरुकुलमें निवास करके विद्याके संपादनमें चित्तको लगाना और अधर्मका त्याग करके धर्ममें स्थित होकर गुरुकी आज्ञामें रहकर विद्याको प्राप्त करना। दूसरा अर्थ यह है कि पुरुष विषयोंसे मनको हटाकर ईश्वरकी प्राप्तिका साधन करता है वह भी ब्रह्मचारी कहा जाता है चाहे वह नैष्ठिक ब्रह्मचारी हो चाहे वह वानप्रस्थहो चाहे संन्यासी हो, क्योंकि वह ब्रह्मकी प्राप्तिके लिये आचरण करता है इसलिये वह भी ब्रह्मचारी ही कहा जाता है ब्रह्मचर्य्यका फल बडा भारी है। इसलिये ब्रह्मचर्य्यकोही सब साधनोंमें प्रधान माना गया है क्योंकि ब्रह्मचर्य्यके सिद्ध होनेसे सब कार्य्य सिद्ध होजाते हैं। एक स्थानमें एक सुंदर युवा अवस्थावाली स्त्री बैठी हो और उसके समीपमें एक उसका भाई दूसरा पिता तीसरा बेटा चौथा पति बैठा हो तब वह पहिले वालोंके चित्तमें कामको उत्पन्न नहीं करसक्ती है क्योंकि भाईकी उसमें भगिनी बुद्धि होती है पुत्रकी माताबुद्धि होती है पिताकी उसमें कन्याबुद्धि होती है इसलिये इन तीनोंका संकल्प कामको उत्पन्न नहीं कर सक्ता है। केवल पतिको वह काम उत्पन्न करती है क्योंकि उसकी उसमें स्त्रीबुद्धि होती है। यदि स्त्रीमें दोष होता या नेत्रोंमें दोष होता तब उसके समीप बैठनेसे चारोंको काम उत्पन्न होजाता परन्तु होता नहीं है। इसीसे जाना जाता है कि नतो पदार्थमें दोष है और न इन्द्रियोंमें दोष है, दोष केवल चित्तके बुरे संकल्पमें है। इसी वास्ते जब कि पुरुष किसी विषयके समीप जाता है तब पहले चेष्टा चित्तमें होती है फिर शरीर और इन्द्रियोंमें होती है इसलिये चित्तकी चेष्टाओंको रोकना उचित है। चित्तकी चेष्टाओंके रोकनेका नामही योग है। जब पुरुष चित्तके रोकनेमें प्रवृत्त होता है तब उसके चित्तका रोकना अति कठिन मानाजाता है। परन्तु वैराग्य और अभ्यासके बलसे धीरे २ चित्तकी वृत्तियें रुकने लग जाती हैं। चित्तके रोकनेका यह क्रम है—प्रथम पुरुष धीरे २ चित्तमेंसे पापके संकल्पोंको निकाल कर पुण्यके संकल्पोंको बसावे उन पुण्यके संकल्पोंको भी दूसरोंके ऊपर उपकार करनेके लिये बसावे।

फिर वैराग्य विचार और सत्संगद्वारा वह संकल्प भी शान्त हो जायँगे। तब चित्त निःसंकल्प होजावेगा अत्यन्त ब्रह्मचारी बनकर योगको सिद्ध कर सक्ताहै, इसी हेतुसे ब्रह्मचर्य तीनों कालोंमें सुखको देनेवाला है यह मुमुक्षुके लिये अवश्य कर्तव्य है। और योगके विरोधी पदार्थोंका सदैव त्याग करता रहे और योगके अनुकूल पदार्थोंका ग्रहण भी करतारहे और योगके अभ्यास करनेमें चित्तको लगाताही रहे। इन्द्रियोंको अपने काबूमें करके चित्तको आत्मामें स्थिर करै और पुनः २ इस वार्ताका ख्याल करता रहे कि यह शरीर पृथिवी जल तेज वायु आकाश, रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र तथा मल मूत्रका बना हुआ है। यह शरीर आत्मा नहींहै। आत्मा शरीरसे विलक्षण और अत्यंत शुद्धहै शरीर अत्यंत अशुद्ध है। संसारके सब पदार्थ अनित्यहैं। केवल एक आत्माही नित्य है। मनके संकल्पोंके त्यागका नामही मुख्य संन्यास है और योग ही मोक्षका मार्गहै। जो पुरुष संसारके संपूर्ण विषय भोगोंको अनित्य और अपवित्र जानताहै वह विषय भोगोंकी प्राप्तिके लिये अनर्थोंको नहीं करता है। अभ्यास और वैराग्य करके जिस पुरुषकी अविद्या दूर होजाती है उसको पदार्थोंके स्वरूपका पूरा २ ज्ञान होजाताहै अर्थात् नित्य पदार्थको नित्य जानताहै और अनित्य पदार्थको अनित्य जानताहै। आत्माको नित्य और पवित्र जानता है। आत्मासे भिन्नको अनित्य और अपवित्र जानताहै। लज्जा होनेसेभी चित्तके दोष दूर होजाते हैं। सो लज्जा दो प्रकारकी है एक बाहरकी दूसरी भीतरकी जिस पुरुषमें बाहरसे लज्जा होतीहै वह बाहरके अर्थात् शारीरिक पापोंसे बचा रहताहै, जिसमें अन्तरकी लज्जा होतीहै वह अन्तर मानसिक पापोंसे बचा रहताहै। जिसमें दोनों प्रकारकी लज्जा होतीहै वह दोनों प्रकारके पापोंसे बचा रहताहै। जिसमें संतोष होताहै वह किसीके आगेभी दीनताको नहीं करताहै। योगकी भावना करनेसे वासनायें निवृत्त होने लगतीहैं और वासना संस्कार आश्रय ये सब पर्याय शब्द हैं। पुरुष जो २ कर्म करता है उन कर्मोंसे संस्कार उत्पन्न होते हैं उनहीं संस्कारोंसे आगे जन्मांतरमें फल उत्पन्न होते हैं। अनेक जन्मोंके संस्कार चित्तमें भरे हुए चले आते हैं, वह विना योगाभ्यासके निवृत्त नहीं होते हैं। बुद्ध, संन्यासी, ज्ञानी और अहिंसा आदिक धर्मोंकी जो पुरुष शरण लेता है उस पुरुषके तीन प्रकारके

दुःखोंका नाश होजाता है। धर्मको जाननेवालेका नाम धर्मज्ञ है। जो पुरुष धर्मज्ञ बनता है वह सर्वदा परमार्थ सम्बन्धी कर्मोंको ही करता है। जो पुरुष धर्मोंके करनेके योग्य कालको जानता है वही पुरुष ठीक २ कालमें धर्मोंके करनेके लिये भी यत्न करता है, उसीको योगबलसे आत्माका साक्षात्कारभी होता है। जो पुरुष अपने मानको तोड देता है वही पुरुष ज्ञानकी भूमिकाको पहुँच जाता है। जिस पुरुषके सांसारिक बन्धन चित्तसे टूट जाते हैं उसको कोई भी सांसारिक कार्य करना बाकी नहीं रहताहै। सांसारिक कार्योंके करनेका अभाव होनेसे परमार्थ सम्बन्धी धर्मोंको वह पूर्णरीतिसे कर सक्ता है। इसलिये सांसारिक बन्धनोंका तोडना आवश्यक है। जो पुरुष किसीसे भी द्रोह और वैरभाव मनमें नहीं रखता है उस पुरुषकी जीवमात्रसे समान प्रीति होजाती है। शरीरमें अहंभाव और ममता होनेका नाम ही मोह है। जिसके मनमें मोह उत्पन्न नहीं होता है उस पुरुषका अज्ञान भी दूर होजाता है। जो पुरुष धर्मको ही अर्थ जानता है और सब कर्मोंको अनर्थ कारक जानता है वह पुरुष धर्मकी ओर ही चलता और किसी भी कर्मकी ओर वह नहीं चलता है। जो पुरुष धर्मकी कामनाको मनमें रखकर ज्यों २ धर्मकी ओर चलता है त्यों २ तिसका चित्त शुद्ध होजाता है। जो पुरुष ज्ञानके उपदेशक शास्त्रोंका विचार करता है उसीके मनमें आवागमनसे छुडानेवाले धर्म उत्पन्न होते हैं। जिस पुरुषको सब पदार्थोंके नाम और रूपका यथार्थ ज्ञान होजाता है वह पुरुष सब लौकिक पदार्थोंको मिथ्या जानकर उनसे चित्तको हटाता है और आत्माकी ओर लग जाता है। रूप १ वेदना २ संज्ञा ३ संस्कार ४ और विज्ञान ५ इन पांचोंका नाम पांच स्कंधहैं। इनके स्वरूपका जो वास्तव ज्ञान है वह सब दुःखोंके वास्तव स्वरूपके ज्ञानको उत्पन्न करता है। और दृश्यमात्र पदार्थका नाम रूप है। जो नेत्रोंसे देखा जावे उसे दृश्य कहते हैं और उसीका नाम रूप भी है। मनमें जो सुख दुःखका अनुभव होताहै उसे वेदना कहतेहै और लौकिक जितने सुख हैं वह भी सब दुःखसे मिले हुए ही हैं। इसलिये दुःखमेंही गिने गयेहैं। शब्दमात्रका नाम संज्ञा है। जितने शब्द हैं वास्तवमें सुख देनेवाली समाधिके बाधकहैं। इसलिये ये सभी दुःखरूप ही गिने जातेहैं। मनकी वासनाओंका नाम संस्कार है। यह संस्कारही जन्म मरणको उत्पन्न करतेहैं इसीसे ये भी दुःख रूपही हैं। सर्वज्ञताके न होनेपर पदार्थोंके स्वरू-

पका यथार्थ ज्ञान नहीं होताहै, तभी यह पुरुष पदार्थोंके मिथ्याज्ञानकी कल्पना करताहै । अविद्यासे उत्पन्न हुए जितने मिथ्या ज्ञान हैं उनका नाम विज्ञानहै, यह भी दुःख रूप ही हैं । इन पांचों कंधोंके विचारमें जब पुरुष निपुण हो जाताहै तब संसारके पदार्थोंको दुःखरूप जानताहै और उस दुःखके दूर करनेके उपायको भी करताहै । पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश तथा विज्ञान इन छःका नाम धातु है । पहले पांच तत्त्व महाभूत नाम करके प्रसिद्ध हैं और विज्ञान महत्तत्वको कहतेहैं, जिस्का नाम बुद्धि है । जैसे पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश ये पांच तत्त्व त्यागनेके योग्यहैं तैसे महत्तत्त्वभी त्यागनेके योग्य हैं । विज्ञानकी उत्पत्ति अविद्यासे लिखीहै इसी वास्ते विज्ञान अविद्यारूप बुद्धिका नाम है । श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना, घ्राण और मन इन छः इन्द्रियोंके नाम आयतन है । इन्हींके द्वारा बाह्य वस्तुओंका ज्ञान होताहै सो इनको इनके विषयोंसे रोककर हटालेनाही अच्छाहै अर्थात् इन छः इन्द्रियोंको विषयोंसे हटा लेनेसे ही अष्टांग योगकी सिद्धि होती है । कोई पदार्थ भी उत्पन्न नहीं हुआ है किंतु सब पदार्थ अपने स्वरूपमें स्वभावसे ही शुद्ध स्थित हैं । ऐसी भावनाके अभ्यास करनेसे शांति प्राप्त होजाती है । फिर किसी भी वस्तुकी प्राप्तिकी इच्छा चित्तमें नहीं रहती है । वस्तु चाहे किसी दशामें भी वर्तमान हो परंतु जिस प्रकारकी भावना उसमें की जायगी उसी प्रकारका फल भी प्राप्त होगा । जैसे स्वप्नमें स्त्रीका अभाव भी है तब भी चित्तकी भावना होनेसे इसी शरीरसे वीर्यपात होजाताहै । और जैसे अंधकारमें पडीहुई रस्सीमें सर्प भावना करनेसे शरीरमें कम्प उत्पन्न होजाता है, इसी प्रकार विषादिक घातक पदार्थोंमें भी शुद्ध भावना करनेसे शुद्ध ही फल मिलता है । इसी हेतुसे संसारके सब पदार्थोंमें जो पुरुष शुद्ध भावनाको करता है उस पुरुषका चित्त राग द्वेषसे रहित होकर शुद्ध होजाता है ।

सिद्धि नाम ऋद्धिका है, जिस पुरुषको सिद्धि प्राप्त होजाती है उसका शरीर लघु और अपने वशीभूत होजाता है । आलस्य नष्ट होजाताहै । इसी प्रकार उसका चित्तभी लघु होजाता है और सब वस्तुओंमें रागद्वेष रूपी स्पृहा भी उसकी दूर होजातीहै और समाधिके अभ्यास करनेकी शक्तिभी उसमें होजाती है । यह सब सिद्धि योगके बलसे योगीको प्राप्त होजाती हैं । योगकेही बलसे

योगी आवागमनसे छूटकर मुक्तभी होजाता है । समाधिका बल बढनेसे मनके सब संकल्प विकल्प शान्त होजातेहैं तब चित्त भी एकाग्र होजाता है । जो पुरुष चित्तकी एकाग्रतारूप समाधिका अभ्यास करता है उसके सब पदार्थ समान अनुकूल होजाते हैं योगी सबको समान जानकर समदृष्टिका पालन करता है फिर उसका किसीसे वैर विरोधभी नहीं रहता है और जबतक चित्तमें क्रोध रहता है तबतक समाधि प्राप्त नहीं होती है समाधिको केवल क्रोध और द्वेष रोकता है क्रोधसे जब चित्त रहित होजाता है तब समाधिकी प्राप्ति होजातीहै जिस कालमें चित्त किसी व्यापारमें स्थित न होवे किंतु व्यापारसे रहित होकर शुद्ध स्वरूपमें एकाग्र होकर स्थित होजावै तब ऐसी स्थितिको क्षण कहते हैं । ऐसी स्थितिके बाधक जो विघ्न हैं वह सब शीलके अभ्याससे नष्ट होजातेहैं और दुष्ट शीलवाले पुरुष उसके अत्यन्त श्रेष्ठ शीलको देखकर अपने दुष्ट स्वभावका त्याग भी करदेते हैं सब जीवोंमें समान प्रीति करनेका नाम शुद्ध शीलता है । विषम दृष्टि करनेका नाम दुष्ट शीलता है । दूसरे पुरुषके अपराधको क्षमा करनेका नामही शांति है । यह क्षांति मनके मान मद और दर्पादि दोषोंको दूर करती है । मान मदवाले पुरुष उसकी शांतिको देखकर अपने मान मदादिकोंका त्याग कर देतेहैं । दूसरे पुरुषोंके अपराधोंको सहारना और उनसे द्रोह न करना यह शांतिका फल है मनका द्रोह निकल जानेसे मन शीघ्र ही शुद्ध हो जाता है और जो पुरुष वीर्यवाला है अर्थात् अत्यन्त उत्साह और पुरुषार्थवाला है वह चित्तके निरोधरूपी योगको सिद्ध कर लेता है और उसके वीर्यको देखकर संसारकी खोटी वासनाओंमें फसेहुए जीवभी पुरुषार्थी बनकर धर्ममें प्रवृत्त होजातेहैं । किसी वस्तुमें चित्तकी वृत्तियोंका धारा प्रवाह रूप करनेका नामही ध्यान है ध्यानका अभ्यास करनेसे सिद्धि प्राप्त हो जाती है । ध्यान करते २ चित्त जिस कालमें वृत्तियोंसे शून्य होजाता है उस कालमें सर्वज्ञता होजाती है, तब चित्त भी अवश्य वृत्तियोंसे शून्य होजाता है, इसलिये चित्तकी शून्यताका और सर्वज्ञताका नित्य सम्बन्ध है । जिसको सर्वज्ञता प्राप्त होजाती है तिसकी अविद्या और तमोगुण समग्र नाशको प्राप्त होजाता है तब चित्तके संपूर्ण संकल्प विकल्प भी दूर होजाते हैं । जो पुरुष समाधिके उपायोंमें कुशल होजाता है वही दूसरोंको भी समाधिके उपायोंको दिखा सक्ता है । दान देना,

प्रिय वचन बोलना, धर्मका आचरण करना, सब जीवोंको समान जानना इन चारोंका नाम संग्रह वस्तु है । जो पुरुष इन चारोंको करता है अनेक प्राणी उसके सहायक होजाते हैं और उसके उपदेशको सुनते हैं । सत्य धर्म, योग धर्म, सर्वज्ञता धर्मका परिग्रह करना इसीका नाम सत्यधर्म परिग्रह है । यह सब लोगोंको दूर करता है सब जीवोंको वह सुख देनेवाला बनजाता है । दान १ शील २ क्षांति ३ वीर्य ४ ध्यान ५ प्रज्ञा ६ बल ७ उपाय ८ प्रणिधि ९ ज्ञान १० ये दश बुद्धके बल हैं योग्य और अयोग्य वस्तुके ज्ञानमें बुद्ध कुशल है हीन ज्ञानसे रहित है यह प्रथम बल है १ बुद्धको भूत भविष्य और वर्तमान तीनों कालका ज्ञान है. सब कर्मोंकी उत्पत्ति, उनके हेतु तथा फलका भी ज्ञान है, यह दूसरा बल है २ बुद्धको चित्त, संपूर्ण इन्द्रियोंकी शक्ति और गतिका भी ज्ञान है, यह तीसरा बल है ३ बुद्ध पृथिवी आदि सब तत्त्वोंमें और संपूर्ण लोकोंमें भी प्रवेश करना जानता है ४ बुद्धको संपूर्ण अधिमुक्ति और विमुक्तिका ज्ञान है । संदेहसे रहित श्रद्धा युक्त चित्तकी दशाका नाम अधिमुक्ति है और वासना रहित चित्तकी दशाका नाम विमुक्ति है ५ संपूर्ण अविद्या आदि दुःखोंसे बचानेवाली बुद्धिका ज्ञान बुद्धको है ६ बुद्धको ध्यान और विमोक्ष समाधि तथा समापत्तिका ज्ञान भी है ७ बुद्धको असंख्यात पूर्व जन्मोंका स्मरण है वह अपने और दूसरे जीवोंके संपूर्ण वृत्तांतको भी जानता है ८ सर्व प्रकारके आवरणों से रहित संपूर्ण ब्रह्मांडके देखनेका ज्ञान भी है ९ बुद्ध सर्वज्ञताको पाकर मोक्षका साक्षात्कारकर वासनाकी निवृत्तिमें स्थित होकर संपूर्ण बंधनोंसे मुक्त है १० इसी वास्ते बुद्धको दश बल और तथागत भी कहतेहैं । जिस पुरुषको पूर्णरीतिसे शान्ति प्राप्त होजाती है उसीको तथागतकी समाधिका लाभ भी होजाता है । सत्यका नाम तथा है और ज्ञानका नाम गत है सो पूर्णरीतिसे जिसको सत्य ज्ञात होजाता है उसीको तथागत कहते हैं । सो सर्वज्ञ योगीका नाम तथागत है उसीको बुद्ध भी कहतेहैं । तथागत बुद्ध सर्वज्ञ योगी जिस समाधिमें विहार करतेहैं उनका नाम तथागत समाधिहै, पांच चक्षु हैं मांस चक्षु १ धर्मचक्षु २ प्रज्ञाचक्षु ३ दिव्य चक्षु ४ सर्वज्ञता चक्षु ५ । पुरुषको जितना ज्ञान मांसकी इन्द्रियोंसे होता है उतने ज्ञानको मांस चक्षु कहते हैं धर्मका आचरण करनेसे धार्मिक पुरुषको जितना ज्ञान धर्म अधर्म आदि विषयमें उत्पन्न होजाता है उसको धर्मचक्षु

कहते हैं प्रज्ञासे जो अदृष्ट पदार्थोंका ज्ञान होता है उसको प्रज्ञा चक्षु कहते हैं। और देवताओंके समान चक्षुको दिव्य चक्षु कहते हैं । सर्वज्ञताको पानेसे जो ज्ञान होता है उसको सर्वज्ञता चक्षु कहते हैं। यह सर्वज्ञता चक्षु ज्ञानकी परम काष्ठा है। इससे आगे और ज्ञान नहीं है इन्हीं पांच चक्षुवोंका नाम ज्ञानकी पांच भूमिभी हैं। और मांस चक्षुसे जो बाह्य वस्तुओंका ज्ञान होता है वह अल्पज्ञान है क्योंकि वह प्रकाशकी सहायतासे देखसक्ती है और धर्म चक्षुसे दस प्रकारकी ज्ञानशक्ति धार्मिक पुरुषमें होजाती है। १ विचार शक्ति। २ भिन्न भिन्न मनुष्योंकी बुद्धिको विचारनेकी शक्ति । ३ मोक्षके लिये भिन्न २ साधनोंके जाननेकी शक्ति । ४ सब पुरुषोंके आचारादिकोंके जाननेकी शक्ति। ५ पुण्य कर्म और पाप कर्मोंके फलको जाननेकी शक्ति । ६ सांसारिक दुःखोंके दूर करनेकी शक्ति ७ ध्यानकी उत्तमताके जाननेकी शक्ति। ८ पूर्व जन्मोंके वृत्तांत स्मरण होजानेकी शक्ति। ९ धर्म चक्षुकी शुद्धि। १० दुःखोंकी निवृत्ति और सिद्ध पुरुषोंकी प्रज्ञा चक्षुकी प्राप्ति। प्रज्ञा चक्षुसे अदृष्ट विषयोंका बोध होता है योगियोंको दिव्य चक्षुकी भी प्राप्ति होजाती है। इस चक्षुकी प्राप्ति होजाने पर अनेक प्रकारकी सिद्धियें योगीको प्राप्त होजाती हैं, सर्वज्ञ योगीको बुद्धि चक्षु प्राप्त होजाती है। बुद्धि चक्षुसे सर्व प्रकारका पूर्ण बोध होजाता है। वह पूर्ण बोध अठारह प्रकारका है, वर्तमान कालका पूर्ण बोध १ भूत कालका पूर्णबोध २ भविष्य कालका पूर्ण बोध ३ मायावी पदार्थोंका पूर्ण बोध ४ मनके कर्मोंका पूर्ण बोध ५ शब्दकृत माया आदि फलका पूर्ण बोध ६ संकल्पोंके नाशका बोध ७ शरीरादिकोंका पूर्णबलट शुद्ध स्मृति ९ पूर्ण समाधि १० पूर्ण सर्वज्ञता ११ मुक्त पुरुषोंकी दशाका पूर्ण बोध १२ निरोध और अनिरोधका पूर्ण बोध १३ सर्व पदार्थ स्वभावसे अनुत्पन्नहैं इस अनुत्पादका पूर्ण बोध १४ स्मृतिकी पूर्ण नित्यता १५ चित्तकी शक्तियोंकी पूर्ण नित्यता १६ पूर्ण निर्भयता १७ विचारेहुए संकल्प विकल्पोंका परिणत न होना १८ यही अठारह प्रकारका पूर्ण बोध कहा जाता है। और धारणा करने तथा स्मरण रखनेकी शक्तिका नाम धारणा शक्तिहै धारणाकी प्राप्ति होजानेसे पुरुष सब बुद्ध पुरुषके उपदेश कियेहुये वचनोंको धारण कर सक्ता है और स्मरणभी रख सक्ता है और धर्मके सब वचनोंको जब पुरुष धारण कर

सक्ता है तब उनके अनुकूल आचरण करनेमें प्रवृत्त होता है इसलिये धारणाका लाभ धर्मका ही लाभ है जिस वस्तुका प्रसंग होवै उसके विषयमें जिस पुरुषको नवीन २ अनुभव तुरंत होजाते हैं उसको प्रतिभान कहते हैं। प्रतिभानका लाभ होजानेसे सब जीवोंको अच्छे २ धर्म वचन और धर्मके उपदेश सुनाकर संतुष्ट करता है फिर वह व्याख्यानके कालमें योग शब्दोंका उपदेश कर सक्ता है उसके वचनोंसे सब जीव तुष्ट होते हैं। अविद्या आदि बारह पदार्थोंको क्रमसे एक दूसरेसे उत्पन्न हुआ जानकर यह चित्तमें शांति कर लेता है कि यह सब अविद्याके ही कार्य्य हैं और अविद्याके निरुद्ध होजानेसे सभी निरुद्ध होजाते हैं, १ अविद्या २ संस्कार ३ विज्ञान ४ नामरूप ५ षडायतन ६ स्पर्श ७ वेदना ८ तृष्णा ९ उपादान १० भाव ११ जाति १२ जरा मरण शोक परिदेव दुःख दौर्मनस्य अपाय आशा। येही अविद्या आदि बारह पदार्थ हैं इन सबका आदि कारण अविद्या ही है अविद्याके होनेसे संस्कारोंकी प्रतीति होती है जबतक चित्तमें संस्कार हैं तबतक अविद्याकी स्थिति बनी रहती है और संस्कारोंके होनेपर नामरूप भी भासता है विज्ञानके होने पर नाम रूपभी होता है नामरूपके होने पर षट् आयतनकी प्रतीति भी होती है षडायतनके होने पर विषयोंका स्पर्शभी होता है स्पर्शके होनेपर सुख दुःखकी प्रतीति भी होती है और वेदनाके होने पर राग द्वेषकी प्रतीतिभी होती है तृष्णाके होने पर उपादानकी प्रतीति भी होती है। विषयोंके ग्रहण करनेका नाम उपादान है। उपादानके होने परही संसारकी प्रतीति होती है, उसके होनेपर जाति अर्थात् जन्मकी प्रतीति होती है और जन्मके होने पर बुढापा मृत्यु शोक रोदन दुःखादिकोंकी प्रतीति होती है। इस रीतिसे इन सब दुःखोंकी उत्पत्तिका कारण अविद्या ही है। एक अविद्याके निरोध करनेसे संपूर्ण दुःखोंकी निवृत्ति होजाती है जिस कालमें अविद्याका निरोध पूर्णरीतिसे होजाता है उसी कालमें सर्वज्ञताकी प्राप्ति भी होजाती है ऐसी भूमि पर जब कि पुरुष पहुँच जाता है तब फिर वहांसे नीचेको कदापि नहीं गिरता किन्तु मुक्त होजाता है अविद्याके दूर होजानेसे पुरुष और प्रकृतिके संयोगका अभाव होजाता है प्रकृति और पुरुषके संयोगके नाशका नाम ही कैवल्यहै कैवल्यका अर्थ केवलहै प्रकृतिका पुरुषके साथ

जो संयोग है उसके संयोग छूटजानेसे पुरुष केवल अपने स्वरूपमेंही स्थित होजाता है, ऐसी दशामेंही वह मुक्त कहा जाता है, संक्षेपसे बुद्धके धर्मोंका निरूपण होचुका।

इति श्रीमदुदासीनवर्यस्वामिहंसदासशिष्यपरमानन्दाख्यविरचित-
बुद्धजीवनचरित्रनामकग्रंथेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

जिस कालमें इस देशमें बुद्धके सच्चे धर्मोंकी चर्चा फैली और बुद्धके उपदेशोंने सब लोगोंके दिलोंपर असर पैदा किया और लोगोंने भी पुराने धर्मोंको छोडकर बुद्धके धर्मोंको अंगीकार कर लिया उस कालमें चीन वगैरह देशोंमें भी बुद्धकी सचाईकी चर्चा फैली और धीरे २ चीन राजाके कानमेंभी यह खबर पहुंची कि हिन्दुस्थानमें इस कालमें एक बुद्ध गौतम बडे महात्मा योगिराज हैं, जिनके सच्चे धर्मोंको सुनकर करोडों आदमियोंकी मूर्खता जाती रही और वे शान्तिको प्राप्त होगये हैं। तब चीनके राजाने बुद्धको लेजानेके लिये अपने एक वजीरको हिन्दुस्थानमें भेजा उन दिनोंमें बुद्ध राजगृहीके पर्वतमें रहते थे और मगध देशकी राजधानी भी उस समय राजगृही थी क्योंकि वहां एक बडा भारी नगर बसता था, इस कालमें तो वहां एक बडा भारी जंगल है क्योंकि संसारकी सदा सब वस्तु बदलती रहती हैं जो पहले जंगल होता है वह फिर एक कालमें नगर होजाता है जो नगर होता है वह फिर जंगल होजाताहै राजगृहीके पर्वतमें अबभी कहीं २ पुरानी बस्तीके निशान मिलते हैं। जब चीनके राजाका वजीर बुद्धके पास पहुँचा और उनका दर्शन उस्को हुआ तब उनकी शान्तमूर्तिको देखकर वह बडा प्रसन्न हुआ फिर जब बुद्धके साथ उस्की बातचीत हुई और उनके उपदेशोंको उसने सुना तबतो वह मोहितही होगया और बुद्ध भगवान्‌का वह चेला बन गया। थोडे दिन बुद्धके पास रहकर उनसे उसने अपने आनेका निमित्त कहा और चीनके राजाकी तरफसे उसने बहुतसी दर्शन देनेके लिये प्रार्थना भी की बुद्ध भगवान्‌ने उसके साथ जानेसे इनकार किया। फिर भी वह कितने ही महीनों तक

उनको लेजानेकी उमैदपर बैठाही रहा । जब कि तिसने बहुत मिन्नत जारी की तब बुद्धने कहा अब हमारी उमर बडी होगई है । शरीर वृद्ध होजानेसे शिथिल होगया है । अब हम आपके साथ नहीं जासक्ते हैं तुम हमारे बनाये हुए धर्म पुस्तकोंको लेजाकर अपने देशमें इनका प्रचार करो इन पुस्तकोंमें लिखे हुए धर्मों पर चलनेसे वहांके लोगोंका कल्याण होगा । वजीरने पुस्तकोंको लिखवा लिया और बुद्धदेवकी तसवीरको भी कारीगरसे बनवा लिया और वह इस देशसे चलकर अपने देशमें पहुँच गया । अपने देशमें जाकर उसने राजासे बुद्ध देवजीका सब हाल कहा और राजाको उनकी मूर्तिका दर्शन कराया राजा बुद्धकी सौम्य मूर्तिको देख कर मोहित होगया और जब राजाने बुद्धके ग्रन्थोंसे धर्मोको सुना तुरंतही उसने बुद्धके मतको स्वीकार कर लिया और अपने देशमें बुद्ध मत फैलानेका हुकुम देदिया । थोडे ही कालमें चीन देशमें सब लोग बुद्धमतानुयायी बन गये । तबसे सारा चीनदेश बौद्ध बन गया फिर धीरे २ ब्रह्मा जापान सिलोन वगैरहमें भी बुद्ध मत फैल गया वहांके सभी लोग बौद्ध बनगये बुद्ध भगवान्‌ने अपने चेलोंको प्रथम इस बातकी ताकीद की थी कि तुमने सचाई परही चलना काफी नहीं है बल्कि सचाईका उपदेश भी सब देशोंमें करना । जिस कालमें बुद्धने उपदेश करना प्रारंभ किया था तब अपने साठ चेलोंको उपदेश करनेके लिये देशांतरोंमें भेजा था इसके पश्चात एक गिरोह अपने मतका बनाया था जिसका मुख्य काम यही था कि बिना तनख्वाह सब लोगोंको बुद्ध मतका उपदेश करें और बुद्ध मतके असूलों पर अमल करना सिखावें उन्होंने ब्राह्मण लोगोंके सिवाय जितनी शूद्र जातियाँथीं उनको भी बुद्ध मतका उपदेश करना शुरू करदिया और थोडेही कालमें हिन्दुस्थानभरमें बुद्ध मत फैलगया १ फिर उन्होंने दूसरे २ द्वीपोंमें भी जाकर बुद्धमतको धीरे २ फैलादिया । सन् ईसवीसे पांचसौ तेंतालीस ५४३ बरस पहले बुद्धका देहान्त हुवा हे और ८० अस्सी बरसकी आयु भोगकर बुद्ध भगवान्‌ने इस अनित्य शरीरका त्याग करदिया था । उस कालमें बुद्धके चेलोंमेंसे पांचसौ आदमी पटनाके पास एक जगह इकट्ठा हुएथे बुद्धके उपदेशोंका संग्रह करके उन्होंने उनके तीन भाग बनाये पहले भागमें तो बुद्धने जो धर्मके

उपदेश किये थे उनको इकट्ठा किया दूसरे भागमें विद्याके उपार्जनके नियम रक्खे तीसरे भागमें मतकी बातोंको रक्खा और बडे उत्साहके साथ उस जल्सेमें बुद्धके शागिरदोंने अपने २ व्याख्यान भी दिये। यह बुद्ध मतानुयायी लोगोंका पहला जलसा था । बुद्ध देवके मरनेके पीछे जब एकसौ बरस गुजर चुके अर्थात् ४४३ बरस सन् ईस्वीसे पहले सातसौ ७०० आदमियोंने मिलकर दूसरा जलसा किया इस जलसेमें दो आदमियोंका बुद्धमतमें परस्पर वाद विवाद हुआ एक आदमीकी बोल चाल कर्डा होती थी, दूसरेकी नरम फिर सौ बरसके पीछे दो जलसे हुए उन दोनोंमें बहुतसे लोग जमा हुए उनमें बुद्ध मतकी उन्नतीका विचार हुआ और उपदेशकोंको उत्तरकी तरफ भेजा गया थोडेही कालमें उत्तरमें अर्थात् उत्तराखंडके पहाडोंमें भी बुद्धमत फैल गया। फिर सन् ईसासे २९७ बरस पहले चंद्रगुप्तका बेटा अशोक मगध देशका राजा था। उसके दिलमें बुद्ध मत फैलानेका बडा जोश पैदा हुआ तब वह बुद्धमत वालोंकी बडी प्रतिष्ठा करने लगा और ४००० हजार बुद्ध मतके पुजारियों अर्थात् उपदेशकोंकी पालना करने लगा और उनको देशांतरोंमें भेजने लगा। अशोकके दिलमें यह ख्याल था कि तमाम पृथिवी पर एक ही बुद्ध मत होजावे और बुद्धमतको राजधर्म बना दिया जावे, इसीसे बौद्धोंके लिये बहुत कानून उसने बनाये फिर २४४ बरस सन् ईसासे पहले अशोकने एक जलसा किया जिसमें एक हजार विद्वान् बुद्ध मतके थे यह जलसा खास पटनामें ही हुआ था। इस जलसेमें कितने ही विद्वानोंने पीले रंगकी पोशाक पहन कर अपनी कल्पना कीहुई बातोंको इस तरहसे सुनाया था मानो बुद्धकी कहीहुई यह बातें मालूम होती थीं सुनकर सबोंने उन बातोंको पसंद किया और अशोकने बुद्ध धर्मको अच्छे २ वसूलोंको अपने राजमें जारी करदिया कि सब लोग इन पर अमल करें। ४० वसूल पत्थरों और लकडियोंके खंभोंपर खुदवा कर जाबजा लगवा दिये, और उसने अपनी तरफसे एक महकमा भी कायम किया, कि उस (महकमें) के हाकिम लोग बुद्ध मतवालोंके चालचलनोंको देखा करें, यदि कोई बौद्ध बुद्धमतके विरुद्ध आचरण करे तो उसको वे लोग दण्ड दिया करें अशोकका यह तात्पर्य था कि बुद्ध मतमें पवित्रता बनी रहे। जब कि लोगोंको

भय रहेगा तब वे लोग सचाईसे अपने धर्मोंकी पालना करेंगे अशोकने अपने राज्यभरमें बडी चोडी और सुन्दर २ सडकें बनवादीं और उनके किनारे पर दोनों तरफ दरखत लगवा दिये; थोडी २ दूर पक्के कूंवे भी बनवा दिये हर एक नगर और कसबामें आदमियों और पशुओंके लिये शफाखाने भी बनवादिये थे। खानदानियोंको चालचलन सिखानेके लिये और स्त्री पुरुषोंको विद्या पढानेके लिये जहां तहां पाठशाला बनायी गयीं थीं और सबोंके कर्मोंकी परताल करनेके लिये आदमी भी मुकर्रर किये गये। अशोक संसार भरके मनुष्योंको बुद्ध मतमें लानेका अपने ऊपर फरज जानता था, और जंगली आदमियोंको भी बुद्ध मतमें लानेकी कोशिश करताथा और उनको भी अकलमंद बनानेके फिकरमें था। क्या सिपाही और क्या ब्राह्मण क्या भिक्षुक और क्या अमीर सबका परस्पर मेल बनारहे यही उसका उद्देश्य था। इतना ही नहीं, बल्कि दूसरे मुल्कवालेंके साथ भी वह मेल बनानेके फिकरमें रहता था इसीलिये दूसरे मुल्कोंमें प्रायः अपने आदमियोंको भेजता रहता था यह भी उसका हुक्म था कि जोरके साथ किसीको भी बौद्ध न बनाया जावे, बल्कि सच्चे धर्मोंका उपदेश करके प्रेमके साथ बुद्ध मतमें इतर मतोंवालें और दूसरे देशवालेंको लाया जावे, क्योंकि किसी पर जुलम करना भी एक बडाभारी पापहै। अशोक राजाने केवल बुद्धमत फैलानेके लिये ही यत्न नहीं कियाथा. बल्कि बुद्धके वसूलेंके धारण करानेका भी यत्न कियाथा जिससे कि लोगोंके चित्त शुद्ध होजावें और सब लोग सच्चे धार्मिक बनजावें राजाने बुद्ध मतके बहुतसे ग्रन्थोंका अनुवाद गद्य मगध भाषामें कराकर मगध देशमें उनको फैला दिया था। सन् ईसवी २४० बरस पहले एक बडा भारी जलसा बुद्धमत वालोंका हुआ था यह उलसा कनशकके समीप एक राजाने कराया था। उसने फिरसे बुद्ध मतके पवित्र पुस्तकोंको दूसरी भाषाओंमें अर्थात् तिब्बत और चीनी वगैरह भाषाओंमें उल्था कराकर चीन और तिब्बत वगैरहके बौद्धोंके पास उन पुस्तकोंको भेजा था। और सन् ईस्वीसे २४४ बरस पहले अशोक राजाके लडकेके पास बुद्ध मतकी इकट्ठा की हुई जो किताबें थीं उनका तरजुमा अन्य भाषाओंमें कराकर वह लंका टापूमें लेगया और वहां भी उसने बुद्ध मतको फैला दिया फिर धीरे २ और टापुओंमें भी बौद्धमत फैल गया।

अशोककी हिम्मतसे और पुरुषार्थसे और २ देशोंमें भी बुद्धमत राजधर्म बनगया, परंतु जातिका भेद बुद्धमतमें भी बनाही रहा। तीनकी प्रतिष्ठा करनी बुद्धमतमें अच्छी मानी गयी हैं। एक तो उसकी प्रतिष्ठा करनी जो सचे धर्मोंका धारण करनेवाला उपदेशक है। दूसरी माता पिताकी प्रतिष्ठा करनी तीसरी जीवमात्रसे प्रेम रखना और किसी जीवको भी न सताना। यह तीन बुद्ध मतमें बडे भारी उत्तम कर्म अवश्य कर्तव्यतामें गिने गये हैं। बुद्धमतमें गुणको ही प्रधान मानाहै जातिको नहीं। जिस आदमीमें जितना अधिक गुण होताहै उतनी ही उसकी अधिक प्रतिष्ठा होती है। सचाईमें आयुको व्यतीत करना यही बुद्ध मतका मुख्य असूल है। बौद्धोंमें एक यह भी रवाज है कि, धार्मिक पुरुष जब मरजाता है तब उसकी यादगार बनादेते हैं। और जो वैराग्यवान् स्त्री पुरुष होते हैं उनके लिये मकान बनवादेते हैं, जिसमें कि वह आरामसे रहकर सचे धर्मोंकी पालना करैं, परंतु स्त्री पुरुषोंको इकट्ठा रहने नहीं देते हैं किन्तु जुदा २ मकानोंमें रहने देते है बुद्ध लोग देवताओंके मंदिरोंको नहीं बनवाते हैं, किन्तु उनके गुरु होते हैं जो कि पूजी कहलाते हैं। उनके रहनेके लिये ग्रामसे बाहर एक मकान और उसके आगे ताल और गिरदे बगीचा लगवा देते हैं। उनका गुरु स्त्रीका दर्शन नहीं करता है। ब्रह्मामें अबभी यह रिवाज है, कि जिस बौद्धका लडका सात आठ बरसका होताहै वह उसको गुरुके पास छोड आता है। वह लडका सोलह या अठारह बरसकी उमर तक गुरुके पास विद्याका अध्ययन करता रहता है, घरमें बिलकुल नहीं आता है। दिनके दश बजे गुरु सब लडकोंको लेकर भिक्षाके लिये ग्राममें आता है, आगे २ गुरु चलता है पीछे २ सब लडके चलते हैं। भिक्षाके पात्रोंको लेकर लोग यथाशक्ति उनको नित्य भिक्षा देते हैं। कोई २ स्थान परभी दे आते हैं। लडके भी सब वही भिक्षा खाते हैं। जो लडका पढ जाता है उसको बाप घरमें लाकर उसकी शादी कर देता है। कहीं बुद्धके उपदेशके खिलाफ भी पीछे वाले करते हैं, अर्थात् सिलौनमें बुद्धका मंदिर बनाकर उसमें बुद्धकी मूर्तिको रखकर घडी घंटोंको भी बजाते हैं। ऐसा सुना गया है कि बुद्धके असूलोंसे यह वार्ता विरुद्ध है, क्योंकि ऐसा करनेकी

उसकी आज्ञा नहीं है इस कालमें बुद्ध मतके असूल यूरूपमें भी लोगोंके दिलोंपर असर करने लगे हैं । बुद्धने ब्राह्मणोंके मतको बिगाडा नहीं था, बल्कि ब्राह्मणोंके मतमें जो अधिकतर पाखंड बढगया था उसको निकालकर शुद्ध बना दिया था । परन्तु ब्राह्मणलोग इस बातको कब मानते थे, इसलिये इस देशमें सब बौद्ध होजानेपर भी कुछ न कुछ ब्राह्मणोंका मत बना ही रहा । बल्कि एक हजार बरस तक दोनों ही मत बराबर देशमें चलते रहे । यदि च किसी २ रियासतमें उस कालमें बौद्धोंने बहुत ही जोर पकडा था तब भी ब्राह्मणोंको मत बिलकुल नष्ट नहीं हुआ था कुछ न कुछ बना ही रहा था सन् ईस्वीसे ४०० बरस पहले एक चीनके सरदार इस देशमें आये थे, उस कालमें बौद्धों और ब्राह्मणोंके मंदिरोंको उन्होंने सब शहरोंमें बराबर ही देखा था क्योंकि दोनों मत बनेही थे । सन् ईस्वीके ६३० बरस गुजर जानेपर एक सलादत्त नामक पूर्व देशमें राजा हुआ था, वह मानो दूसरा अशोक ही था, क्योंकि बुद्ध मतकी उन्नति करनेमें वह अद्वितीय था । उसने सन् ई० ६३४ में तमाम इस देशमें अपना कब्जा कर लिया था बहुतसे राजा उसके अधीन होगये थे । उसने बुद्ध मतको फैलानेके लिये एक आम जलसा कियाथा । उस जलसेमें २१ छोटे २ राजा अपने २ देशके ब्राह्मण पंडितोंको और बुद्ध मतके विद्वानोंको अपने २ साथ लेकर आयेथे । इस जलसेका मतलब सिर्फ बुद्ध मतके प्रचार करनेका ही नहीं था बल्कि दो मत जो उस कालमें फैलेहुए थे उन दोनों मतोंवालोंका परस्पर बादविवाद भी हुआ । पहले तो बौद्धोंके साथ ब्राह्मणोंका शास्त्रार्थ हुआ, पश्चात् बौद्धोंमें भी कुछ आपसमें वाद विवाद होगया और जलसेके पहले दिन बडी धूम धाम की गई कितने ही दिनोंतक जलसा रहा जब वह समाप्त हुआ तब सब लोग अपने २ घरोंको चलेगये इस जलसेमें बौद्धोंकी जीत हुई ब्राह्मणोंके मंदिरोंमें से मूर्तियां उठवादी गयीं । सलादत्त राजाका यह भी एक कायदा था कि पांच बरसोंके पीछे जितना रुपैया उसके खजानोंमें जमा होता था वह सब दानकर देता था । एक दफे प्रयागराजमें सलादत्तने सब हिन्दुस्तानके राजाओं, बौद्धोंके सब पंडितों और ब्राह्मणोंके पंडितों और गरीब लोगोंको नेवता दिया था । वह भी एक जलसेकी तरह ही था । जब सब लोग आकर जमा हुए तब उसने

१९ दिनोंतक सबको मनमाना भोजन दिया और उसने अपने घरका सारा असवाब रुपैया और बरतन वगैरह भी ब्राह्मणों, बौद्धों तथा इतर गरीबोंको बांट दिया और जितना उत्तम जेवर और वस्त्र उस सलादत्त राजाके शरीर पर था उसको भी उतार कर जो पास खडे थे उनको देदिया और मानिंदबुद्धके उसने गोदडीको ओढलिया था। ऐसा करनेसे उसने दो बातें दिखलाई थीं। एक तो बुद्धके वैराग्यको दिखलाया था दूसरा दानकी अवधिको अर्थात् सर्वस्वदान को दिखलाया था और नालंदमें बौद्धोंके अठारह बडे २ मदरसे बने थे। उन मदरसोंमें दश हजार बुद्ध और उनके चेले विद्या पढते थे। उन विद्यार्थियों को सब प्रकारकी विद्या पढाई जातीथी। और उनके भोजन वगैरहका भी प्रबंध ठीक २ किया हुआ था, अर्थात् राजाकी तर्फसे अन्न वस्त्र आदि मिलताथा इसलिये सब विद्यार्थी बडे आरामसे रहते थे। फिर सन् ईसवीके आठसौ बरस बीत जानेके पीछे ब्राह्मणोंका मत धीरे २ जोर पडने लगा। धीरे २ वही फिर राजधर्म बन गया, और ब्राह्मणलोग फिर बौद्धोंको दुख देने लगे, और लोगोंके भी ख्याल बदलने लगे सन् ईसवी ६०० में केरलदेशमें शंकराचार्य्यजी पैदा हुए, और इनसे पचास बरस पहले उसी देशमें भट्टपादजी पैदा हुए थे, कुछ तो भट्टपादजीकी विद्याके प्रभावसे बौद्ध पराजय होकर मारे गये, और कुछ भाग भी गये। बाकी जो बचे खुचे रहे उनको शंकराचार्य्यजीने इस देशसे निकलवा दिया। वे अपने ग्रन्थोंको लेकर ब्रह्मा लंका, चीन वगैरह देशोंमें चले गये। केवल सरहदोंमें याने कशमीर और उडीसामें कुछ थोडासा बुद्ध मत रह गयाथा। कोई लोग यहभी कहते हैं कि जगन्नाथका जो मंदिर है सो बौद्धोंकाही बनाया हुआ है। जब बौद्ध इस देशसे निकाले गये थे तब वाममार्गियोंने इस मंदिर पर अपना कब्जा कर लिया और जगन्नाथ भैरवकी मूर्तिको उसमें स्थापन करके वहांपर भैरवी चक्र बनादिया, और सालमें दो बार जो नौरात्र आते हैं उनमें मंदिरके सामने बकरोंका बलिदान किया जाता है और मंदिरके ऊपर नग्न मूर्तियें परस्पर भोग करती हुई बनी हैं जूठा खाना वगैरह भी है। इसीसे साबित होता है कि वाममार्गियोंका बनाया हुआ यह मंदिर है। जो हो हम इसमें दखल नहीं देते हैं। बौद्धोंके मतका जोर इस देशमें १९०० सो बरसतक रहा।

क्योंकि सन् ईसवीसे छः सौ बरस पहले चलाथा और सन् ईस्वीके ८०० बरस गुजर जाने तक रहाथा । इस देशसे बुद्ध मतको निकलेहुए अब एक हजार बरस हो चुके हैं, परन्तु दूसरे देशोंमें बुद्ध मतने बडी उन्नति की है। बल्कि पृथिवी तलमें इस कालमें तीसरा हिस्सा मनुष्योंका बुद्धमत मानना है बुद्ध भगवान्की सचाईका लोगोंके दिलोंपर इतना असर हुआ कि अब भी तिब्बत मनगोलिया, मनचूरिया चीन जापान, स्याम, और ब्रह्मा सिलोन वगैरह देशोंमें करोडों आदमी बुद्ध मतके मौजूद हैं । दो हजार चार सौ बरससे बुद्ध मतका बहुतसे नवीन और प्राचीन मतोंसे वादाविवाद होता ही चला आया है। बुद्ध जैसा महात्मा न कोई हुआ है न होगा। बुद्ध बडा भारी आस्तिक था, क्योंकि जिस रीतिसे बुद्धका प्रेम परमेश्वरमें हुआहै इस रीतिसे आज कल किसीकाभी नहीं है। सब पदार्थोंसे अर्थात् स्त्री पुत्रादिकोंसे अधिक प्रेम जो ईश्वरमें होनाहै उसीका नाम भक्ति और ज्ञान भी है। संसारमें जितने लोग हैं उनमेंसे किसीका प्रेम तो स्त्रीमें ही अधिक है, किसीका पुत्रमें किसीका धनमें किसीका रंडीमें किसीका नशेमें, किसीका और २ विषयोंमें । क्योंकि इन्हीं विषयोंकी प्राप्तिके लिये सब कोई यत्न करते हैं। इनके प्राप्त न होने पर रुदन करते हैं बल्कि स्त्री पुत्रोंके वियोगसे प्राणोंका भी त्याग करदेते हैं। कोई भी ईश्वरकी प्राप्तिके लिये रुदन नहीं करता है। कोई भी ईश्वरके वियोगसे प्राणोंका त्याग नहीं करता है । और न कोई सर्व सुखोंके विद्यमान होनेपर ईश्वरकी प्राप्तिके लिये अपने ऐश्वर्यका त्याग करके बनको ही जाता है। यदि कहो भर्तृहरिजीने राज्यका त्याग किया है सो भर्तृहरिको स्त्रीके व्यभिचारकर्मसे दुःख हुआ था इसलिये उनका त्याग मंदवैराग्यसे हुआ है। वह उत्तम वैराग्य नहीं कहा जाता है। पूर्वयुगोंमें भी मंदवैराग्यसे ही बहुतसे लोगोंने त्याग किया है उनमें यदि कोई उत्तम वैराग्यवाला भी हुआ है तो वह भी केवल अपना हीं भला करनेके लिये, संसार पर उपकारके लिये उसने भी त्याग नहीं किया है। बुद्ध भगवान्के घरमें राज्यका सुख, पतिव्रता स्त्रीका सुख पुत्रोत्पत्तिका सुख और धन ऐश्वर्यका सुख अर्थात् संपूर्ण सुखोंको त्याग करके संसार भरकी भलाईके लिये बुद्ध भगवान्ने तप और योगाऽभ्यास करके ईश्वरमें प्रेम उत्पन्न किया । ऐसे महात्मा वेदांतकी मूर्ति बुद्ध हुवे हैं ।

उत्तम पुरुष तो उनकी स्तुति करके अपनी जिह्वाको पवित्र करते हैं उनके सचे उपदेशोंको धारण करके जन्मको सुधार लेते हैं । और जो अधम पुरुष हैं वे उनको नास्तिक कहकर पापरूपी निन्दाके बोझको अपने ऊपर लेते हैं ।

दोहा

संबत एक रु नव पुन, पांचहि नव पुन आन ।
माघशुक्ल तिथि पंचमी, ग्रन्थ पूर्ण यह जान ॥ १ ॥

इति श्रीमदुदासीनवर्यस्वामिहंसदासशिष्यपरमानन्दाख्यविरचित बुद्ध-जीवनचरित्रनामकग्रन्थे नवमोध्यायः ॥ ९ ॥

समाप्तश्चायं ग्रन्थः ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS